समझ पचीसी	„	„	...	१५७
वैराग पचीसी	„	„	...	१५८
प्रमोद पचीसी	„	„	...	१६१
नेम पचीसी	„	„	...	१६२
वद्धमान पचीसी	„	„	...	१६५
सोलरा काढ़ा	...	...	...	१६६
उपदेसकी ढाल		...	...	१७३
सुबाहु स्वामीरोतवन		...	...	१७५
मलीनाथजी रोतवन		...	...	१७८
श्रीःमिंदरस्वामीजी रोतवन		...	...	१७९

श्रीवीतरागाय नमः ।

श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीजीतमलजी स्वामी कृत प्रश्नोत्तर लिख्यते ।

अथ हिंस्या धर्म्म उथापन समकित थापन प्रश्न उत्तर लिख्यते ।

प्रश्न—कोई कहै प्रथम गुणठाणा रा धणी री निरवद करणी अज्ञा माहिके अथवा अज्ञा बाहिर ।

उत्तर—भगवती शतक ८ उ: १० ज्ञान बिना करणी करै तेहनै देस अराधिक कह्यो । १ तथा ज्ञाता अध्येन १ मेघ कुमार ने जीव हाथी ने भवे सुसला नी दयाकरी परत संसार करी मनुष नो आउखो बांध्यो कह्यो । २ तथा विपाक सूत्र में प्रथम सुख विपाके सुमुख नामा गाथा पतेइ सुदत अणगार ने दान दई परत संसारकरी मनुष नो आउषो बांध्यो कह्यो । ३ तथा उत्तराध्येयन अ:७ मिथाती ने निरजरा लेखे सुव्रती कह्यो। ४ तथा भगवती श:३ उ:१ तामलि नी अनित चितवणा कही । ५ तथा पुफीया उपांग अ:२ सोमल ऋषी नी अनित चितवणा कही । कोई कहै अनित्य चितवणा ने असुध कही तो भगवती श: १५ भगवंत श्रीमाहावीर नी अनित चितमणा कही । ७ वलि उवाई उपांगमे अनित चितमणा ने धर्म्म ध्यान रो भेद कह्यो । ८ वलि भगवती श: ८ उ: ३१ असोचार के वलि ने अधिकारे प्रथम गुणठाणा रा धणी रा सुभ अधवसायक सुभ, परिणाम विशुद्ध लेस्या अर्थमद्द धर्म्म ध्यान अने धर्म्मनि चितवणा कही । ९ तथा जंबूद्वीप पनोती मे कह्यो। भला पराक्रम

थी व्यंतर सुख पाम्याते व्यंतर मै मिथातीज उपजै १० तथा ठाणांग-ठाण ४ उ: २ गोसालना थिवरा ने, ४ प्रकारे तप कह्यो उग्रतप १ घोर तप २ रस परित्याग सरस ३ इंद्री प्रति सलिनता४, ११ तथा उवाई में रस इंद्री प्रति सलिनता निरजराना १२ तथा भगवती श्र: २ उ: १ भगवांन ने वंदणा करणी खंधक सन्यासीने गोतमजी अज्ञा दीधी १३ तथा दसवी कालिक अ:१ संजम ने अने तपने ए वेहूने धर्म कह्यो १४ राय प्रसेणी मे सूर्याभना अभियोगिया ने भगवांन वंदणा करवानो अज्ञा दीधी १५ तथा उपासग दसा मे अ:७ सकडाल पुत्र गोशाला रे श्रावक भगवान ने वंदणा कीधी १६ तथा भगवती श्र: ८ उ:९ कह्यो प्रक्षती भद्रीक१ विनीत २ दयापरणाम३ अमछर भाव४ ए च्यार प्रकारे मनुष्यनो आउषो बंधे तथा सराग संजम१ संजमा संजम२ वालतप३ अकाम निरजरा४ ए च्यारे प्रकारे देवतानो आउषो वांधे ए सर्व करणी सुध छे १७ इत्यादिक सर्व प्रथम गुणठाणा राधणीरी निरवद करणी अज्ञा माहिं कही। १

प्रश्न—असंजती ने दान दीधां सुफल होवे।

उत्तर—भगवती श्र:८ उ: ६ असंजती ने सिचत, अचित, सुजती, असुजती ४ ए आहार दीधा एकांत पाप कह्यो १ तथा उत्तराध्येन अ: १२ गा: १४ हरकेसी मुनी ब्राह्मण न पापकारीया क्षेत्र कह्या २ तथा सुगड़ांग श्रु:२ अ:७ गा: ४४ आद्र कुमार मुनी ब्राह्मण जीमाया नरक कही२ तथा उत्तराध्येयन अ: १४ गा: १५ भगु पुत्रा ब्राह्मण जीमाया तमतमा नारकी कही ४ तथा उपासग दसा अ:१ आणंद श्रावक अभिग्रह धाऱ्यो जे हुं अन तीरथी ने दानं देउ नही दिवाउ नही ५ तथा ठाणांगठांणे ४ उ: ५ कुपात्र कुखेत कह्या ६ तथा उपासग दसा अ: ७ सकडाल पुत्र गोसालाने सीझा संथारी दीयो तिहा ईम कह्यो "चवणंधमो तिवातीवे" ७। तथा

विपाक अ:१ मृगालोढा ने अत्यंत दुखी देखी ने गोतम स्वामी पूछो "किं दचा" इण सुं कुपात्र दांन दीधा तेह नो ए फल भोगवे छै ईम कह्यौ ८ तथा सुगडांग श्रु:२ अ:५ गा:३२ दांनवे लेवे तो मुंन साभणीं कह्यो १० तथा सुगडांग अ: ८ गा: १३ दांन देवो साधु त्यागो ते संसार भ्रमणरो हेतु जाण ने त्यागो ईम कह्यौ १० तथा नसीत उ: १५ गृहस्थ ने असणा दीक देवे देवता ने अनुमोदै तो साधूने चोमासि प्रायछित कह्यौ ११ तथा सुगडांग श्रु:२ अ:२ श्रावकनो खाणो पीणो अव्रतमें कह्यौ १२ तथा ठाणांगठाणे १० अव्रतम भाव सस्त्र कह्यौ १३ तथा ठाणांगठाणे ५ अव्रतन आश्रव कह्यौ १४ तथा दसवीं कालक अ: ३ गा: ६ ए गृहस्थनो वेयावच किया करायां अनमोद्या अनाचार कह्यौ १५ तथा सुयगडांग अ: ३ उ: ४ कह्यौ साता दीयां साता होय इम कह्यौ है तीण ने आर्य मारग थी न्यारो १ समाधी मारग थी न्यारो २ जिन धर्म री हीलणारो करण हारो ३ अल्प सुखारै वासते घणा सुखारो हारण हारो ४ असत्य पच थी अमोख्य करण ५ लोह वांणियांरो परे घणा झुरसो इम कह्यौ १६ इत्यादिक अव्रती कुं दांन देवै तेहना फल कडवा तीर्थंकरा कह्या इति २ ।

प्रश्न—असंजती जीवरो जीवणो वांछ्या स्युं होवे।

उत्तर—ठाणांगठाणे १० देस वांछा करणी वरजी तिणमें कह्यौ। जीवणो मरणो बांछणो नहीं ते असंजम जीवतव्य वालमरण आश्री वरज्यो १ तथा सुयगडांग अ: १० गा: २४ मे कह्यौ जीवणो मरणो वांछणो नहो इहां पिण असंजम जीवतव्य आश्री वरज्यो २ तथा सुयगडांग अ:१३ गा: २३ में कह्यौ जीवणो मरणो वांछणो नहो ईहां पिण असंजम जीवतव्य आश्री वरज्यौ २ तथा सुयगडांग अ: १५ गा: १० में कह्यौ असंजम जीवतव्य ने अण आदर देतो थको वि चरे ४ तथा सुयगडांग अ: ३ उ: ४ गा: ५ में पिण कह्यौ जीवणो

मरणो वांछणो नही यहां पिण असंजम जीवतव्य वालमरण आस्री वरज्यो ५ तथा सुयगडांग अ: ५ उ: ८ गा: ३ में पिण असंजम जीवतव्य ना अरथी ने वाल अज्ञानी कह्यौ ६ तथा सुयगडांग अ: ८ गा: ३ में पिण असंजम जीवतव्य वांछणो वरज्यौ ७ तथा सुयगडांग अ: २ उ: २ गा: १६ कह्यौ उपसर्ग उपनां कष्ट सहे पिण असंजम जीवत ने वांछे ८ तथा उत्तराध्ययन अ: ४ गा: ४ में कह्यौ जीवतव्य वधारवाने आहार करवो ते संजम जीवतव्य आस्री कह्यौ ८ तथा सुयगड़ांग अ: २ उ: २ गा: १ में जे संजम जीवतव्य दोहिलो कह्यौ पिण असंजम जीवतव्य दोहिलो नथी कह्यौ १० तथा आवसक में जीव दयाणं ते संजम जीवतव्य ना दातार कह्या ११ पिण असंजम जीवतव्य ना दातार नथी कह्या ११ तथा सुयगडांग अ: २ उ: १ गा: ८ में जीवणो वांछणो वरज्यो असंजम जीवतव्य आस्री वरज्यौ १२ तथा सुयगड़ांग स्रु: २ उ: ५ गा: ३ में कह्यौ सिंघ वांघादिक हिंसक जीव देखी ने मार तथा न मार कहणो नही इहां पिण तेहने जीवावण रे अर्थे वरज्यो मत मार कहणो वरज्यो १३ तथा दसवें कालिक अ: ७ गा: ५ ८ वायरो १ वृषा २ सीत ३ ताप ४ कलह ५ सुकाल ६ उपद्रव्यरहीत पणो ७ एसात वोल वांछणां वरज्या १४ तथा आचारंग स्रु: २ उ: १ ग्रहस्थ माहे माहो लड़तां देखी त्यांने मार तथा मत मार ईम वांछणो वरज्या १४ ते पिण रागद्वेष आस्री जीवणो मरणो वांछणो वरज्यौ १५ तथा आचारंग स्रु: २ अ: २ उ: १ में कह्यौ ग्रहस्थ तेउकायरो आरंभ करे तीहां अग्नि प्रजाल मत प्रजाल ईम वांछणो कहणो वरज्यौ ईहां अग्नि मत प्रजाल ईम वांछणो वरज्यो ते पिण घणा और जीवारा अर्थे वरज्यौ १६ तथा सुयगडांग स्रु: २ अ: ६ गा: १७ आद्रमी कह्यौ भगवान उपदेस देवेते अनेरां ने तारेवा तथा आपरा कर्म खपाय वा उपदेस देवे पिण असंजतीरा जीवणारे अर्थे उपदेश

देणो न कह्यौ १७ तथा उत्तराध्येयन अः ९ गाः १० मिथला नगरी वलतीने नेमिराय ऋषी साहमो जोयो नही तो जीवणो किम वांछणो १८ तथा उत्तराध्येयन अः २१ समुद्र पालि चोर ने देखी वैराग पामी दीख्या लिधीं पिण द्रव्य देइ छोड़ायो चाल्यो नही १९ तथा निसित उः १३ ग्रहस्थ मारग भुलाने रसतो वताया चोमासी प्रायछीत कह्यौ २० तथा निसीत उः १३ ग्रहस्थनो ऋषा निमते मंत्र करे तो चोमासो प्रायछित कह्यौ २१ तथा नसीत उ ११ गाः ६३ पर जीवने डरावे डरावेतां ने अनुमोदे तो चोमासी प्रायछीत कह्यौ २२ तथा भगवती शः ७ उः १० अगनी लगाया घणो आरंभ घणो आस्रव कह्यौ वुझाया थोड़ो आरभ थोड़ो आस्रव कह्यौ पिण धर्म न कह्यौ २३ तथा ठाणांगठाणे ३ उः३ हिंस्या करता देखी ने धर्म उपदेस देणो तथा मोन पणे रहणो २ तथा उठी एकांत जाणो कह्यौ पिण जवरसु छोड़ावणो नही कह्यौ २४ तथा भगवती शः १६ उः ३ साधुरी हरस्य छेद्यां साधुरेतो धर्म अंतराय अने छेदन वाल ने क्रीयाकही पिण धर्म न कह्यौ २६ तथा नसीत १: १२ त्रस जीवने अनुकंपा ने अर्थे वांधे वांधताने अनुमोदे छोड़े छोड़ावताने अनुमोदे तो चोमासिक प्रायछित कह्यौ २६ तथा आचारंग श्रुः २ अः ३ न्यावा में साधु वर्ध्यां छिद्र करी पांणी आवती देखी वतावणो नही ईम कह्यौ २७ तथा उत्तराध्येयन अः २२ नेमीनाथजी जीवाने देखी पाछा फिरा पिण छोड़ाया चाल्या नही २८ तथा उपासग दसा अः ३ चुलणी पिया पोसामे ३ पुत्राने मारता देखी वचाया नही अने माताने वचावन ने उठा पोसो भागो कह्यौ २९ इत्यादिक अनेक अनेक ठामे असंजती री जीवणो वांछणो वरज्यौ छेते अनंती वार असंजम जीवतव्य जीव्यौ अनंत वार वालमरण मूओ भणी असंजम जीवतव्य आपरी तथा पारको पिण वांछा नथी ग्यान, दर्शण, चारित्र, तप, ए मोक्षनां मार्ग आदरां तथा पें लने आदरावे तेतोरणो वांछा धर्म छेइः ३।

प्रश्न—गोसालानें भगवान छदमस्थ पणे वचायो तेहने धर्म छैक नथी।

उत्तर—भगवती श्र: १५ कह्यो जो गोसाला उपरे तापस तो उष्ण लेस्या मुकी अने भगवान सीतल तेजु लेस्या मुकी वचायो कह्यो ईहां तो उष्ण अने सीतल एवेहु तेजु लेस्या कही १ अने पणवणा पद ३६ तेजु लेस्या फोरी जघन्य ३ उतक्रष्टी ५ क्रिया कही ते माटे तेजु लेस्या फोऱ्या धर्म्म नथी २ तथा पणवणा पद ३६ वैक्रिय लवधि फोरां आहारीक लवधि फोऱ्या पिण जघन ३ क्रिया उतक्रष्टी ५ क्रिया कही २ तथा भगवती श्र: ३ उ: ४ वेक्रिय लवधि फोरे तिणन ईम कह्यो बीना आलोया मरे तेहने अराधक कह्यो ३ तथा भगवती श्र: १६ उ: १ आहारीक सरीर निपजाया अधिकरण कह्यो प्रमाद नो सेववो कह्यो ४ तथा भगवती श्र: २० उ:९ जंघाचारण विद्याचारण लवधि फोरे तेपिण विना आलोया मरे तो विराधक कह्यो ते भणी जंघाचारण १ विद्याचारण २ वेक्रिय ३ अदारक ४ तेजु ५ ए लवधि फोरां धर्म्म नथी ५ तथा भगवती श्र:१ उ: १ तथा निरायेलिया श्र: १ तेजु लेस्या संकोची ते गुण कह्यो पिण फोरां ते गुण कह्यो नथा ६ तथा भगवती श्र: १५ मैं टीका मैं कह्यो गोसाला ने वचायो कह्यो ते सराग पणे करी अने दोय साधांने न वचाया ते वितरागपण करी ७ तथा ठाणांगठाण ७ छदमस्थ सात प्रकारे चुके इम कह्यो तथा उपासग दसा श्र: १ गोतम४ ज्ञानी अणंदने घरे वचन मैं खलाया कह्या ८ ते माटे ए लवधि फोरी तेह मैं धर्म्म नथी ४।

प्रश्न—कोइ कहे भगवान लवधि फोरीने गोसालाने वचायो तिण मैं धर्म्म नथी अनुकंपाने अर्थे वचायो इम कह्यो।

उत्तर—अनुकंपा तो घणे ठकाणे कही छे अने जे अनुकम्पा नी केवली अग्नादेहे तेतो निरवद छे अग्ना न देवे तो सावद छे अंतगड

वर्ग ३ में कह्यो सुलसां नी अनुकम्पाने अर्थे हरण गमेखी देवता देवकि रा छै पुत्र सुलसा खने मेल्या ३ तथा अंतगड़ वर्ग ३ में कह्यो डोकरा नी अनुकम्पाने अर्थे कृष्णजो ईंट उपाड़ी तेहना घरे मुकि २ तथा उत्तराध्येयन अ: १२ गा: ८ हरकेसी नी अनुकम्पा करी यत्ते विप्राने उंधा पाड्या ३ तथा ज्ञाता अ: १ में धारणी नै गर्व नी अनुकम्पा करी मन गमता असणा दिक जीम्या ४ तथा ज्ञाता अ: १ में कह्यो अभयकुमार नी अनुकम्पा करी देवता मेह वरसायो ५ तथा ज्ञाता अ: ८ रयणा देवि नी करुणा अनुकम्पा करी जिन ऋषि ये साहमो जोयो ६ तथा नसीत उ: १२ कह्यो त्रस जीव पर अनुकम्पा करी बांधे वांधतां ने अनुमोदे तो वांध्या जीव ने छोड़ाया छोड़े छोड़ता ने अनुमोदे तो साधु ने प्रायछीत कह्यो ७ सर्व अनुकम्पा नी साधू अज्ञा नहा देवेते माटे सावद्य छै तिम भगवान पिण छद्मस्थ पणै गोसाला री अनुकम्पा करी लवधि फोरी वचायोते पिण केवली नो अज्ञा नही ते भणी ए अनुकम्पा पिण सावद जाणवो अने ज्ञाता अ: १ हाथी सुसलारी अनुकम्पा करी उपर पग नही दीयो १ तथा उत्तराध्येयन अ: २१ कह्यौ जीवारी करुणा करी नेमनाथजी दीक्षा लेवारी मन धारी २ तथा ज्ञाता अ: १६ कह्यौ किडारी अनुकम्पा करी धर्म्म रुची मुनी कडुवो पीधो त्रुवो ए अनुकम्पा केवली नो अज्ञामें छै ते माटे नीरवद छै ५।

प्रश्न—कोई कहै लवधि फोरा पाप लागे तो भगवान री प्रायछित किम नही चालो तेहनो कांई कारण।

उत्तर—प्रायछित घणांरा ने चाला छे भगवती श: १५ कह्यौ सीहो मुनी मोटे सवदे रोयो १ भगवती श: ३ उ: ४ कह्यौ अयमंत ऋषी पाणी में पात्रि तिराई २ तथा उत्तराध्येयन अ: २२ गा: ३८ रह नेमीजी राजेमती ने कह्यो हे सुंदर आपा संसार ना सुख-भोगवां ३ तथा ज्ञाता अ: १६ कह्यौ धर्म घोष थिवरां री अज्ञा

विनाई साधा नागसिरी ने वजार में हेलो नींदो ४ ज्ञाता अ: ५ सेलक ने उसनो पास छो कुसीलीयो संसथो प्रमाद कह्यो । हेलवा निन्दवा जोग कह्यो५ तथा ज्ञाता अ: ५ सेलक पासथो नो पंथक वेयावचकरी ६ तथा भगवती श: १५ कह्यो सुमङ्गल मुनि पिण लवध फोरी ने राजा घोड़ा सारथी सहित भस्म करो ७ ए सगला ना प्रायछित नही चाल्या तिम भगवान लवधि फोरी तेहनो पिण प्रायछित चाल्यो नही । पिण सुमङ्गला लीयोज होस्यै ६ ।

प्रश्न—गोसाला ने भगवान दीक्षा दीधी के नही ।

उत्तर—भगवती श: १५ पांच ठिकाणे दिक्षा चाली छै तीनवार गोशाले कह्यो थे माहरा धर्माचार्य्य हु' धर्मा ते वासी सिष्य पिण भगवान आदर दिधो नथी अने चौथे वार अङ्गीकार किधो कह्यो १ तथा भर्वानुभुति गोसाला ने कह्यो तोने भगवान प्रवर्ज्या दिधो मुंड्यो सिष कियो शीखायो वहु श्रुती कियो २ इम जसु निक्षत्र मुनी गोसाला ने कह्यो ३ ईम हीज भगवान कह्यो गोसाला में तो ने प्रवर्ज्या दीधी जाव वहु श्रुति कीधो ४ वली भगवान गोतम ने कह्यो माहरो अंते वासी कुसीष्य गोसालो मरी वार में स्वर्ग गयो कपूत कहीवै सपूत थयो हुतो तीमज कुसिष्य कहिवे पहिले सिष्य थयो हुतो ५ भगवती श: ८ उ: ३३ जमाली पिण कुसिष कह्यो ते सिष्य थयो तिम हीज गोसाला ने कुसिष कह्यो। ईम पांच ठामे दीक्षा चाली छै वाल टीका में पिण कह्यो गोसाला ने भगवान अंगीकार कीधो ते अक्षिण रागे करी परिचय स्नेहे करी छदमस्थ तेने करी ।आगमीया कालना दोषनो अजाणवा थकि ईम कह्यो ते माटे दीक्षा दीधी छै ७ ।

प्रश्न—कोई कहै लवध फोरी तो दोष छै तो, आचारङ्ग श्रु: अ:९ उ: ४ गा: १० कह्यो भगवान जाण ने पाप करे नही करावे नही अनुमोदी नही जो लवधि फोरी रो पाप लागे तो इम क्युं कह्यो ।

उत्तर—एतो गणधर भगवान ना गुण किया तेसे जेतलो पाप न कीधो तेहने जु वखाण्या छै गुण वर्णन में अवगुण किम कहीये उवाई में कोणक रा गुण वर्णमें कह्यो माता पितारो वनीत छै पिण जे वाप न वांध्यो ते वनित पणो नहो जेतलो वनीत पणो तेहिज वखाण्यो १ तथा उवाई में साधारा गुण वर्णन में कह्यो उत्तम जात कुलरा उपना पिण अरजन माल्ो आदि उत्तम नही जेतला उत्तम जात कुलवंत तेहने वखाण्यां वली धर्म ध्यानवंत विषय सुख किंपाक फल समान जांणे पिण ते सिंहो रोयो ते धर्म ध्यान में नही नव-नीयाणा कीया ते अवगुण ने कह्या २ तथा भगवती श: १ उ: १ में गोतम नां गुणां में घोर गुण कह्या पिण ते आणंद के घरे खालाया ते घोर गुण में नही ३ तथा सुयगड़ांग श्रु: २ अ: २ श्रावक रा गुण वर्णवन में सुसीलीया कह्या पिण जें कुसील सेवैते सुसील पणो नही वली कह्यो देवादिक थी न चले अने चुलनो पिया सुरदेव चुल सतक शकडाल पुत्र पोसा में चलगया ते अडगपणो नही पिण वर्णन में गुण नो ए सर्व अवगुण नो कथन नही ४ तिम गणधरा भगवान रा गुणा में जेतलो जाण पाप ने कीधी तेह ने वखाण्यो पिण लवधि फोरी ते अवगुण नो कथन नही स्तुती में निंद्या अयुक्तो ते माटे गुण में अवगुण न कहे। भगवान कह्यो हे गोतम १२ वर्ष तेरे पच में मोने किंचत पाप लागो नहो ईम कहे ते मृषा वादी छै। ८

प्रश्न—कषाय कुसील नेयठां ने अपर सेवि कह्यो ते किम।

उत्तर—अत्यन्तविशुद्ध निरमल चारीत्र नो धणी कषाय कुसील अपड़ी सेवो जणाय छै जिम भगवती श: १६ उ: ६ कह्यो सीभुड़ो सुपनो साचो ई देखे तेहनो अर्थ टीका में कह्यो संवृत स्वे ह विसिष्ट-तर संवृत युक्तो आग्राह्य विसिष्ट चारीत्र नो धणी संभुड़ो ग्रहणो तिम कषाय कुसील अपड़ि सेवो विसिष्ट चारित्र रा धणी दीसै छै

विसेष न्याया सम झत भर्म्म विधंसण थकि जाणवा अत्र संखेप कह्यौ छै तथा भगवती श: २५ उ: ६ कषाय कुसील में ६ लेस्या५ सरीर ६ समदघात ४ ज्ञान कह्या अने पणवणा पद ३६ आहारीक १ तेजु २ वैक्रिय समुघात क्रिया उतकृष्टी ५ क्रिया कही ते माटे कषाय कुसील में पांच क्रिया ठहरी कृष्ण नील कापुत लेस्या पिण कही ए पिण भावे लेस्या छैते दोष छै तथा भगवती श: ३ उ: ४ वैक्रिय करी विन अलोया मरे तो विराधक कह्यौ ते वैक्रिय रो दोष ठह्र्यो तथा कषाय कुसील में मन पर्यय ज्ञान ठह्र्यो १४ पूर्व पिण कह्या अने दसवी कालिक अ: ८ गा: ५० दृष्टी वाद रो भणी खलाय जाय ईम कह्यौ तथा वलि उपासग दसा अ: १ गोतम ४ ज्ञानी पिण खलाय गया ते पिण कषाय कुसील नेयठो होता पुलाक बुकसपड़ि सेवणा में मन पर्य्याय ज्ञान १४ पूर्व आहारीक सरीर ए पावे ईज नथी। अने कषाय कुसील नेयठे एतलो शुध पावे एतला बोला वाला चुकता कह्या ते भणी कषाय कुसील नेयठे ए दोष लागे छै तथा भगवती श: २५ उ: ८ में कह्यौ छै कषाय कुसील तेजीने पुलाक १ बुकस २ पड़ि सेवणा ३ निग्रंथ ४ असंजम ५ संजमासंजम ६ ए छै ठीकाणे आवे ए कषाय कुसील पणो संजमा संजमते श्रावक पणा में आवतो कह्यौ साधु री श्रावक थयो जदतो प्रतख दोष ठहरो। ८

प्रश्न—साधु में लेस्या केतली कही।

उत्तर—भगवती श: २५ उ: ७ समायक छेदो परथपनो चारि ज्ञान में ६ लेस्या कही तथा भगवती श: ८ उ: ८ साधु में ६ लेस्या कही छै २ तथा भगवती श: २५ उ: ६ कषाय कुसील नेयठ छव लेस्या कही ३ तथा पणवणा पद १७ उ: ३ कृष्ण नील कापोत लेस्या में ४ ज्ञान कह्या तिहा टीका में भाव लेस्या कही ४ तथा भगवती श: ८ उ: २ कृष्ण नील कापोत लेस्यामें ४ ज्ञान नी भजना कही ५ इम अनेक ठामें साधु में छै लेस्या कही छै। १०

प्रश्न—इस प्रकारे वेयावच में कुल, गण, संघ, साधरमी, वेयावच किणने कहीजै।

उत्तर—ठाणांगठाणे ५ उ: ५ कह्यो कुलते चन्द्रादिक साधु समुदाय १ गणते कुल नो समुदाय २ संघते गण नो समुदाय ३ सधर्म्म सरीखो धर्म्म लिंगते प्रवचनते साधरमीक १ तथा ठाणांगठा: १० टीका में नवतो सुगम कह्यो' साधरमी साधु नेज कह्या २ तथा उवाई टीका में कह्यो कुल ते गछनो समुदाय गण ते कुल रो समुदाय संघते गण समुदाय साधरमी ते साधु साधवी ३ तथा व्यवहार सूत्र उ: १० संघ साधरमी साधुने ईज कह्या ४ तथा प्रश्न व्याकरण तीजै सम्बर द्वारे संघ साधरमीं साधु ने ईज कह्या ५ भगवती श: ८ उ: ८ समुह आश्री कुल गण संघ कह्या ६ तथा उत्तराध्येयन अ: २३ गा: ३ सिष्यना समुदाय ने संघ कह्या ७ इत्यादिक व्ययावचरे अधिकारे संघ साधरमी साधु ने ईज कह्या पिण अनेरा ने न कह्या। ११

प्रश्न—विनय मुल धर्म्म ज्ञाता में कह्या ते किण ने कहीजै।

उत्तर—ज्ञाता अ: ५ साधु रा ५ माहाव्रत १२ पड़िमा साधु रो विनय मुल धर्म्म श्रावक रा १२ व्रत ११ पड़िमाते विनय मुल धर्म्म कह्यो ए ताने सुध पाले अति चार न लगावे ते व्रता सुकीयने असाताने उपजे ते व्रता ने विनय मुल धर्म्म कह्यो जणायेछै ते अण असाता ना विनय मुल नी अपेक्षाये छै पिण शुश्रषा विनय नो इहां कथन नही साधु रा सुश्रषा विनय री तो अनेरा ठिकाणे अज्ञा छै अने श्रावक रा सुश्रषा विनय री तो अज्ञा नथी। १२

प्रश्न—उतपला पोषली नो विनो कियो ते लोकीक हैते अथवा लोकोत्तर हैते।

उत्तर—लोकिक संसार रीत छै जिम ज्ञाता अ: १६ नारद नो विनय पांडुराजा पांच पाड़वा तीन प्रदीक्षणा देइ कह्यो वली ईम

होज कृष्णजी कीया जाव सवद लगे भोलायो ते लोकीक रीत तिम होज उतपला नो लोकीक रीते विनय कियो पिण धर्म्म नथी ईम ही संखने श्रावका ने लोकीक रीत कह्यो छै। १३

प्रश्न—अमड़ ने चेला धर्माचार्य कही नमस्कार कियो ते किम कियो।

उत्तर—ए धर्माचार्य सन्यासी नो धर्म्म नो आचार्य लोकीक गरु जांण ने वांध्यो राय प्रसेणी में धर्माचार्य साधु नेज भोलाव्या पीण श्रावक ने धर्माचार्य ने कह्या गोसालो सकडाल पुत्र रो धर्माचार्य उपासग दसा अः ७ कह्यो तथा ठाणांगठाण ४ उः४ च्यार आचार्य्य कह्या चमर, नाकरड़िया, सरीखा ईत्यादिक तिम अंवड़ सन्यासी रा धर्म्म रो आचार्य्य छै ते भणी संसार नो धर्माचार्य्य जाणी वांद्यो तिम जंबू द्वीप पनोती मे कह्यो तीर्थंकर जन्मा ईंद्र नमोथ्थुणं गुणे माताने निमस्कार करे १ जिम जंबूद्वीप पनोती मे भरतजी चक्र रतन रो घणो विनो कियो २ तथा भरतजी तेला किया देवता ने निमस्कार करी वांण मुकी वस किया ३ तथा रायप्रसेणी में कह्यो सुरयाभ प्रतमा पुजी ४ ए सर्वं लोकीक हेते तिम अंवड ने निमस्कार पिण लोकीक हेते आवश्यक में नवकार ना ५ पद कह्या छै ५ तथा चंदपणती में पिण आदि नमसकार पांचपदां ने इज कह्या पिण छठो पद श्रावक रो न कह्यो ६ तथा भगवती श्रः १५ सर्वानुभुती गोसाला ने कह्यो तथा रुप, समण, माहण कने सीखने तेहने वंदना नमस्कार करणो तिण ने कल्याणीक मङ्गलीक देव चेत्य जाणी सेवा करवी ईहां पण समण मांहण ने वनंणा कही पण समणो वासक ने सीखा वनणा करवी न कही ७ ईहा पिण सुयगड़ांग श्रुः २ अः ७ उदक पेटाल पुत्र ने गोतम स्वामी कह्यो ८ कोइ माहण श्रावक ने कहते मिले नही कल्याणीक मङ्गलं देव चेत्य ए ४ नाम तिहां कह्या ते साधू रा छै तथा भगवान रा होय

पिण श्रावक रा ए ४ नाम नथी रायप्रसेंणी री टीका मै ए ४ नाम भगवान रा कह्या अने साधुरा पिण ४ नाम घणें ठांमे पाठ मे कह्या पिण श्रावक रा नाम नथी ते भणी माहण नाम श्रावक नो न संभवे सूयगड़ांग अ: १६ सर्व पाप थी निवर्त्या एहवा मुनी न माहण कह्यौ तथा सूगड़ांग श्रु: २ अ: १ साधुरा १४ नामा मे माहण कह्यौ २ तथा उत्तराध्येयन अ: २५ अणगार ने माहण कह्यौ ३ तथा सूयगड़ांग अ: २ गा: १।५।६। मे माहण मुनि साधू ने कह्यौ ४ तथा अनुयोग द्वारे सर्व अतिथी नो नाम समण माहण कह्यौ ते माटे अन्य तीरथी रा गुरु वाजे समण साक्या दिकतेह ने पिण समण कहीजे अने ब्राह्मण ने पिण कह गुरु ते अन्य तीरथी में कहे साधू ने समण माहण कह्यौ पिण श्रावकने माहण न कह्यौ ५ ग्रस्थ ने पिण वोलावणो पड़े तो आचारंग श्रु: २ अ: ४ उ: १ कह्यौ हे अमुक १ आउखाउतं २ हे आउखास्सतर ३ हे श्रावक ४ हे पासक ५ हे धर्म्म प्रीय ६ हे धर्मीक ७ एणे नामे पुरुष ने ग्रहस्थ ने वोलावणो कह्यौ पिण माहण नाम न कह्यौ ते भणी समण माहण कने सोध्या वंदना नमस्कार करणो कह्या णीक १ मङ्गलीक २ देवेते धर्म्म देवते तीर्थंकर न देवाधिदेव ३ चैत्यते चित प्रश्नकारी जाणी ४ सेवा करवी कहो तिहां माहण साधु होज जाणवा पिण श्रावक रो नाम नही सम्भवे। १४

प्रश्न—अमड़ सोघरां पारणो करी अने सोघरां वासो लियोते किण कारण कियो।

उत्तर—उवाई मे प्रश्न १३ कह्यौं वेक्रिय लवधि फोरी लोकां में विसमय उपजाव निमत्ते सोघरां पारणो करी, सोघरां वासोलियो अने वेक्रिया लवधि फोरी पणवणा पद ३६ जघन्य ३ उत्क्रष्टो ५ क्रिया १ तथा नसोत उ: १ पर न विस्मय उपजावे विस्म उपजावता ने अनुमोदतो साधू ने चोमासी प्रायछत कह्यौ कार्य्य ए अमड़ कीयो ते सावद्द छे। १५

प्रश्न—साधु री हरस छेदे तथा उर री उपद्रव मेटे ते पड़ियां ने वेठो करे वांध्या ने छोडावे तेहने सुंफल होय।

उत्तर—भगवती श: १६ उ: ३ साधु री हरस छेदण वाले ने क्रिया कही अने साधु रे धर्म्म अन्तराय कही १ तथा नसीत उ: ३ बो: ३४ साधु री हरस छेदे तथा उर पासे छेदा वे तेहने अनुमोदे तो चोमासी प्रायछीत कह्यो तथा आचारङ्ग श्रु: २ अ: १३ साधु रे गुंवड़ो फुणसी कोड़ ग्रसथ छेदे तो अनुमोदणो इज वरज्यो तो करण वाला न धर्म्म कीहां थकी ए हनो विस्तार भर्मविध्वंसण ग्रन्थ थी जाण जो। १६

प्रश्न—अमड़ ने काचा पाणी नो अज्ञा देवै तेहने सूफल होय।

उत्तर—उवाई प्रश्न: १४ म कह्यो अमड़ काचो पाणि लेवै ते सावद्य पाप सहित छे ए कार्थे इम कही लेवे तोते भणी दातार पिण सावद नी अज्ञा छे तोण में धर्म्म नही। १७

प्रश्न—कल्पे पड़िमा धारी श्रावक ने पहिला दाल उतरी लेवी पछे उतऱ्या चावल ते लेवा न कल्पे इमकही ते लेवानी अज्ञा छे कनही।

उत्तर—एतो कलप नाम आचार नो छे जेह नो जे आचार हुतो ते वतायो पिण जिन अज्ञा नथी उवाई प्रश्न: १२ कह्यो कल्पै सन्यासीयाने नदी नो वहि तो निरमल पाणि लेवा पिण न कल्पै अने रो २ उवाइ २ प्रश्न: १४ मे कल्पै अमड़ ने सावद्य कही पाणि लेवो पिण निरवद कही न लेवौ २ तथा भगवती श: ७ उ: ८ कह्यो कल्पै वर्ण नाग नतु वाने पूर्वे हणे तिणने हणवो अने राने हणवो ३ ए कल्पनाम आचार नो छे तिणमें जिन अज्ञानथी तिम कल्पै पड़मा धारी श्रावक ने पहिला उतारी दाल ते लेवी पछे उतरा चावल ते न कल्पै ए पिण जेह नो जे कलप आचार हुंतो ते वतायो पिण जिन अज्ञा नथी। १८

प्रश्न—आश्रव ने जीव कहीजे अथवा अजीव कहीजे।

उत्तर—ठाणांगठाणा २ जीवक्रियाना दोय भेद कह्या समकित क्रिया १ मिथ्यात क्रिया २ भगवती श: २ उ: ५ मिथ्या दृष्ट छै भाव लेस्या ४ संज्ञाने अरूपी कही तथा भगवती श: १७ उ: २ अठारा पाप में वृत तेहिज जीव कहीजे तेहिज जीव आत्मा कहीजे ३ तथा ठाणांगठाणा १० जीव परणामी रा १० भेदा मैं कषाय जोग लेस्या ने जीव कह्या ४ तथा भगवती श: १२ उ: १० कषाय ने अने जोग ने जीव आत्मा कही ५ तथा भगवती श: १२ उ: ५ उठांण वाल वीर्य्य पुरुषाकार पराक्रम ने अरूपी कह्या ६ तथा अनु योग द्वार में ४ कषाय ६ लेस्या मिथ्या दृष्टी ३ वेद अव्रती सयोगी ने जीव उदय निपन कह्या अने वर्ण, गन्ध, रस, फरस ने अजीव उदय निपन कह्या ७ उवाइ में अकुसल मन, वचन, रूंधवो कुसल मन, वचन, उदीरणो कह्यो ८ तथा आवसग अने अनुयोग द्वार में जो ज्ञान सावद कह्या ९ तथा अनुयोग द्वार मे क्रोधादिक अपस छै भाव योग अने अपस छै भाव भला कह्या १० तथा ठाणांगठाणा ९ टीका में पांच जीव च्यार अजीव कह्या नंव पदारथ में ११ तथा पणवणा पद १५ अर्थ में द्रव्य मन भाव मन कह्या तिहां नो इन्द्रीनो अर्थ विग्रह ते भाव मन कह्यो १२ तथा ठाणांगठाणा १ टीका में द्रव्य योग भाव योग कह्या १३ तथा भगवती श: १३ उ: १ अर्थ द्रव्य योग भाव मन कह्या १४ उतराध्येयन श: ३४ गा: १ पञ्च आश्रव कृष्ण लेस्या ना लक्षण कह्या १५ कोइ कहै आश्रव ने खपावणो कह्यो तो जीव ने किम खपावै अनुयोग द्वारे माठा भाव थी ज्ञान दर्शन चारित्र खपे इम कह्यो एक खपावणो नाम मेटण रो छै तिम आश्रव ने खपावणो ते मेटण रो द्रव्यादिक अनेक ठांमे आश्रव ने जीव कह्यो अरूपी कह्यो। १९

प्रश्न—संवर ने जीव कहीजे का अजीव-कहीजे।

उत्तर—ठाणांगठाणे २ जीव क्रियाना २ भेद कह्या समकित क्रिया १ मिथ्यात क्रिया २ तथा उत्तराध्येन अ: २८ गा: ११ चारित्र ने जीव ना लक्षण कह्या वर्णादिक ने अजीव ना लक्षण कह्या २ तथा ठाणांगठाणा १० चारित्र ने जीव प्रणामो कह्यो ३ तथा अनुयोग द्वार में ज्ञान दरसन चारित्र ने जीवगुण प्रमाण कह्या वर्णादिक ने अजीव गुण प्रमाण कह्या ७ तथा भगवती श: १ उ: ६ समायक १ पचखाण २ संजम ३ संवर ४ विवेक ५ विउसग ६ छह्न ने आतमा कही ५ तथा भगवती श: १२ उ: ५ चारित्र ने आतमा कही तथा अठारा पाप रोवे रमण ने अरूपी कह्या ६ तथा भगवती श: १२ उ: १० चारित्र ने आत्मा कही ७ तथा अनुयोग द्वार में च्यार चारित्र ने खयोपसम निपन कह्या ८ तथा प्रश्न व्याकरण अ: ६ दया ने निज गुण कही ६ तथा उत्तराध्येन अ: २८ चारित्र रो गुण कर्म्म रोकण रो कह्यो १० तथा भगवती श: ८ उ: ३१ चारित्रा वरणी कर्म कह्यो चारित्र आड़ो आवरण कह्यो ११ तथा भगवती श: ८ उ: १० जघन्य, मध्यम, उतकृष्ट, चारित्र नी आराधना कही १२ तथा उत्तराध्येन अ: २८ ज्ञान दर्शन चारित्र मोक्ष नामार्ग कह्या १३ इत्यादिक अनेक ठामे संवर ने जीव कह्या अरूपी कह्यो। २०

प्रश्न—भवन पती वाण व्यंतर पहिली नरक रा नेरीयां ने संनी असंनी किम कह्या।

उत्तर—अवधि दरसन सहित देवता नारकी रो नाम संनी छे अने नारकी में देवतां में ऽसनी मरी उपजेते अन्तर मुहूर्त्त ताईं अवधि दर्शन न पामे तेतला काल मात्र ते नेरीया रो नाम असनी छे तिण में पिण असनी जीवरो भेद नथी तिम पणवणा पद: १५ उ: १ विसिष्ट अवधि ज्ञान रहित मनुष ने असनी भुत कह्या पिण असनी रो भेद नथी १ तथा दसवी कालिक अ: ८ गा: १५ आठ

सूक्ष्म कुंथुवा दिक ते पिण नाना मोटा सूक्ष्म कह्या पिण सूक्ष्म रो भेद नथी ३ तथा अनुयोग द्वारे समुर्छिम मनुष्य ने पर्याप्तो कह्यौ। अपर्याप्तो कह्यौ पिण पर्याप्तानो भेद नथी ४ तथा देवता नारकी ने जीवाभिगमे असंघणी कह्या अने पन्नवणा पद २ दव्वेणं संघयणेणं ते दिव्य संघयण कह्या, संघयण जीसा पुद्गलाने संघयण कह्या, पिण छे संघयण माहलो संघयण नथी तिम असनी सरीखा देवतानें नेरीयने असनी कह्या पिण असनी रो भेद नथी ५ भगववी श: १३ उ: २ असुर कुमारमें दोय वेद कह्या नपुंसक नही अने इत्थार मो भेद नपुंसक नो छे ते माटे देवता में इत्थार मो नथी २१।

प्रश्न—साधु नदी उतरे ते अज्ञा माहिके अज्ञा वाहिर।

उत्तर—वृहत कल्प उ: ४ एक मास में दोय तीन वार नदी उत्तर वी कल्पै इम कह्यौ, ते भणी अज्ञा में छे तिण अज्ञा सहित कार्य करतां जीव मरे तो पिण पाप न लागे १ भगवती श: १८ उ: ८ वीत राग पंग थी कुकडा दिक ना ईंडा हणावे तो पिण ईरिया वहि क्रिया कही २ तथा आचाराङ्ग श्रु: १ अ: ४ उ: ५ कह्यो ईरिया युक्त हालता जीव हणावे तो पिण पाप ने लागे ३ तथा आचाराङ्ग श्रु: २ अ: ३ उ: २ नावां उतरवो कह्यो ४ तथा वृहतकल्प उ: ६ पाणी में डुवती साधवी ने वार काढे, तो अज्ञा उलंघे नही ५ तथा वृहत कल्प उ: १ कह्या रात्रि विकाले थानक वारि दीसा जावों, सझाय करवा जाणो होय तोण साधु ने कल्पै ईम कह्यौ, ६ तथा आचाराङ्ग श्रु: २ अ: ३ उ: १ कह्यौ मार्ग चालतां विहार करतां प्राणी वीज, हरी, पाणी देखेछ, रस्ते जावणो मार्ग न कह्यौ७ ईत्यादिक अनेक ठीकाणे जीण अज्ञा के तिहां पापने कह्यौ २२।

प्रश्न—ठंडो आहार साधु ने लेणो क नही।

उत्तर—उत्तराधेन अ: ८ गा: १२ साधु ने सीतल पींड लेणो कह्यौ १ तथा आचाराङ्ग श्रु: १ अ: ९ गा: १३ भगवान ठंडो आहार

अल्प लीधो ईम कह्यौ तिहां टीका में वासी भात कह्यौ २ तथा, अणतरवाई में वणी मग क्षपण भिख्यारा, न वांछे तेह वो आहार धन्नो अणगार लीधो ईम कह्यौ ३ तथा प्रश्न व्याकरण अ: १० सीतल वासी कुश्री विण ठोरस, रोहवो आहार करी पिण द्वेष न करवो कह्यौ ईत्यादिक अनेक ठांमें ठंढो आहार लेणो कह्यौ तो तेह में जीव किम कहो जे काल मरजादा में लेणो कह्यौ २३।

प्रश्न—ग्टहस्थने सिद्धांत भणवारी अज्ञा छै क नथी।

उत्तर—प्रश्न व्याकरण अ: ७ महारिषने सूत्र भणवारी अज्ञा छै देवेंद्र नरईंद्रने अर्थं कह्यौ धारणो १ तथा विवहार उ: १० कह्यौ दिख्या लीया तीन वरसे निसित भणवो कल्पै ४ वर्षे सूयगड़ांग ५ वर्षे व्रहत कल्प विवहार सूत्र दसा स्रुतस्कंध ८ वर्षे ठाणांग समावा अंग १० वर्षे भगवती कल्पै पहला मरजादा विना साधु ने अज्ञा नही तो ग्टहस्थ ने अज्ञा किम होय २ तथा नसीत उ: ३।१९ अन्य तीरथी ग्टहस्थ ने वांचणी देवता ने अनुमोदे तो चोमासी प्रायछित कह्या ३ तथा नसीत उ: १९ आचार्य उपाध्यायनी अण दीधी वांणी आदरे तो अदरावे आदरता ने अनुमोदे तो चोमासिक प्रायछित कह्यौ ४ तथा ठाणांगठा: ३ उ: १ अवनीत १ लोलपी २ क्रोधी ३ मानी ४ ऐए ३ तीन वाचणी देवा अयोग कह्या तथा उवाई प्रश्न २० श्रावक ने अर्थं ना जाण कह्या सूत्रारा जाण न कह्या ६ तथा उवाई प्रश्न २० निग्रंथ ना प्रवचन सिद्धान्त कह्या पिण सग्रंथना वचन सिद्धान्त कह्या नथी ७ तथा सूयगड़ांग अ: ११ कह्यौ पांच आश्रवरहित साधुजी शुद्ध धर्म्म प्रकाशै ते सिद्धान्तरूप सूत्र धर्म्म जाणवो ८ तथा सूरज पणती पाहुड़ २० कह्यौ अभाजन में सूत्र प्ररूपेतो कुलगण संघ वारे अरीहन्ता दिक नी मरजादा नो लोपण हार ८ ठाणांगठा: २ उ: १ सूत्र धर्म्म २ भेद कह्या सूत्र पाट रूप १ अर्थं रूप २ ते अर्थं रूप सूत्र नां जाण श्रावक कहिये

ते भणी नन्दी समावायंगे श्रावक ने सूय परि गहीया कह्या १०
उत्तराध्येयन अ: २२ राजमती ने रहनेमजी ने बहु श्रुती कह्यो ११
तथा उत्तराध्येयन अ: २१ पालित श्रावक ने पण्डित कह्या १२
भगवती श: ८ उ: ३ सूत्र आश्री ३ प्रत्यनीक कह्या सूत्र १ अर्थ २
तदुभय ३-१३ तथा अनुयोग द्वारे तीन आगम कह्या सूत्र १ अर्थ
२ उभय ३ १४ तथा अनुयोग द्वार में सूचना १० नामा में आगम
नाम सूत्र नो कह्यो १५ अनुयोग द्वार में श्रावक ने आवश्यक नो
आज्ञा दीधी १६ ईत्यादिक अनेक ठामे अर्थरूप सूत्र रा जाण
श्रावक कह्या पिण अङ्ग उपाङ्ग छेद मुल अनुक्रम पाठ रूप सूत्र
भणवारी आज्ञा साधु ने पिण मरजादा विना नही तो ग्रहस्थ ने
किम होये ईति रहस्य २४।

प्रश्न—पुन्य नो करणी अज्ञा माहिक अथवा अज्ञा वाहिर।

उत्तर—अज्ञा माहिली करणी करतां निरजरा होय अने पुन्य
तो सहजे बंधे छे भगवती श: ७ उ: १० अठारे पाप नही सेव्या
कल्याणकारी कर्म्म बंधतो कह्यो १ तथा उत्तराध्येयन अ: २८ बो:
४३ वेयावच किया तीर्थंकर नाम गोत कर्म्म वांधतो कह्यो ३ तथा
उत्तराध्येयन अ: २८ बो: १० बंदनां कीयां नीच गोत खपावे उच
गोत्र बंधतो कह्यो २ तथा उत्तराध्येयन अ: २८ बो: २३ धर्म्मकथा
ई करी सुभकर्म्म बंधतो कह्यो ४ तथा भगवती श: ५ उ: ५ जीव
ने नहणे १ झुठ न बोल २ साधु न मनोज्ञा आहार दीधा सुभ
दीर्घ आउषो वांधतो कह्यो ५ तथा ठाणांगठा: ८ नव प्रकारे पुन्य
वंधतो कह्यो नव इ नरवद छे ६ तथा ठाणांगठा: १० दस प्रकारे
कल्याणकारी कर्म नो वंध कह्यो ७ तथा भगवती श: ७ उ: ६
अठारा पाप रावे रमण ने नही कीयां सेव्यां अकर्कस वेदनी नो
वंध कह्यो ८ तथा ज्ञाता अ: ८ बीस वोला करी तीर्थंकर गोत्र नो
वंध कह्यो ८ तथा विपाक में सुवाहु कुमार आदि दे दसे जणां साधु

ने दान देई प्रति संसार करी मनुष नो आउषो बांधतो कह्यो १०
तथा ज्ञाता अ: १ हाथी सूसला नो दया थी प्रति संसारकरी मनुष
नो आउषो बांधतो कह्यो ११ तथा भगवती श: ७ उ: ६ सर्व प्राण
भुत जीव सतने दुख उपजायां साता वेदनी बंध कह्यो-१२ तथा
भगवती श: ८ उ: ९ साता वेदनी १ मनुष नो आउषो २ शुभ नाम
३ उच गोत्र ४ सुभ कर्म नी करणी निरवद अज्ञा में कही इत्या-
दिक अनेक ठामे पुन्यरी करणी निरवद कही अज्ञा में कही २५।

प्र:—साधु आहार उपधो दिक भोगवे ते जोग निरवद क सावद।

उ:—निरवद जोग छे कर्मकटे छे जिण अज्ञा छे भगवती व: १
उ: ९ साधु सूद्ध आहार भोगवे ते तो सात कर्म ढीला पाड़े ईम
कह्यो १ तथा ज्ञाता अ:२में कह्यो वर्ण रूपरे हेते आहार करणो नही
ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वैहण रे अर्थे करणो कह्यो २ तथा ज्ञाता
अ: १२ एक सिद्ध जावाने अर्थे आहार करणो कह्यो ३ तथा दसमो
कालक अ: ४ गा: ८ जेयणा सूं आहार करतां पाप कर्म नही
बंधे तो कह्यो ४ तथा दसमो कालक अ: ५ उ: १ गा: ९२ साधु
गोचरी असावद मोक्ष साधवा नो हेतु श्रीतीर्थंकरे कह्यो ५ तथा
दसमो कालक अ: ५ उ: २ गा: १०० निरदोष आहार नो भोगवण
हारने सूद गति कही ६ तथा ठाणांगठा: ६ छ कारण आहार
करतो साधु अज्ञा उलंघे नही ईम कह्यो ७ तथा उत्तराध्येयन अ:
८ गा: ११२ संजम यात्रा रे अर्थे तथा सरीर निरवाहवा आहार
भोगववो कह्यो ८ तथा आचारङ्ग अ: ३ उ: २ संजम यात्रा निर-
वाहवा आहार भोगववो कह्यो ९ तथा प्रश्न व्याकरण अ: १० धर्म
उपगरण विना परिग्रह कह्यो पिण धर्म उपधी परिग्रह में न कह्यो
१० तथा दसवो कालिक अ: ६ गा: २१ मुर्छा रहित वस्त्र पात्रा-
दिक साधु भोगवे तो परिग्रह न कह्यो-११ तथा ठाणांगठा: ४ उ:
साधुना उपगरण निपरिग्रह कह्या उपगरण अकिंचणाया ए ए पाठ

१२ तथा ठाणांगठा: ४ उ: साधु रा उपगरण भला व्योपार कह्या १३ तथा उत्तराध्येयन अ: २४ गा: ९ गवेषणा ग्रहे पणा २ भोगेषणा ३ ने एषणा सूमती कही १४ ईत्यादिक अनेक ठामे साधु आहार उपधि भोगवे ते अग्या में कह्यो पिण पाप नही २६।

प्र:—साधु निद्रा लेवे ते कार्य अग्या में क बाहर।

उ:—निद्रा छे ते तो दरसना वरणी रा उदे थी छे दबी यो जीव छे ते सावद निरवद छे नही अने निद्रा लेवारा प्रणाम छे ते अग्या सहित निरवद छे संजम ना उपष्टभ ने अर्थे लेवे तेह थी पाप न लागे दसमी कालिक अ: ४ गा: ८ कह्यो जेयणा सू सूता पाप नही लागे सूवणो नाम निद्रा नो छे १ तथा दसमी कालिक अ: ४ छे ठामे सूते वा जागरमाणे वा कह्या सूता ते निद्रा में तथा जागतां कह्या २ तथा उत्तराध्येयन अ: २६ गा: १८ अभिग्र धारी ने पिण रात्रि नीतीजो पोर में निद्रा लेणी कही ३ तथा ब्रहत कल्प उ: १ बो: १ पाणिनि तीर सीझायादिक अने निद्रा लेणी वरजी पिण और ठामे लेणी नही वरजी ४ तथा ब्रहत कल्प उ: ३ साधु ने साधवी ने थानक विगट वेला सीझायादिक करवो अने निद्रा लेवी वरजो ५ तथा ब्रहत कल्प उ: ३ बो २१ ग्रहस्थ रा अन्तर घर में सीझायादिक अने निद्रा निद्रा लेवी वरजी गरड़ा १ गिल्याण २ तपस्वी ने ३ तिहा पिण निद्रा लेवारी अग्या दीधी अने प्रमाद री अग्या कोणहीने नही ६ तथा आचारङ्ग अ: ३ उ: १ अर्थम, द्रव्य, निद्रा भाव निद्रा कही ते भाव निद्रा ते प्रमाद छे तथा भगवती श: १६ उ: ६ अर्थ, द्रव्य, निद्रा भाव कही ईत्यादिक अनेक ठामे द्रव्य निद्रा अग्या सहित साधु लेवे तिण ने पाप नही कह्यो २७।

प्र:—छते साधु ने एकलो रहणो क नही।

उ:—छते साधु कारण विना एकलो रहणो नही विव्यहार उ: ६ घणा निकालते ग्रामादिक से एकला बहु स्रुति ने पिण रहणो

वरजो अल्पश्रुति नो किसूं कहिवो १ तथा आचारङ्ग अ: ५ उ: १ अेकलो बीचरे तेमे आठ ओगण कह्या २ तथा आचारङ्ग अ: ५ उ: ४ अव्यक्त ने एकलो रहिवो विचरवो वरज्यो तीहां टीका में नवमा पूर्व नी तीजी वच्छु विण भण्या गछ बारे अव्यक्त कह्यो ३ तथा ठाणांगठा: ८ म कह्यो आठ गुणां विना एकल पडिमाने कल्पे तिहां टीका में नवमा पूर्व नी तीजी वच्छ अर्थ कीयो छे ४ तथा आचारङ्ग अ:५ उ: ४में कह्यो गुरु कहे चेला तोने एकलपणोम होजो ५ तथा वृहत कल्प १ रात्रि विकाले थानक बारे एकला ने दिसा जावणो वरज्यो ६ तथा उत्तराध्येयन अ: ३२ गा: ४ गछ माहे रहतां चेलो न मिले तो एकलो रहिवो कह्यो ७ रागद्वेष रूप विजा पक्ष में न वर्त्तेते घणा में रहतां पिण एकलो कह्यो तउभायज एगउ उत्तराध्येयन अ: १ गा: १०।११ रागद्वेष ने अभावे एकलो कहीजे २ तथा दसमी कालिक अ: ४ साधु साधवी ने एकला कह्या ए गोवा परिसाग गउवा ३ तथा सूयगडांग अ: ४ उ: १ एकलो ते रागद्वेष रहित पणे विचरसूं ईम विचारी ने दीक्षा लेवे ४ तथा उत्तराध्येयन अ: १ गा: ३३ भात ने अर्थे एकलो विचरसू. रागद्वेष रहित थको उभो रहे ५ तथा उत्तराध्येयन अ: २ गा: १८ रागद्वेष रहित एकलो कह्यो ६ तथा उत्तराध्येयन अ: २ गा: २० रागद्वेष ने अभावे एकलो कह्यो ७ ईत्यादिक अनेक ठामे घणां म रहतां पिण भावच्छी एकलो कह्यो पिण छते साधु विना कारण एकलो विचरणो नही २८।

प्र:—साधु ने जोड करणी तथा राग सहित गावणो क नही।

उ:—निर्वद जोड्यां दोष नही नन्दी में सूत्र विना ४ वुद्धी करी न्यायमिलावे ते मति ज्ञान रो भेद कह्यो १ तथा नन्दी में कह्यो जेतला साधु थया तिण ४ वुद्धिकरी पयन्ना जोड्या तथा मिथ्यातीरा कीधो समदृष्टि रे सम श्रुति कह्या साधु जोडे तेहन मिथ्या श्रुति

कीम कहीये तथा गण धरे सूत्र जोड्या ३ तथा समायंगे ३५ वच-
नातिसये भगवान री वाणी रागरहित कही ४ तथा ठाणांगठाः ४
गाथा १ पद्य २ कथा ३ गेयते गायवा योग ४ ए च्यार काव्य कह्या
ईत्यादिक अनेक ठामे निरवद जोड्यां गायां दोष न कह्या २९।

प्रः—साधु ने श्रावक अफासू अणेषणीक दीधीं अल्पपाप वहुत
निरजरा कह्यो ते वहुनि अपेख्यय अल्प थोड़ो पाप सम्भवे क नही।

उः—ईहां अल्प थोड़ो न सम्भवे ईहां तो अल्प सवद अभाव वाची
छे सम्भव छे आचारङ्ग श्रुः२ अः२ उः१ साधु रे अर्थे कीधो भोगव्यां
माहा सावद क्रिया कही अने निरदोष भोगव्या अलप सावद क्रिया
कही- ईहां पिण महा नी अपेक्षाय अल्प थोडी क्रिया सम्भवे अल्प
कहतां सर्वथा क्रियां नही ईम सम्भवे तिम तिहां पिण वहुतनी
अपेक्षा अल्प थोडो न कहीये अल्प सवद अभाव वाचो छे भग-
वती श: १५ उः अल्प विर्खा में भगवान विहार कियो कह्यो
तथा उत्तराध्येयन अः १ गाः ३४ अल्प प्राण वीजा दिक ते अय
भोगवणो कह्यो ४ ईत्यादिक अनेक ठामे अल्प सवद अभाव वाचो
छे ईम कह्यो तिम ईहां श्रुविद्ध विवहार करी श्रावक देवे अने
अफासी अनेषणीय आय गयो तो पिण पाप नही व्यवहार सूद्ध
जणाये छे वलि केवलि वद ते सत्य ३०।

प्रः—हाथी सूसला नी दया पालि तिहां प्राण भूत जीव सत ४
ए सवद कह्यो ते सूसला ने ज कह्यो के वीजा जीव आश्री।

उः—एक सूसला ने ईज च्यार नाम वोलाया छे पिण ज्ञातारी
टीका में ४ नाम एकार्थे कह्या विसेष दया ने अर्थे च्यार कह्या
जिम भगवती शः २ उः १ प्रासूक भोजी निग्रन्थ ने प्राणे १ भूत २
जीव ३ सत ४ विनी ५ वेयावच ६ ए छव नामे वोलाव्यो छे ३१।

प्र—पड़ि लाभे माणे ए पाठ गुरु जाणी देवे तिहां छे क अने
रे ठिकाणे पिण छे ३१।

उ:—ए पड़ि लाभ पाठ तो देवानी छै दल एच्छ कह्यो भावे पड़ी लाभे कह्यो गुरु जावा रो नाम नथी ठाणांगठाणे २ तथा भगवती श: ५ उ: ६ साधु ने गुरु जाणी मनोज्ञ आहार देवे तिहां पिण पडि लाभे कह्यो अने साधु ने हेठो जाणी हेला निन्दाकरी अमनोज्ञ आहार देवे तिहां पिण पडि लाभेच्छा पाठ कह्यो २ तथा आचाराङ्ग श्रु: २ अ: १ उ: २ साधु ने वहिरावे तिहां तिहां दला एच्छापाठ कह्यो २ तथा ज्ञाता अ: २४ पोटिला श्रावक नाव्रत धाऱ्या तिहां पहिला साधवीयां से आहार दीयो तिहां पडि लाभे ई पाठ कह्यो पछे भरतार वस्य होय ते वारता पुछी गुरु तो पछे किया ३ ईमज ज्ञाता अ: १६ सूकमाल का आहारप्रति लाभी वसीकरण वारता पुछी पछे गुरु किया ४ तथा पुफीया उपांगो अ: ४ सुभद्रा पिण आर्य्यां ने प्रति लाभी वसीकरणवार्त्ता पुछी पछे श्रावक रो धर्म्म आदर्यौ कह्यो ५ तथा ज्ञाता अ: ५ सूंदर्शण सेठ असणादिक ४ सुखदेव ने प्रति नों प्रतिलाभतो कह्यो विचर्यौ ६ तथा सुयगड़ांग सु: २ अ: ५ गा: ३ में कह्यो दक्षिणा ए पड़ि लम्भोयनो प्रति लाभवो तिहां साधु ने मोन राखणी कह्यो ७ ईत्यादिक अनेक साधु असाधु विहू ने देव तिहां पडि लाभ पाठ कह्यो गुणवन्त अवगुणवन्त जाणी मनोज्ञ अमनोज्ञ तिहां पड़ि लाभ पाठ कह्यो स्तुतिकरी अथवा निन्दाकरी तिहां देवा नो नाम पडि लाभेच्छा पाठ कहिवो प्राये करी गुरु जाणवा रो नाम नथी ३२।

प्र:—अनेरा ने दियां अनेरी पुन्य प्रकृति वन्धे एहवो कहै ते टीकाम छै कनथी।

उ:—सूत्र पाठ पिण नहीं अने टीका में तो पिण टोह नथी टीका में तो ईम छै पात्र ने अर्थे देवा थकी तीर्थंकरादिक पुन्य-प्रकृति नो वन्धते अन पुन्य ईम कह्यो अन एं नकारधित के पिण

अन पन ईम टीका में नथी। ३३

प्रः—अभङ्ग दुवारा नो अर्थ टीका में किम कह्यो।

उः—भगवती श: २ उ: ५ तुंगीया नगरी रा श्रावकारे ईध-कार ईम कह्यो जे भला समद्दष्टि ने लाभे करी किण ही पाषंडी रा डर थी किवाड़ जड़ता नथी वृद्ध व्यथानुसारे करी ईम कह्यो १तथा उवाई निवृति में पिण वृद्ध व्यथानुसारे करी ईम कह्यो २ तथा सूयगडांग श्रु:२ अ:५ दीपका में ईम कह्यो जे उघाड़ा वारणे ते भला मार्गना लाभ थो किण हो पाषंडो थको डरे नही ते माटे उघाडा द्वार कह्या ३ तथा सूयगडांग श्रु: २ अ: ७ दीपका में कह्यो उघाडा बारणा राखे ते पैर तीरथी धरम आवो धर्म कहै तो तेहना परिजन ने पिण चला वा समर्थ एहवा समकीत में सेठां ते माटे पाषंडी रा डर थी किवाड जडे नही ४ टीका में अवंगुय दुवारा नो अर्थ ईम कियो तथा भिखु साधु रो भावनारे अर्थे उघाडा बारणा कह्यो ते तो पिण ठीक है पिण भिख्यारीयां रे अर्थे कहे तो सम्भव नही तेहनो भावना नही भावना साधु रोज कही ते माटे। ३४

प्र: नेमनाथजी जीवां ने देखो पाछा फिरा तिहां कह्यो "साणु कोसे जिए हिउ" एह नो अर्थ सूं।

उः—उत्तराध्येयन अ: २२ गा: १८ "साणु कोसे जीए हिउ" एहनो अर्थ टीका मे तथा दीपकामें ईम कियो साणु कोसे कहता सकरुण करुण सहित तजि ए हि, कहतां जीवेषु जी जीवारे विषेउ कहतां पद पूर्णे ई सचुर दीपका वृहत टीका में पिण कियो छै। ३५

प्रः—दसा श्रुतस्कंध अ: ७ वाहाय गाहाया पाठ छे के वहाय गाहाय पाठ छै।

उः—वाहाय पाठ नथी वाहाय गाहाय पाठ रो अर्थ टीका में कह्यो वाधाय वध निमित्तार्थं षड़ागादिकं गृहित्वा ईम वध रो

अर्थ कियो ते माटे वधा पाठ छै वाहिरो अर्थ टीका में नथी ते माटे वाहाया पाठ नथी । ३६

प्रः—साधु रै ठीकाणे साधवी ने उभो रहणो सिझायादिक करणो वृहत कल्प उः ३ वर जी तेहनो न्याय किम कह्यो ।

उः—विगट वेला उभो न रहणो सिझायादिक न करणो एहो अर्थ कियो छै ते मिलतो छै व्यवहार उः ७ बोः १५ असिझाई में पिण साधु साधवी ने वाचना देवै ईम कह्यो १ तथा ठाणांगठाः ४ उः २ कह्यो साधु साधवी ने आहार देवै दिरावै २ तथा उत्तराध्येयन अः २२ राजमती रहनेम ने समझायो कह्यो जी उभो ई न रहणो समझायो किम बलि वाचणी आहार किम देवै ३ तथा नसीत उः ४ कह्यो पुंषारो किया विना साधु ने साधवी रै ठिकाणे न जावणो जो उभो ईन रहणो तो जायक्यु ईण न्याय विगट वेलारो अर्थ मिलतो छै । ३७

प्रः—चवदमो अणाचार सठाहण अने एक वन सो गातल्यङ्ग ते किण ने कहिजे ।

उः—संवाह नाम मरदन रो छै अने गातभ्यङ्ग भिंगनाम तेल चोपड रो छै दशवो कालकरी टीका में पिण संवाहन नाम मरदन रो छै कह्यो १ तथा उवाई में अभ्यङ्ग नते तेलादिक चोपड़ै तेहने तेहज तेलादिक ने रमावे मर्दन करै तेहन संवाधन कह्यो ईम पाठ में जु जुवा भोलाव्या छै । ३८

प्रः—जिण आज्ञा वाहिर धर्म्म छै क नहो ।

उः—आचारङ्ग अः २ उः ८ आज्ञा लोपन वाला ने ज्ञानादिक धर्ने ठालो कह्यो १ तथा आचारङ्ग अः २ उः ६ केवली छदमस्थ नो आचार एक कह्यो २ तथा आचारङ्ग अः ६ उः २ आज्ञा में ईज माहरो धर्म्म उतकृष्टी चरचा कहो ३ तथा आचारङ्ग अः ४१ प्रमादि आज्ञाबाहिर कह्यो पिण धर्म अज्ञावाहिर न कह्यो ४ तथा

आचारङ्ग अ: ४ उ: ४ आज्ञा रा अजाण ने समदृष्ट दुरलभ कही ५ तथा आचारङ्ग अ: ५ उ: ६ आज्ञा में आलस आज्ञावाहिर उद्यम ए २ बोल हे चेला तोने महोजो गुरु शिष्य न कह्यौ ६ तथा ज्ञाता अ: ५ सुखदेव थावर्चा पुत्र ने कह्यौ मोने केवली परुपो धर्म्म सुणावो ७ तथा आवस्यङ्ग अ: ४ केवली परुप्यो धर्म्मज मङ्गलीक लोक में उत्तम अने तेहनो सरणो लेणो कह्यौ ईत्यादिक अनेक ठांम अज्ञा में ईज धर्म्म कहै पिण अज्ञावाहिर न कह्यौ। ३८

प्र:—अपड़ि लद्ध समतरयण लभेयं एहनो अर्थ सूं !

उ:—अपड़ि लध कहतां न लाधो समतरयण कहतां समक्त-रत्न रो लभेणं कहतां लाभ एतले समकित हाथी न पाम्यौ मरी मनुष्य थयो ते माटै भगवती श: ३० उ: १ समकदृष्टी तीर्यंच एक विमानीक विना और नो आउन वाधै ईम कह्यौ। ४०

प्र:—समाहिय ए सतर में बोले तीर्थंकर गोत्र वंधै तेहनो अर्थ सूं।

उ:—ज्ञाता री टीका में अर्थ ईम कियो गुरुवादि कामो कार्य करी चित में समाधी उपजावे ते अर्थ सूध छै। ४१

प्र:—श्रावक ने धर्म्मपक्ष म घाल्यौ कीण न्याय।

उ:—सूयगडांग अ: १८ तिण पक्ष कह्यौ पछे अव्रती ने अधर्म्म पक्ष में घाल्यौ वीरता अने वीरता वीरती ने धर्म्म पक्ष में कह्या ते वीरता नी अपेक्षाय श्रावक ने धर्म्म पक्ष में घाल्या पिण अविरत धर्म्म नही जीम अवीरती ने अधर्म्म पक्ष में घालौ पिण समदृष्टि निरजरा अधर्म्म नही तिम ए पीण कही वो। ४२

प्र:—व्यवहार उद्देस: ५ में साधु साधवो ने माहे माहो वेयावच्च करायेवो न कल्प कही ते किम।

उ:—ए आहार पाणी दिक नी वेयावच वरजी नही आहार तो देणो दिरावणो, ठाणांगठा: ४ उ: २में कह्यौ वृहत कल्प उ: ४ उठा-

यवो, वेठायवो, सूवायवो, उचारादिक सूद्ध करवो एहवो पिण वेयावच कह्यो छै ते माटे ए बेयावच न करवो बलि पग चम्पो कांटादि कढवावो पिण बेयावच बरजो छै ४३

प्रश्न—पड़िमाधारी श्रावक ने समण भूतो कह्यो ते किम्।

उत्तर—ए देसथकि उपमा छै उवाई में स्थिवराने जीन सरीखा कह्या १ तथा वह्नी दसा उपाङ्गे अन्तगड़ाङ्गे द्वारका प्रत्यक्ष देवलोक सरीखो कह्यो२ तथा जम्बुद्वीप पणती में अस्व रतन में ऋषिजो सरीखो चौमावान् कह्यो ३ तिम समण भुए उपमा छै उपासग दसा अ: १ सन्थारे में आणन्दे कह्यो जे हुं ग्रहस्थ कुं गृहवास में बसु कुं ता पड़िमा में किसो कहिनु ४ तथा उत्तराध्येयन अ: ५ गा: २० सर्व ग्रहस्थ्य थकी साधु संजमें करी प्रधान कह्यो ५ ते माठे समण भुए देस उपमा छै ४४

प्रश्न—सामाईक में पुंजणीया दिक राखे ते अज्ञा में क आज्ञा बाहिर।

उत्तर—एतो शरीर नी ऋाख्या अर्थे राखे छै थिर जो रहण नि आभावे ते भणी राखे अने भगवती श: ७ उ: १ सामाईक में आवकरी आत्मा अधिकरण कह्यो छै १ तथा ठाणांगठा ४ उ: ३ उपगरण राख्या ते भला व्यापार साधु रेज कह्या, पिण आवकने न कह्या २ तथा नसीत उ: १५ साधु गृहस्थ ने पुंजणी देवै देवताने अनुमोदे तो चोमासीक डण्ड कह्यो ते माठे गृहस्थ सर्व उपधि राखे ते सर्व सावदमांह छै ४५

प्रश्न—पड़िमाधारी ने तथा ओर आवक ने असणादिक ४ आहार दिया सूं फल होय।

उत्तर उवाई में प्रश्न २० आवकरी खांणो पिणो ग्रहणो इवत में कह्यो १ तथा ठाणांगठा १० इव्रत में भाव सास्त्र कह्या २ तथा उपासग दसा में सन्थारा में आनन्द ने गृहस्थ कह्यो ३ तथा दसवो

कालिक अ: ३ गा: ६ गृहस्थ नो वेयावच कियां कराया करता ने अनुमोद्या अणाचार कह्यो ४ तथा नसीत उ: १५ गृहस्थ ने असणादिक दीधा अनुमोद्या चोमासीक प्रायश्चित कह्यो, ५ तथा सूयगड़ांग अ: ८ संसाररो भ्रमणरो हेतु जांणी गृहस्थने दान देवणो साधू त्याग्यो ईम कह्यो ६ तथा भगवती: स: १ उ: ८ कह्यो श्रावक बिरते करी देवायु बांधे पिण इव्रत थी शुभबन्धन कह्यो ७ तथा भगवती श: १७ उ: ८ कह्यो साधू धर्म अङ्गीकार करे अविरती अधर्म अङ्गीकार करे धर्म अधर्म विहु अङ्गीकार करे ते माटे इव्रत सेवै सेवाव अनुमोदे तो अधर्म छे पड़िमाधारीनो पिण इव्रत अधर्म छे ८ तथा ठाणांगठा ५ इव्रतने आस्रव कह्यो ९ तथा भगवती श: ८ उ: ५ कह्यो सामायक में पिण श्रावकरे भार्या दिक नो प्रेम बन्धन अने स्वर्णा दिकनो भाव ममता तूटो नहो १० तथा दसा श्रुत स्कन्ध अ: ७ में कह्यो पड़िमाधारो श्रावक न्यातीलोकारो ईज आहार लेवे न्यातीलोकारो पग बन्दण छुटो नहो ते माटे ११ इत्यादिक अनेक ठोकाणे श्राव करो आगार अने इव्रतोक कह्या ते इव्रतने सेयां सेयव्यां धर्म न थी ४६

प्रश्न—श्रावकरे अपचखांण की क्रिया वरजी ते किण न्याय।

उत्तर—खन्ध आस्रो वरजी छे जिम भगवती श: १० उ: १ कह्यो पूर्व दिस ने विखे "नो धमत्थीकाए" ते पूर्व दिसे सम्पूर्ण धर्मास्ति नहीं पिण देसथी छ तिम श्रावकरे सम्पूर्ण इव्रतरी क्रिया न थी देस थी इव्रतरो क्रिया छे २ तथा विदिस नो जीवे कह्यो पिण आखो जीव नहीं जीवरो देस थी छै तिम श्रावकरे इव्रत आखो नहीं देश थो छे, ३ तथा भगवती श: १७ उ: १ श्रावकन बीरता बीरती कह्यो बाल पण्डित कह्यो ४ तथा समवायंगे पांच गुण ठाणांरो नाम देस व्रत कह्यो ५ तथा पणवणा पद २२ मैं कह्यो प्राणादि पातादि १७ पाप रोवे रमणनो क्रिया एक मनुष्य टाले २३ दण्डकने हुवे

मनुष्य विन संजती टाल और ने न थी एह वो न्याय छै ६ ईम अनेक ठामें श्रावकरे इव्रत, कहीते माटै देस थी इव्रतरी क्रिया छै ४७

प्रश्न—भगवती श: १ उ: ८ कह्यो कृष्ण नील कापोत लेस्यामें जहा "उहिया जीवाणपरं भत्तमत्तण भाणियधा" एहनो अर्थ सू।

उत्तर—ईहांतो कृष्ण नील कापोत लेस्यामें जिमउ अधिक पाठतिम कहिवो पिण एतलो विसेष प्रमादी अप्रमादी वे भेद न करवा उहिधूमें संजाती रा२ भेद कीया ईहां न करवा कृष्ण नील कापोती प्रमादीम पावै अप्रमादीम न थी ते माटै दोय भेद न हुवै जिम भगवती श: १ उ: २ कह्यो तेजु पदम लेस्या कै, तिण में अधिक "जिमण वरंमणु स्सा सरागं बीतरागायण भाणिय वा" ते जु पदमलेस्यामनुष सरागी म छै बितरागी मैं नही ते माठे एदोय भेदन करवा ८ तथा पण वणां पद १७ उ: १ सन्नती तेजु लेस्यारा प्रमादी अप्रमादिक हिवा पिंण सरागी बीतरागी ए बे भेद न करवा सरांगी में छै बितरागी में तेजु नथीते माटै तिम प्रमादीमें कृष्णा दिक छै अप्रमादि म नथीते भखी प्रमादी भेदवरज्या छै ४८

प्रश्न—साधू ने तीजा पोहर पंहिलां गोचरी जावणो क नथो।

उत्तर—आवमग सूत्रमें दस पचखाण कह्या नोकारसी पोरसी दोयपोहर इत्यादिक १ तथा व्रहतकल्प उ: ५ सूर्य उगांथी आहार लेवारो वृति कही २ तथा उतराध्येयन अ: ३० गा: २०।२१ च्यार पोहर गोचरीरो काल तिण मैं जेतलो काल त्यागे ते काल थी उणो-दरी कही २ तथा नसीत उ: १२ पहले पोहर वहरी चौथा पोहर भोगव्यां चोमासिक दण्ड कह्यो ४ दसमीकालेक अ: ४ उ: २ गा: ४ कालो काल गोचरी जाणों कह्यो ५ तथा दसमीकालिक अ: ६ एकदिनरी भक्तीरो आहार करणो कह्यो रात्रि भक्ति रो त्यागोते पिण एक वगतन कह्या ६ तथा दसमीकालिक अ: ५ उ: २

गा: ३ आहार जोम्या पछे न सरैतो बलि गोचरी जांणो कह्यो ७ ईण न्याय एक टंक रो नेमनथी अने तीजा पोहर रो पिण नेम नथी ४८

प्रश्न—अढाई दीप बाहिर काल बरते नहीं अथवा बरते।

उत्तर—भगवती श: २ उ: ९ अढाई दीप ने समय क्षेत्र कह्यो समय बर्तें ते माटे १ तथा भगवती श; १० उ: १ नीची दिसम अद्धा समय नथी, कह्यो २ तथा भगवती श: १६ उ: ८ छह दिस लोने अन्ते काल नथी कह्यो उंचालोकमें काल नथी ३ तथा भगवती श: १३ उ: ४ एक धर्मास्तिरो प्रदेशकाल फरसे पिण न फरसे ४ तथा पन्नवण पद १५ उ: १ अभ्यन्तर पुखरार्द्ध काले करी फरसे कह्यो ५ ईम अनेक ठांम अढ़ाई दीपमें जकाल कह्यो ५०

प्रश्न—जीवनें आदि अन्त रहित कह्यो तो आदि अन्त सहितने जीव कह्यो। न क नहो

उत्तर— भगवती श: उ: जीवनें आदि अन्त रहित कह्यो, ते द्रव्य जीवनी अपेक्षायने असासता द्रव्य ने पिंण जीव कह्यो एतलाबोल तो भगवती में कह्या श: १२ उ: १० अज्ञाननेयम आत्मा कही कषाय जोग चारित्र ने आत्मा कही १ श: १२ उ: ५ अठारा पाप रा वेरमण ४ बुद्धिने उठाणादिकने ६ भाव लेस्या ३ दृष्ट १२ उपयोग ४ संज्ञना अरूपी कही २ श: ७ उ: २ जीवनें द्रव्य थकी सासती भाव थकी असासती कह्यो ३ श: १८ उ: ४ अठारा पाप स्थानक छे काय जीव अजीव दोनु जीव र भोग आवे ४ श: १ उ: ९ सामयक पचखाण सञ्जम संमर विवेक विउसगने आत्मा कही ५ श: १० उ: १ पूर्वादिस दिसमें नियमा एकेन्द्री जीव कहीया ६ श: ६ उ: १० नेरीयाने नियमा जीव कह्या ७ श: १२ उ: ९ पांच देवरी गति कही ते गती जीवरी क कालरी ८ श: २ उ: १० चारित्तावरणी जेणवरणी कर्म कह्यो, ते आवरण काल आडो जीव आडो ९

श: ६ उ: ३ जीवने आद अन्तररहित पिंण कह्यो चौभङ्गी छै १० श: २५ उ: २ नैरोयादि सिद्धां लगे अनन्ता जीव छै ते माटे जीव सं-ख्याता न कह्या ११ श: ८ उ: ३३ जोवने सासतो कह्यो असासतो कह्यो १२ श: १८ उ: १० सोमलने पार्श्वनाथ कह्यो एक पिण हुं छु दोय पिंण हुं छु उपयोग आश्री अनेक भाव भूत पिंण हुं छु १३ ईति भागवत्यङ्गे असासता जोवने द्रव्यने जीव कह्यो ५१

प्रश्न—अमड़ साधांरा दर्शण कह्यो तथा साहमा वखाण सूणो ईम कह्यां सावद्य आमना कहीणी क नहीं ।

उत्तर—ए भाषा सूमतीथी बोल्या सावद आमना न कही आ-चारङ्ग श्रु: २ अ: १५ भगवांन विहार कीयो तिवारे न्यातीलाने भाषा सूमति थी सिखदोधी कही १ तथा ठाणां गठाण ६ साधु काल कीयां गृहस्थने भाषा सूमती थी जाणायां आज्ञा उलंघे नही इम कह्यो २ तथा बिवाहार उ: २ तथा पुष्प चुलिया अ: १ भूता साधवी सरीर नी बिभुषा किधितिहां जु सूभद्राने हेली निंदीनवमा दसमा प्रायश्चित वालाने अस्टहो भूतने सञ्जम देणो न कह्यो ३ तथा दसासूत खंद ४ अ: ६ में कह्यो ईग्यारे पड़िमामें त्याग अग्यार वतयो ते पिंण भाषा सूमती थी कह्यो ४ तथा पड़िकमणारी बोधी भाषा सूमती थी सिखावे ईत्यादिक भाषा सूमती थी बोल्यां सावद आमना न कहणी ५२

प्रश्न—बीजा साधूरे अर्थे उचार पासवणरी जायगा पड़ि लेणो क वा जु जु पड़ि लेहणी ।

उत्तर—आचारङ्ग श्रु: २ उ: ३ ओर प्रज्ञावन्त साधारे अर्थे उचार पास वणरी जागा पड़ि लेहणी कही ते माटे बीजा तेहनोंने याय थी न पड़िले है तो पिंण दोष न थी ५३

प्रश्न—साधूने कड़ुवो बचन बोलणो क नहीं ।

उत्तर—द्वेष भाव थी कठोर बचन न बोलणो समभाया भणी

कठिन सीख दीहाते इंष पण्ड उलखावणे भणी कठिण सवद में दोष नहो ज्ञाता अ: १६ धर्म घोष साधांन कह्यो नागश्री अधन्य अपुन्य अक्षत पुन नीसरी बोली सरीखी ने धिक्कार थावो १ तथा भगवती श: १५ गोसाला ने दोय साधु कह्यो तुंउहीज गोसालो उवाही न छाया छैं घणा कठिण बचन लागा तब साधूं उपर तेजु लेस्या मुकी ईम हीज भगवान कह्या २ तथा ज्ञाता अ: १६ सुकमालकाने आर्यां हेली निन्दी ३ तथा पुष्फीया उपांगे सुभद्राने अर्थे आर्या हेली निन्दी जद न्यारी थई ४ तथा ज्ञाता अ: ३।५।७।८।१५।१८।१९ कह्यो ढीलो तथा जिन बचन नी सङ्का राखे ते ४ तीर्थ मई हेलवा निंदवा जोग छे ६ ईत्यादिकनिर्इयपणे छे जिस बस्तु उलखाया छती वात कह्या दोष नहीं ५४

प्रश्न—संजम भांगी फेर दीक्षा लेवे ते सूत्र किम भणे।

उत्तर—आगे मरजाद सहित सुत्रवांचा भ्रष्ट थई दीख्या लेवे तो फेर मरजादा पालवा रो कारण नथी व्यवहार उ: ३ कह्यो तीन वर्ष दिक्षा लीया ने उपाध्याय पदवी देवी अने बहु स्रुतिने भ्रष्ट थई दीक्षा लीधी तेणेज दिन उपाध्याय पदवी देवी कही ३ वरस रो नियम नथी उपाध्याय सूत्र भणे भणावे ते माटे तेणेज दिन सूत्र भणवो ठहरयो ५५

प्रश्न—साधु ने कारण पड्यां आधा करमो उदेसीक न लेणो तो कारणों नित पिण्ड भोगवणो क नहीं।

उत्तर—आधाकरमी उदेसीक तो बस्तु ईज असूध अने नित पिण्ड असूध नहीं ते पिण कारण पड्या दोष काई नहीं एतो अणाचार ते कारण कीम सेवेतो अणाचार तो सिनान कीयां पिण कह्यो १ सुगन्ध १ सुंघां, २ बमन, ३ गला हेठला केस कापे, ४ रचे, ५ अंजन, ६ ए सर्व अणाचार ते पिंण नीत विवहार थी कारणे दोष नहीं कह्यो वृहतकल्प उ: ३ गरड़ा गीलाणी तपस्वीमें

अन्तर घर वसणो कह्यो ३ ब्रहतकल्प उ: ५ कारण पहिला पोहर रोचौथे पोहर आहार भोगवणो कह्यो ४ तथा ब्रहतकल्प उ: २ कारण पांणि मद्यरा कुम्भ तिहां १।२। रात्रि रहणे कह्यो ५ ब्रहत-कल्प उ: २ कारणे अग्नि वले तिहां १२ रात्रि रहणो कह्यो तथा ब्रहतकल्प उ: ५ साधु साधवी माह्रो माहि लघु नित थी कारणे सुद्धो लेणो कह्यो पीवो कह्यो ७ ठाणागठां ५ उ: २ साधु के पगे कांटो आंखमें फाटो कारणे काढणो कह्यो ८ नन्दी में डुबती साधवीने ईत्यादिक साधवीने कारण झालो राखणो कहो ९ तथा ठाणांगठां ५ उ: २ कारण साधु साधवीने भेलो रहणो कह्यो १० ठाणांगठां ५ उ: २ पांच मोटी नदीं १ मासमें २।३। बार उतरवो कहो ११ ठाणांगठाणे उ: २ कारणे ग्टद्ध पखीने खावाइ तथा पाणी लेई मरणो कह्यो तथा ठाणांगठां ५ उ: २ कारणे चोमास में विहार करणो कह्यो १२ ईत्यादिक अनेक बोल वरज्या ते :कारणे कह्या तेहनो अपेचाये ए नित्य पिण्ड अंजना दिक पिंण कारणे तथा आचारङ्ग श्रु: २ अ: २ उ: १ कारणे अन्तलीख जायगा रहणे कह्यो १३ जीत व्यवहार में कह्यो तेह में व्यवहार में दोष जणाय छै नहीं ए बोल विस्तार थी :ममक्षत कुमती विहण्डन ग्रन्थ थकी जांणजो अत्र संचेप मात्र छै ५६

प्रश्न—वस्त्रादिक धोवा थि सरीर लगावा नित्य पिण्ड लेणो क नहीं

उत्तर—नसीत उ: २ वो ४६।४७ सेजातर पिण्ड ग्रहा डण्ड कह्यो अने सेजातर पिण्ड भोगव्या पिण दण्ड कह्यो १ तथा नसीत उ: ९ वो १।२। राजपिण्ड ग्रह्या डण्ड कह्यो अने भोगव्या पिंण डण्ड कह्यो २ अने नसीत उ: २ वो ३३ नित पिण्ड भोगव्यां डण्ड कह्यो पिंण ग्रहरा डण्ड न कह्यो सेजातर रा अने राजपिण्ड रा वे, वे, पाठ कह्या अने नित्यपिण्ड रो पाठ एकज कह्यो ते माटे खाणा विना ओर काजे कह्यो दोष नहीं ५७

प्रश्न—भगवती श: १२ उ: १ संख पोखली कह्यो जीमाने पोसह करस्याते किम ।

उत्तर—भगवती श: १७ उ: २ वारा व्रता में ईग्यारमा व्रतरो नाम पोसोव वासे कह्यो उपवास सहित पोसोते ईग्यारमा व्रत नो नांम कह्यो ते माटे जीमी ने पांच आश्रव ना त्याग ते धर्म नी पुष्ट ते माटे पोसह कह्यो तेव्रत दसमा वे पिण ईग्यारमो नहीं व्रत ५८

प्रश्न—संख पोसमें ओर श्रावक न कह्यो "तं छन्देणां देवाणु प्पाया" ईत्यादिक पाठ एहनो अर्थ सू ।

उत्तर—टीका में छन्देणं रो अर्थ ईम कीयो तुमारे अभिप्राये पिण हमारी अग्या नथी, एतलो आहार निपजावी जीमों छै ते तुमारो अभिप्राय छै पिण अमारी अग्या नथी, ५९

प्रश्न—भगवन्त ना समोसरण माहि वायां बैठे क नहीं ।

उत्तर—उभी रहै तथा बैसे तेहनो अटकाव नही उवाई में भगवन्तनी वांणी सूणने सुभद्रा प्रमुख राणीयां "उठाए उठेई" कहतां उठे उठी ने बन्दणा करने ठीकाणे गई ईम कह्यो, ते माटे समोसरणमें बेठवा नो कारणदीसे नहीं ६०

प्रश्न—उपर छायो चोफेर ढक्यो तिहां आहार करणी के नहीं ।

उत्तर—उतराध्येयन अ: १ कह्यो ए उत्कृष्टी विध बताई छै जिम उतराध्येयन अ: २४ दस दोष रहित थांनके उचरादिक वस्तु परठाणी कही ते पिण उत्कृष्टी विध १ तथा आचाराङ्ग श्रु: २ अ: १ उ: ३ सर्व भण्ड उपगरण लेई दिसा गोचरी जावणो कह्यो ए पिण उत्कृष्टी विध छै अभिग्रधारी आश्री २ तथा प्रश्न व्याकरण अ: ६ गोचरी थी अवी मुहूर्त मात्र सझाय ध्यान अत्यन्त समाधिवन्त चितकरी आहार करणो कह्यो ए पिण उत्कृष्टी विध ३ तथा उतराध्येयन अ: २ गां ११ दंस मंस उडावणा वरज्या ए पिण उत्कृष्टी विध ४ तथा उतराध्येयन अ: २ गा: ३३ उखध न करणो कह्यो ए

पिंण उत्कृष्टो बिध ५ तिम ते पिण उत्कृष्टो बिध छै कोदेखे तो छै तथा घणा जीव पड़वारो ठिकाणो देखे तो काल आग्यो दीसे छै ६१

प्रश्न—आर्य्याने उघाड़ा दुवार न कल्पे कह्यो ते दुवार नाम केहनो।

उत्तर—उपचार नयथी ए दुवार नांम किवांड नो जनाये छै जिम लोक आषाढ़ पिंण पांणि पड़े पड़ताल मांहि थई पड़े ते माटे पड़ताल पडे ईम कहे पांणिने पिंण पडनाल कहो तथा अनुयोग द्वारे रूजु सूत्र नयरोधणो पाथाने धांनने बिहुंने पायो कहै तिम कुंवाड़ा ने दुवार कहै ते पिंण नय वचन जणाये छे, अर्थसई पिंण उघाड़ा किवाड़ न कल्पे ईम द्वारनो अर्थ किवाड़ कियो छै तथा जंबूद्वीप पन्नती में कह्यो सुसेन सेनापती तामस गुफाना दीक्षण दुवार उघाड्याते उघाड़वो किवाड छै दुवार किम घटे१ तथा ज्ञाता अः१६ सागर पिंण वाल घर ना दुवार उघाड़ो नीकल्यो कह्यो २ तथा प्रश्न व्याकरण अः ८ में कह्यो सोलवन्त ते सिद्धा ना अने देवलोक ना दुवार उघाड्या ३ तथा विपाक अः १ स्रघा रांणी भूआराना दुवार उघोडा कह्या ४ ईम अनेक ठांमें किवाड़ ने दुवार शबदे करो कह्यो तथा जंबूद्वीप पणति में सूसेन सेनापति तामस गुफा नाकिवाड़ उघाड्या कह्या ईम किहांई किवाड उघाड़ा कह्या किहांई दुवार उघाड़ा कह्या ते सामान्य विसेष सबद छै ते भणी उघाड्या किवाड़ साधवी ने न कल्पे कह्यो तिहारे जडवो ठहर्यो ६२

प्रश्न—विहार करतां मार्ग में पृथ्वी हरी आया तेपीज मार्ग जांवणो क नहीं।

उत्तर—आचारंग श्रुः २ अः ३ उः १ कह्यो विहार करतां मार्ग अई वीज हरी पांणि माटी होय नो छते रसते ते मार्ग जावणो नहीं ईण न्याय रस्तो नहोय तो तेमार्ग रो दोष नहीं जिम नसीत उः ३

तीन घर उपरन्त साहमो आख्यो बरज्यो ते लेखे तीन घर नो लेणों कह्यो नमीत उ: १० कुनवन्त साध ने तीन घर उपरन्त आहार देणो वरज्यो ते लेखे तीन घर नो देणो २ नसात उ: १४ पाला रे तीन पुंसलो उपरन्त तेला टिक देणो बरज्यो ते लेखे तीन पुंसलो लगावणो ३ तथा दसमो धान्निक अ: ५ उ: १ गा: ४० पूर्ण मासी उठी देवेतो लेणी बरज्यो ते लेखे उणा गर्भवालि रा हाथ सूं लेणों ४ नमीत उं: १७ कह्यो छते उपाश्रयमरोखा साधू ने उतरवा न देवे तो डण्ड कह्यो ५ आचरङ्ग श्रु: १ उ: ५ में कह्यो उचि भूमि खाई गदन्ने मार्ग छते रसते न जावणो तथा मतवाला हसतो खांनादिक ने मार्ग छते रसते न जावणो तथा खाड कांटां खोलां थलने मार्ग छते रसते न जाणो ते लेखे रसतो श्रोर न होय तो जाणो तिस छते रसतें प्रथवो हरी अपवाला मार्ग न जाणो श्रोर मार्ग ने होय तो जावे बिसतार सहित कुमति विहण्डन ग्रन्थ थी जांणजों ६३

प्रश्न—सोले वचन जाख्या विना सूत्र ने वांचणो क नहीं।

उत्तर—प्रश्न व्याकरण अ: ७ कह्यो सोले वचन ८ विभक्ति तद्वि- डातलिंग समास प्रत्यय १२ भाषा सम्यग प्रकारे जाणी ने कहणि ईम अरिहंत नीं श्रज्ञा छे ईहां तोजे विभक्त न जाणो तो ए अम- कडी विभक्त छे ईम करणें बरज्यो ईम बचन न जाख्यो तो ईम कहणो ए सर्वदं एक बचन छे, तथा होवचन छे, स्त्रीलिङ्गादिक न जाणे तो तेहजन थापणो जे धातुया दिक न जाणे तो न कहणो, ए अमकडि धातुया दिक छे अने जो ए सर्व जांख्या विना सूत्रन वाचणे है तो तिहा १२ भाषा पिण कही तो मुसलमांनि पिसाची सोरसे नी अप्रस्नांसा आदि अजाण तेहने लेखे सूत्र न वाचणे अने भगवती श्रा: २५ उ: ६ साधुने जघन्य ८ प्रवचन मातारा जाण कह्या ते माटे ए सर्व जाण्या विना सूत्र नवांचणे एहवो नेयम नथी ६४

प्रश्न— उघाडे मुख वोल्यां चोफरसी भाषारा पुद्गल थी अठ फरसी वायु कायारा जीवकिम मरै।

उतर—भाषा थी अठ फरसी अचितवायरो उपजाते आठ फरस थी सचित वायरा नो घात होय ठाणांगठां ५ उ: ३ पांच प्रकारे अचित वायुरो उठै ईम कह्यो, ते माटे भगवती श: १६ उ: २ इन्द्र उघाड़े मुख बोलेते भाषा सावद्य छै मुखे हाथ वस्त्रादि देई वोले ते निर्वद्य भाषा कही, जीवानी रूषा कही १ तथा साधुरे मुहपती घणे ठांमें कही २ तथा दसमो कालिक अ: ४ मुंह नी फूंक थी वाउ काय नी अजेणा कही ३ तथा प्रश्न व्याकरण प्रथम अध्येयन मुख थी वाउकाय हणे ईम कह्यो ४ ईम अनेक ठांमें मुख थी वाउकाय हणाय ईम कह्यो ६५

प्रश्न—विजये बिमाण जायते केतलाभव उतकृष्टा करे।

उत्तर—पणवणापद १५ उ: २ कह्यो विजय विमाण देव आगमीये काले पहला देवलोक में देवता पण ५ तथा १० तथा १५ तथा संख्याता इन्द्री करसे पणे कहिवे च्यार भवतो सोधर्म देवलोक में देवता ना ४ मनुष्यना अने सन्नती रो १ विजय विमान रो २ ए सर्व १० भव ईग्यारमो वलि मनुष्य केत ईम ११ तो कह्यो १५ भव तांईमा नहीं कह्यो ६६

प्रश्न—लोकमंण री मातारो नाम समयागे केकई कह्यो अने प्रसिद्ध सूमित्रा कह्यो ले किणनाय।

उत्तर—जे सूमित्र राजा नो बेटी ते भणी सूमित्रा कहैते माठे लक्षमणरो मातानो नांम सूमित्रा ईज प्रसिद्ध छै ६७

प्रश्न—ग्यांन नो दर्शन नो अराधना वाला ना उत्कृष्टा १५ भव भगवती श: ८ उ: १० कह्यो ते किण न्याय।

उत्तर—टीकामें कह्यो चारित्र सहित ग्यांन, दर्शन, नो अराधना ईहां कहीजे १५ भव कह्या ते चारित्र अराधना ने बलेकरे

सम्यंक्त देस व्रत ना भव उत्कृष्टा असंख्याता कह्या तिहां जघन्य चारित्र रा १५ भव कह्या देस चारित्र जघन्य चारीत्रमें न सम्भवे १ भगवती श: १२ उ: १० टीका में चारित्र आत्मा वाला संख्याता काह्या २ तथा भगवती श: ८ उ: २ पांच चारित्र थीयरता चारित्र जुओ कह्यो ३ तथा अनुयोग द्वारे अर्थ में समदृष्टी श्रावक रा उत्कृष्टा भव असंख्याता काह्या ४ तथा भगवती श: १५ गोसाला ने छे हड़े समदृष्ट आई कही अने भवघणा करसीते माटे १५ रोनियस नथी ठहरयो वली केवली वदे ने सत ६८

प्रश्न—सीताजी चोथी नारकी गई कह्यो ते बात मिले क नही।

उत्तर—भगवती श: १६ उ: ८ कह्यो नाग कुमार दुजी नारकी तांई मेह वरसावे आसूर तीजो नरक तांइ मेह वरसावे विमानीक सातमी नरक तांइ मेह वरसावे कह्यो ते माटे ए बात सूत्र थी विरुट नहीं मीलती छे ६९

प्रश्न—वेद समक्तखयोप सम सम क्त किण ने कही जे।

उत्तर—जे समकित मोहणी रा दलीया वेदे- तेह में छेहला समय में वेदक समकित कहीजे अने छेहला समय टाल ओरसमायांमे खयोप सम समक्तवेदक तांई ९ समय नथीति ऐक समयमे छे ७०

प्रश्न—आहारीक सरीर वालामें मति श्रुति मन परजाय ए ३ ज्ञांन पावे तिणामे अवध दर्सण छे क नही

उत्तर—भगवती १: ८ उ: २ अवधि दर सन मै ३ तीन ज्ञांन मति श्रुति आवधि ज्ञांन री नीयमा कहीते माटे मति श्रुति मन पर जाय ए ३ ज्ञांन वाला में अवधि दर्शन नथी ७२

प्रश्न—चोरिंद्री ना अपर्यासा में उपयोग केतला।

उत्तर—पणवेण पद ५ जघन्य अवगाहना वाला चोइंद्रीमें दो ज्ञान दो अज्ञान दरसण कह्या अने वासठिय में कह्या अपर्यासा

में चरक दर्शन न कह्यो ते इन्द्री पर्याय बांध्या पहीला अपर्याप्ता आश्री छे ७३

प्रश्न—च्यार समय नि वीग्रह गति वालो अण आहारीक केतला समय रहे ।

उत्तर—विचलावे समये रहे पहीलो छे हलो समय आहारीक पणवाणा पद १८ छदमस्थ अणा आणा आहारीण नीकथीते उतकृष्टा वेसमनी कहीछे अने चार समय नीविग्रह गति भगवती श: उ: कही छे ७४

प्रश्न—ऋषभ देवना साधु लोगस किसो करता हु'ता ।

उत्तर—अनुयोग द्वारे दुजा आवसगमें तीर्थंकर मागुण कय अर्थाधिकार हुवो कह्यो ते माटे जे 'तीर्थंकर रो सासन तेहना गुणरूप दुजो आवसग छै त तथा ऋषभ रा साधु आगली चोवीसीरा नाम लेवे तो पि'ण अटकाव दीसे नहीं वावीस जिन ना साधु अने महा विदेहना सारे अपडि कमणो धर्मछैते दुजा आवसगमें विद्य मान जिन ना गुण करता दीसछे वलि बहु श्रुति वदे ते सत्य पिण अनागत जिनने तो वांदे नहीं समवायंगी भरत ईरवत्नी अतीत चोवीसी रा नाम कह्या वंदे पाठ घणे ठामे कह्यो अने भरत ईरव नी अनागत चोवीसी रा नांम कह्या पिण वंदे पाठ किहां ईनथी जे माहावीर ना गणधरे अनागत जिन नवांदे तो ऋषभना गणधर साधु लोगसमै अनागत 'जिन किम वाधे तथा अ'तगडमें नेमनाथ स्वामी परखदा में क्रष्ण न कह्यो तु' वारमो 'जीन थासी अने ठांणगठा ८ माहावीर श्रेणक नै कह्यो तु' प्रथम जिन थासी तो पिण क्रष्ण श्रेणक नेसाध श्रावके न वाद्यो अपुठा साधांरे पगे लागा तो ऋषभरा साधु लोग समै अनागत जिन किम वांदे जिम उपासग दसा ज्ञातादिक में नाम छे साधारा ते ऋषभने वारे न हुवे सुतरा नाम तोतेहीज पिण अर्थाधिकार

हुवो तिम ऋषभ नें वारे आवसग में पिण दुजा अध्ययन में अर्था-धिकार जुओ छो अतित तथा विद्यमान तिम सम्भवे भरथजी मरीच ने वांद्यौ कई छे ते सूत्र में न थी ७५

प्रश्न—पोङ्गल नि ग्रन्थ वेसाली श्रावके प्रश्न पूछा ते कुण।

उत्तर—केई साधू कहै केई श्रावक कहै ते माटे निश्चय बात केवली जाणे ७६

प्रश्न—जमाली रा भव केतला कह्या।

उत्तर—भगवती श: ९ उ: ३३ च्यार पांच तिर्यंच मनुष्य देव भव कह्या तिहां केई १५ भव कहै केई २० भव कहै तत्व जाणन्ति अर्हन्ता ७७

प्रश्न—वृहत कल्प उ: ३ साधू काल कीयां एकान्त परठणो कह्यो ते किण न्याय छे।

उत्तर—ए उतकृष्टी विध आखी कह्यो तथा जंबू द्वीप पन्नती कह्यो ऋषभ देव १० हजार साधां साथे मुगत गयां ईन्द्रा तिहां तीन चिता करी तीर्थंकर १ गणधर २ सेष साधांरी ते माटे गृहस्थ बाले तो दोष नही लागे साधु ने ७८

प्रश्न—जे नीहांणा रा धणी समक्त न पामें दशा श्रुत स्कंधमें कह्यो अने कृष्ण द्रोपदी आदि सम्यक्त पामा ते किम।

उत्तर—ते समक्त न पामें कह्या ते तीव्र रस उतकृष्टा रसना नीहांणा कह्या दिसे छे अने मन्दर सते मध्यम रसना नीहांणा वाला केई समकित पामें पिण चारित्र न पामें कृष्णा दिक सरीखा केई नीहांणोपूर्ण थयां पछे सम्यक्त चारित्र बिहु पामें द्रोपदी वत् ते अभ्यान्तर मन्दर सते जघन रसनो नीहांणो जनाय छे ७९

प्रश्न—द्रोपदी समदृष्ट किवारी पामी।

उत्तर—ओघ निरयुक्ति नी टीकागन्ध हस्ती आचार्य्य कृत ते मध्ये :द्रोपदी रे एक पुत्र थयो तिवारे निहांणो पुरो थयो समदृष्ट पांमी कही छे ८०

प्रश्न—सूर्य्याभ प्रतिमा पुजी ते लोकीक खाते अथवा लोकत्तर हेत।

उत्तर—उघ निरयुक्ती नीटीका गन्ध हस्त आचार्य्य क्रत ते मध्ये इम कह्यो छे जे द्रव्ये लिङ्गी तथा दिगंवर सम्बन्धी चेत्य सम्यक्त द्रष्टी न सम्भवे जे द्रव्य लिङ्गी दिगंवर मीथ्या द्रष्टी ते माटे तो स्वर्ग लोके सूर्य्याभा दिक सासता चेत्य पूजे ते प्रतमा ने सङ्गम सरीखा अभव्य पिंण माहरी २ ईम बङ्ग मान थको पूजे तेहमें सुर्य्याभा दिक किम पुजे जे सूर्य्याभा दिक सास्वता चेत्य पुजे ते कल्प स्थीती ना वस्य थकी ईम उघ निरयुक्ती नी टीका में थीति राखवा माटे पूजता कह्या पिंण धर्म्म हेते ईम नहीं कह्यो ८१

प्रश्न—सूर्य्याभ ने ओर देवतां कह्यो जे जिन प्रतीमा अने दाढा पूजे ते पहिलां पछे "हिया ए सूहाए खमाए नीस्सेय स्साए अणुगामी यत्ताए" एहनो परमारथ किम।

उत्तर—इहां राज बेठां पछे सगला पहिलांए कार्य्य करणो देवता कह्यो ते संसार ना मङ्गलीक ने अर्थ, "पुष्प पछा हिया ए सूहाए खमाए निसेसाए" कह्यो पिंण "पच्चा हियाए सुहाए" न कह्यो पच्चा पाठ सूर्य्याभ बिजय पोलीयारे अधीकारे पिंण पच्चा पाठ कहतां परलोक में ते लोगोत्तर अने पब्वि, पच्चा, कहतां ईहां भणी ईण भव में पहिलां पछे ते लौकिक मङ्गलीक नो कारण अने राय प्रसेणी में भगवन्त ने वांद्या तीहां पच्चा हिया ए खमाए निसेयसाए अणु गामि त्ताए" ईहां पिण पच्चा कह्यो पिण पेच्चा नहीं कह्यो अने दिक्षा लेता ईम कह्यो ईण द्रष्टान्त जन्म मरणोरी लाय मांहि थी माहरो आत्मा वारे काढ्यो छते पर "लोयस्स हिया ऐ सूहाए" ईत्या दिक पाठ कह्यां लाय थी धन बाहर काढे अने प्रतिमा पुजी तिहां पछा पाठ कह्यो अने पेच्चा किहां नथी अने दिक्षा लेतां तथा भगवन्त बांद्या तिहां पेच्चा तथा पर लोय सहियाए" ए वचे ठामे पिण

पेहवा पाठ नथी अने प्रतिमा पूजी तिहां पेहवा पाठ सूर्याभ विजय पोलीया री करे अधिकारे पिण पेहवा पाठ किहाई नथी ८२

प्रश्न—कोई कहे "निसेसाए" कह्यो तेहनो सूं अर्थ ।

उत्तर—"निसेसाए" कहतां मोक्ष नो अर्थ तो मोक्ष नाम मुकाय वानो छे लाय मांह थी धन बारे काढे तिहा पिण "निसेसाए" कह्यो ते दलद्रनो मोक्ष छे दलद्रनो मुकायओ छे जिम राज बेठां प्रतीमा पुजे संसार ना मङ्गलोक रे अर्थे तिहां "निसीयसाए" कहतां विघन नो मोक्ष छे विघन नो मुकायोवो छे ईण भव नो मोक्ष छे अने वितराग बांद्या पेहवा पाठ माटे "निस्सेयसाए" एतो निरूप द्रव्य मोक्ष छे तथा भगवती श: १५ गोसाले आनन्द ने कह्यो चोथी सिखर फोडतां वाणियां नेतिण डोकरे वेरज्या तेहने "सूहाएं खमाए निस्सेयसाए" हित सोख खेमने अर्थे निस्सेयसाए एतो मोक्षने अर्थे तिम्म पिण विघन नो मोक्षने अर्थे पिण निरूप द्रव्य मोक्ष नहो पच्चा पाठने ठामें निस्संयसाए ते ईह भव नो मोक्ष छे ते लोकोक अने पेच्च तथा परलोयस्य पाठ ने ठामे "निसेय साए एतो निरूप द्रव्य मोक्ष छे इह लोक में तो संसार ना मङ्गलोक न अर्थे तुङ्गीया नगरी रा श्रावकारे अधिकारे पिंण कह्यो कय को उय को उय मङ्गल पायछिता पाठ कह्यो कय कहतां कीधा कोउ कहतां कोतिक तिलकादिक मङ्गल कहतां मङ्गलीक रे अर्थ दव्य अक्षत दहोयः दिक ईम कह्यो तिम सुरीयाभ पिण संसार ना मङ्गलोक ने अर्थे प्रतिमा ते पूजी ते पिण थीति राखवा माटे ८३

प्रश्न—उवाई प्रश्न १४ अम्मड कह्यो जे मोने अरिहन्त अरिहंत न चेत्य ए टाल अनेरा बांधवा न कल्पे ते चेत्य कुंण ।

उत्तर—ईहां चेत्य सबद साधु रो छे पिण प्रतिमा नथी अने प्रतिमा होय तो साधु टल्यो तो साधुने किम वांदे अरिहंत ये देव

अने अरिहन्त ना चेत्य ते साधु ए गुरु ए देव गुरु टाल ओरं ने वादवां न कल्पे ८४

प्रश्न—उपासग दसा अ: १ कह्यो आणन्द अन्य तीरथी १ अन्य तिरथीना देव २ अन्य तिरथी ग्रह्या अरिहन्त ना चेत्य ३ ए तीन नमिवा बांदिवा नमस्कार करवो पिण बोलयां बोलावीवो असणा दिक देवो देवावयो न कल्पे ईहां अन्य तीरथी ग्रहित चेत्य कुण।

उत्तर—ए चेत्य साधु पिण अन्य तीरथी में जाय मिल्या अन्य तीरथो री सरधा मिलता छे जमालि आदि ते पिण चेत्य ईहां पिण प्रतिमा नथी प्रतिमाने बोलावे किम आहार किम देवै पहिलां बोलाय वारो आहार देवा रो त्याग कीया ते माटे प्रतिमा नहीं सरधा भ्रष्ट साधु छे अन्य तीरथीयां आपणा करी ग्रह्या छे तथा अन्य तीरथी रो सरधा आपग्रही छे तेहने बांदवो पहलां बोलायवो आहार देवो न कल्पे अन्य तीरथी रा देव हरी सिव ते पिण बेंग-मान हूंतो पिण प्रतिमा नहीं ८ ठाणांगाठाणे ८ चेडा नो पुत्री सूयेष्टा दिक्षा लीधां पछे तेहने पुत्र सिव थयो कोईक योग थकी ते पिण वीरे वारे हूंतो ते अन्य तीरथी रो देव तेहने पिण बंदी पहलां बोलाय आहार देवो न कल्पे पिण प्रतिमा आस्री नहीं ८४

प्रश्न—चमरेंद्र ३ सरणा ले सुधर्म स्वर्ग गयो तिहां अरिहन्त चेत्य ते कुण।

उत्तर—इहां चेत्य नाम ज्ञांन रो जणाय छे सामान्य ज्ञानवन्त छेदमस्थ अरिहन्त ते अरिहन्त चेत्य दीसे छे जे सक्र ईन्द्र बिचार्यो अरिहंत १ अरिहन्तना चेत्य २ अणगार ३ तीना रा सरणा थी चमर आवे अने मे वज्र मुक्यो छे तो रखे अरिहन्त १ भगवन्त २ अणगार नो असातना थाय ईहां अरिहन्त चेत्य रे थांनके भगवंन्त कह्या भग-वान नाम ज्ञान रो पिण छे ते माटे सामान्य ज्ञानवन्त अरिहन्त ते अ-रिहन्त ना चेत्य जणाये छे, समावायंग में चोबीस तीर्थङ्कर ना चोबीस

चेत्य रूप कह्या, जे वृक्ष हेठे ज्ञांन उपजे तेहनी ज्ञांन वृक्ष कह्या तथा भगवती श: २० उ: ९ जङ्घा विद्या चारण तेह चेईयाई, वन्दे ई, ईहां पिण चेत्य नाम ज्ञांनरो छे सम्भवे ईम चेत्य नाम ज्ञांनरो कह्यो छे ८५ *

---

* तथा सारस्वत सूत्र थी तथा कविकल्पद्रुम ना धातु पाठ नी साषी सहीत तथा हेम व्याकर्ण पञ्चमें अध्यायना प्रथम पद नी रीते चेत्य सब्द ज्ञान सिद्ध कीयो छे ते लीख छे;

ज्ञान अर्थस्य चेत्यशब्दस्य व्युत्पतिर्वभण्यते
चितिज्ञाने अयं धातु: कविकल्पद्रुमधातुपाठे
तकारान्त चकारधधिकारेऽस्तितत्था ह्री
चते भूयाचेचीतीज्ञाने चित्ङक्चितीकिं
स्मृतो इत्यादि: इकारानुबन्ध: त्वाक्ययोरिणनिषेधार्थं
पस्चात्चित् इतिस्थिते ततो नाम्युपधातक: इति
सारस्वतोक्तसूत्रेणक: प्रत्यय:
तथा हेमव्याकरण प्रञ्चमाऽध्यायस्य प्रथमपादोक्त
नाम्युपांत्य प्राक्रगद्ज्ञ: क: अनेनापिसूत्रेणक:
प्रत्यय: स्यात् ककारोगुणप्रतिषेधार्थ: पश्चायचेतती
जानाती इति चित: ज्ञानवानित्यर्थ: तस्य भाव
चेत्यं ज्ञानमित्यर्थं भाव तद्विसैत्तापणप्रत्यय:
हेमाचार्य कृत व्यारण सास्त्रोरीते चेत्य सब्दने ज्ञान सिद्ध कीयो छे।

प्रश्न—जंघा विद्या चारण लब्ध फोरी नन्दी स्वर रुचक दीप जाय तिहां चेईयाइं, वन्दइ, तिहां वांदे कह्या ते चेत्य कुण ।

उत्तर—इहां चेत्य सब्दे ज्ञान सम्भावीये छै वन्दे नाम गुण ग्राम नो छै जिम भगवान दाह्या हुंता तिम हीज देख्या थका धन भगवान रो ध्यान धन भगवान रो ज्ञान रा गुण कीया छै जे जणाय छै अने जो प्रतिमा कहे तो तिणरे लेखे नमसइ, पाठ कहतां तथा नमो थुणं गुणतां साधा ने तथा भगवान ने वाद्य तिहां वन्दइ, नमसइ, पाठ घण ठामें कह्या छै अने नमसइ, पाठ इहां मुल थकी ज नथी वन्दिइ, ते गुण ग्राम रो छै दशवी कालक अ: ५ उ: २ गा: २८ वन्द माणो जन जाइथा वांद तो गुण ग्राम करतो अहारी दीन जावे वन्दइ, नाम गुण ग्राम रो छै घणे ठामे कह्यो छै तिम वन्दइ, नाम इहां पिण गुण ग्राम रो छै वलि मानुष्योतर पर्वत पर ठांणागठा ४ उ: ३ च्यार कुट कह्या पिण सिद्धान्त न कुट कह्यो नथी टीकामें १२ कुट कह्या ताम देवता रा वासा कह्या पिण सिद्धायतन कुट टीका में पिण न कह्यो तिहां चेइयाइ, वन्देइ, पाठ कह्या इहां किसा चेत्य वान्ध्या होता इहां सिद्धातन कुट नथी वलि बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्या ते माटे लब्धि फोरी जाय ते कार्य सावद छै ८६

प्रश्न—प्रश्न व्याकरणे तीजेसंवर द्वारे कह्यो आचार्या दिक नी व्यावच करे ते चेईअठे निरधरठी इहां चेत्य कुण ।

उत्तर—इहां चेत्य नाम प्रतिमा ने न सम्भवे प्रतिमा री व्यावच किम करे वलि नव, सिष्य, तपसी, रोगी, सधरमीं, सर्व कह्यो छै इमे प्रतिमा क्यूंकही जिन प्रतिमा नि सरीखो कहै तिण र लेखै सगला पहलां कहो जें पिण इहां प्रतिमा री वेयावच न सम्भवे चेत्य, साधुने घणे ठांमें कह्यो छै कलाणं १ मङ्गल २ देवयं ३ चेईयं ४ चित्य प्रश्न कारी ते माटे साधु ने चेत्य कह्या आगे तो आचार्या दिक नाम लेई कह्या छै छेहडे चेत्यार्थ साधु पण नि अर्थ छे जेहने विषे

एहवा अनंत वाला दिक साधु नो वेयावच करे निर्जरहो कहतो निर्जरथो थश्रो एकतो ए अर्थ सम्भवे छे तथा चैत्य नाम ज्ञान रो छे ए आचार्या दिक नो वेयावच करे ते चेइयं कहतां ज्ञान रे अर्थं ते पिण निजराहो ते निजरा नो अर्थ छतो पिण पूजा प्रसादीक नो अर्थ नहोय एवो जो अर्थ पिण मिलतो छे केतला एक प्रथम न्याय कहे छे ते भणो बहु न्याय कह्या छे ते बहुमोलना छे एकेक सब्द ना अर्थ मिलता अनेक कह्या छे टीकामें ते माटे एक पाठरा मिलता अर्थ घणा हुवे तेहने दोष नहीं अरह कहतां पूजा योग छे अरह कहता नहीं रहवा नो इम एक शब्द ना अर्थ अनेक सम्भवे छे ८७

प्रश्न—प्रथम आश्रव द्वारे प्रतिमा कही ते केहनी।

उत्तर—प्रथवो काय केहने अर्थे हणे गढ कोट ते इत्यादिक कही सिखर बन्द देहरा प्रतिमा पिण कही इहां तो प्रथवो कायरो आरम्भ उलखायो तेहने जैन सिवा दिक ना सर्व देहरा प्रतिमा आया एतलारे अर्थे प्रथवी हणे ते मन्द बुद्धी अत्यन्त माहा मुरख मति ज्ञान रहित कह्या वलि अर्थ धर्म काम हेते तेहने हणे तेहसे कड़वा फल कह्या तथा प्रश्न व्याकरण अ: ५ प्रतिमा परिग्रह में कही ते परिग्रह बान्धा धर्म नथो साधु तीर्थङ्कर परिग्रह में नहीं २ आचारङ्ग श्रु: १ अ: १ जन्म मरण मुकायावा आरम्भ करे तिणने अहित अबोध नरक, रा फल कह्या ३ तथा आचारंग अ: ४ उ: २ धर्म रे अर्थे जोवने हणवा ए तोन काल रा तीर्थकरा नी वाणी कही ४ तथा सुयगडाङ्ग श्रु: २ अ: २ जे समण माहण हिंस्या परुपे तेहने घणो मोच्च मारग रोग सोग वालारां विजोग दुस्मण रा संजोग कहा ५ तथा आचारंग श्रु: १ अ: ५ उ: २ धर्म हेते जीव हणा दोष नथो इम कहे तेहने अनार्य कह्यो ६ इत्यादिक अनेक ठामे हिंस्या रा फल कड़वा कह्या ८८

प्रश्न—सेतुंजो सासतो क असासतो।

उत्तर—भगवती श: ७ उ: ६ कह्यो गङ्गा सिन्धू वैनद्री अने बेताड बरजी सर्व पर्वत थल बिलय होय जासी इम जंबू द्वीप पन तीमें कह्यो ८६

प्रश्न—संखेसरा पार्श्व नाथ नी प्रतिमा चन्द्र प्रभुना वारा नी कही तथा भरत देहरा अष्टा पदे कराया कहै ते माहावीर ना वारे लगी रह्या गोतम वान्द्या इम कहै सै किम।

उत्तर—भगवती श: ८ उ: ९ तलाव व देहरा दिक क्रतम बस्तु नी थित संख्याता काल नी उत्क्रष्टी कही अने ए काल असंख्यातो थायो ते माटे ए बात मीले नहीं देव प्रभावे कहै तो देवता कोई बस्तु नी थीती बधारवा असमरथ छे ९०

प्रश्न—सूत्र में तीर्थ यात्रा किसी कही।

उत्तर—भगवती श: १८ उ: १० सोमल ने श्री महावीरजी तप नो सयम सिझाया दिक धान दिक् नाय ले ते यात्रा कही १ तथा ज्ञाता अ: ५ सुखदेव ने थार्वचा पुत्र पिण ज्ञांन, दर्शन, चारित्र, ना यतन ते यात्रा कही २ उतराध्ययन अ: १२ गा: ४६ ब्रह्मणा ने हर-केशी मुनी शील रूपीयो तीर्थ कह्यो ३ तथा भगवती श: २० उ: ८ साधु, साधुवी, श्रावक, श्रावीका, ए च्यार तीर्थ कह्या सेत्रुजा अष्टा-पद्र प्रमुख ने पर्वत कह्यो पिण तीर्थ कह्यो नहीं ९१

प्रश्न—"कय बलि कम्मा" नो अर्थ किम।

उत्तर—भगवती श: २ उ: ५ टीका में तो स्वग्रह देवता ना पोता ना घरना देव पुजा इम कह्यो ते लेखे कुलरा देव मिले भगवान तो तीन लोक रा देव छे तेहना घरर देव नहीं तथा "कय बलि कम्मा" नो अर्थ कोई सिनांनो विशेषण जलांजल कुरला दिक पिण कहै ते क्रिम ज्ञाता अ: २ में कह्यो भद्रा पुत्र नी वांछाई करि यच्छ नाभ भूत पुजवा गई तिहां वावडी में जल किड़ा करी न्हाया

"कय बलो कमा" इहां बावड़ो मैं केहा देवनो प्रतिमा पुजो नागा दिक नी प्रतिमा तो वावड़ी थी नीकल्या पछे पुजो छे १ तथा ज्ञाता अ: ८ मल्लिनाथ पितारे पगे लागा तिहां जाव सब्द म "कय बलि कमा" कह्या ते तीर्थङ्कर किसो देव पुज्यो २ तथा ज्ञाता अ: १६ द्रौपदौ ने नहावा ना घर में सिनान बलि कर्म करो पछे सूध वस्त्र पहस्या कह्या तो स्त्री जात सुभावो नग्न थई नाहवा बेठे तिहां केह्यो देव पुज्यो ३ तथा भगवती श: ९ उ: ३३ देवा नन्दा जमाल नाहावा ना घरमें बलि कर्म कस्यो ४ तथा भगवती श: ७ उ: ९ वर्ण नाग नटुऔ नावा ना घरमें बलि कर्म कीधो ५ तथा राय प्रसेणी में कह्यो कठियारा वनमें सिनान करी बलि कर्म कीधो ६ तथा प्रदेसी ने केसी कह्यो तुम निज घरमें नहाइ बलि कूर्म करी देव पुजवा जातां विजे भंगी सेतषांना में बोलावे तो तुं जावे इण नहाया ना घरमें बलि कर्म कीधो देव पुजवा तो पछे चाल्यो ते पाठ तो जुवो छे ७ तथा उवाइ में कोणक वीर वांदवा जातां सिनान वीस्तार सहित वर्णाव्यो तिहां "कय बलि कमा" मूलगो पाठ ज नथी जो बलि कर्म प्रतिमां नी पूजा होय तो इहां अव्यस्यमें व जोइये ८ तथा जंबू द्वीप पणति में भरतजी रे स्नान बिस्तार सहित कीयो कह्यो तिहां पिण बलि कर्म सब्द न कह्यो अने कोणक भरतने नाहवा नो अधिकार संखेपे कह्यो तिहां नाहांया "कय बलि कमा" पाठ ठाम २ कह्या ते माटे बलि कर्म नाहवा नों बिसेष जणाय छे नहातां जलांजलंकुरला कुलाल लट अर्थ देवा ना ठांम लेवा मरद न उगटणा प्रमुख दीसे छे ९२

प्रश्न—तथा श्रावका ने अवेभ्रा कह्यो तेहनो न्याय कह्यो किम।

उत्तर—रोगादिक पीड्या देवता नो साहज ने वांछे तथा पाषण्डी आवी गावे तेहने पोते जवाव देवा समर्थ पणि देवता नो साहज न बंछे तथा भगवती स: १ उ: ५ टीकामें पिण एमज कह्यो छे पिण संसार ने हेत सम्यग दृष्टी पिण देवता तो साहाय वांछे छे जंबू द्वीप पन्नती

में कह्यो भरतजी चक्र रतन ने पूज्यो १३ ते लोकीक पावे भरत खेत्र साधतां किधा मागधादि देवने बांण मुके ते बांण मुके ते बांण में देवता नें नमस्कार करी लिखे छै १ तथा ज्ञाता अ: १ अभय कुमार धारणी रो डोहोलो पूरवा तेलो कियो तेणे देवता नो साहज को नहीं वांछ्यो २ तथा उपासग दसा अ: १ आणंद ६ आगार राख्या देवा भिउ गेणं ते देवता ना योग थी अन्य तीरथी ने देवबन्दना करवा रो आगार राख्यो २ तथा सूयगडांग श्रु: २ अ: १ अर्थ दण्ड में नाग हेतु वा भूत हेतु वा यक्ष हेतु वा कह्या ४ तथा पाण्डुराजा कृष्ण नारद ने पगे लागा कह्या ५ तेथा ज्ञाता अ: ८ मलिनाथ पिता ने पगे लांगा ते पिता श्रावक पणो मलिनाथ संजम लीधा पछे आदर्यो छै ६ तथा हिवडा पिण पड़िकमणा में केतलाए सासन देवीनो २४ यच २४ यक्षणी नी थूई आ कहै छै तेण साहज वांछ्यो क न बांछ्यो अने सूत्रमें तो प्रतक्ष समदृष्टि लोकिक खाते कुल देवादिक नी साहज बाछता कह्या पिण धर्म्म हेते माने नही:८३

प्रश्न—चेत्य सब्द तीर्थङ्कर ने किणे सूत्र में कह्यो।

उत्तर—राय प्रसेणी में सूरयाभ अमल कम्पा नगरी माहावीर ने दीठा तिहां चित व्योतङ्ग छामिणं समणं भगवं माहावीरं बन्दामि नमंसामि सकारेमि समाणेमि कैलाणं मंगलं देवयं चेइयं पजुवा सामिणं पेञ्चा हियाए सूहाए खमाए निस्सेयसाए अणु गामित्ताए भवीसइ” इहां भगवन्तरा ४ नांम कह्या तेहनो अर्थ टीका में इम कीयो कल्याणना हेतु ते भणी भगवांनने कलणं कहीजे १ दुरत उपसम हेतु ते भणी मङ्गल २ तीन लोकना अधिपति देवने माटे देवतं ३ प्रसस्तमनन हेतु ते माटे देवतं भगवन्त ने चेत्य कह्या ५ इहां तीर्थङ्कर ने चेत्य कह्या तथा भगवती श: २ उ: १ खन्धक माहावीर ने बांधवा नीकल्यो तिहां पिण माहावीर ना नाम में ४ चेत्य नाम कह्या तथा जाव सब्द में माहावीर ना ४ नाम कह्या तेह में चेत्य सब्दे माहावीर

नें घणे ठामें कह्यो छै भगवती श: ११ उ: ९ सोव राज ऋषी माहा-वीरने चेत्य कह्या ३ तथा भगवती श: ११ उ: ११ तापस पिण माहा वीर ने चेत्य कह्यो २४ तथा भगवती श: ९ उ: ३३ ऋषभदत्त ब्राह्मण पिण माहावीर नें चेत्य कह्या ५ तथा भगवती श: १२ उ: १ ऋषि श्रावके माहावीर इसी भद्र पुत्र प्रमुख श्रावके माहावीर ने चेत्य कह्या ७ तथा भगवती श: १६ उ: ५ गङ्ग दत देवै माहावीर ने चेत्य कह्या ८ इहां सर्व ठांमें इह भवे पर भवे हियाए तथा पेच्चा हियाए सूहाए इत्यादिक कह्या किहां जाव शब्द में कह्या पिण पेच्चा पाठ हियाए नथी इम तीर्थङ्कर ने चेत्य अनेक ठामे कह्या राय प्रसेणो री टीका में चित प्रश्न ना हेतु ते माटे ए चेत्य अर्थ सर्व ठामें करवो ९४

प्रश्न—साधु ने चेत्य किसा सूत्र पाठे कह्या।

उत्तर—भगवती श: २ उ: ५ तुङ्गीया नगरी ने श्रावके थिवरांने कलाणं, मङ्गल, दवयं, चेइयंए, ४ नाम कह्या कल्याण ना हेतु ते भणी कल्याणं १ दुरत उपसमावण रा हेतु ते भणी मङ्गलं २ धर्म्म देवते भणी दवयं प्रचित प्रश्न ना हेतु ते माटे चेत्य इम ४ नाम साधु रा छै चेइयं रो अर्थ राय प्रसेणी री टीकामें कह्यो ते हिज अर्थ जे जे ठामें साधु ने चेत्य कह्य ते सर्व ठांमें करवो १ तथा सूयगडांग अ: २३ गोतम साधु ने पिण चेत्य कह्यो २ तथा ठाणागठा ३ तथा भगवती श: ५ उ: ६ सुभदीर्घ आउखो वांधे साधारा ४ नाम में चेत्य साधु ने कह्या २ तथा ठाणांगठा २ उ: २ देवता धर्माचार्य्य ने वांदवा आवे तिहां कलाणं, मङ्गल, देवइ, चेइयं, इहां पिण साधा ने चेत्य कह्या ४ तथा ठाणागाठा ४ उ: ३ आचार्य्यादिक ने देवता वांदवा आवे तिहां पिण ४ नाम में साधु छै ते चेत्य नाम साधु ने कह्या ५ इम अनेक ठामें साधु ने चेत्य शब्द कह्या छै ९५

प्रश्न—उतराध्येयन अ: २८ गा: २४ तथा नदी में पयना कह्या

तथा अनुयोग द्वारे निरयुक्ति कही ते पयन्ना निरयुक्ति प्रमाणीक छे ते मानणीक नहीं।

उत्तर—ए उतराध्येयना दिक सूत्र माहावीर छतारा छे ते मध्ये पयना निरयुक्ति कही ते पिण भगवांन छता कीधा छे तेतो सिद्ध छे मानवा योग छे पिण पयना नीरयुक्ति दीसैःनहीं हिवड़ा पयना नीरयुक्ति पाछला रा वैणाया छे पिण मुलगा नहीं जे आवसक निरयुक्ति भद्र बाहु नी कीधी कहै भद्र बाहु नी कीधो विरुध छें न सम्भवे अने निरयुक्ति में अनेक बिरुध छे ते लिखीय छे ठाणागाठा ४ संनत कुमार चक्री ने मोक्ष गया कह्या अने आवस्यक निरयुक्ति मैतीजे देवलोक गया कहैछे ए विरुध छे उवाइ भगवती पण वणा में कह्यो उत्कृष्टो ५०० धनख री अवगाहना री सीझे अने निरयुक्ति में मरु देबीरी ५२५ धनुख री अवगाहना कही २ समवायंगी ऋषबाहुबल री आउखो ८४ लाखपूर्वरो आयुखो कह्यो अने निरयुक्ति में ऋषबाहु बल एक समय ए मोक्षगया कह्या ३ मलि नाथ ने चारित्र केवलि एवं कलाण ज्ञाता अ: ८ पोह सुदी ११ कह्या अने निरयुक्ति में मगसर शुदी ११ कहै ४ तथा निरयुक्ति में कह्यो साधु पञ्चक में काल किया ५ पूतला भैला बालव इम निरयुक्ति में विरुध बांता घणी छे ते माटे ए पयना निरयुक्ति प्रमाण नहीं ८६

प्रश्न—तीन आगम सूत्रागम १ अर्थागम २ उभयांगम ३ कह्या तो हिवडा अर्थागम किम।

उत्तर—अच्छम्भासई अरहा सून गुच्छइ गणहरा निउणा अर्थ भाष्या अरिहन्त ते अर्थ नोज गण धरे सूत्र गुच्छो छे ते माटे ते अर्थागम सूत्रागमे अन्तर छे तेहज अर्थ प्रगट करे तेहवो सूत्रागम विगटे नहीं ते जांणा नें अर्थागम कही जे सूत्र रूप जाण पणने सूत्रागम कहो जे ए आगम तो अरूपी छे अने टीका तो पाछला री कीधी छे ते मध्ये अनेक वाता विरुध छे ते आगम नथी ८७

प्रश्न—स्वयं बुद्ध १ प्रते क बुद्धि २ बोधी बोहो ३ तिहां आपरा मनथी सूत्र वाची धर्म्म प्रगट करे ते किसा बोध में।

उत्तर—बोधिते नाम समदृष्ट नो पिण छे तो जे उतराध्ययन अ: २६ कह्यो सूत्र थी समकित पामें तथा नेटी में कह्यो मिथ्याती रा वरतादिक पूर्वापर विरुद्ध छे ते देषी समकित पामें २ तथा भगवती श: ९ उ: ३१ कह्यो श्रावक श्राविका उपासग उपासग उपासिकां रो समभायो समदृष्ट तथा चारित्र पामें ३ तथा अविहार उ: १० कह्यो भेखधारी कने प्रायच्छित नवी दिच्या ले तेपी तेहने कह्यो लेवे ए ४ पाछे कह्या ते किसा बोध में जो एं बुध बोध में हुवे तो सूत्र सूं संजम धारे तो ए बुद्धि बोध किम सम्भवे वलि बहु श्रुते वदे ते सत्य ९८

प्रश्न—भगवती श २ उ: ९ कह्यो माहरो तीर्थ २१ हजार वरस तांई रहसी तो बिचमें सारो विरह किम होसी।

उत्तर—ए तीर्थ नाम सांसनरो जणाय छे जो कोई वेला साधु थाय कोइ वेला साधु न थाय तो पिण सासण वीर तो मिटे नहीं विचे दुजा तीर्थङ्कर रो सासण प्रवर्त्ता जब आगलो सासण मिट्यो कहिये भगवती श: २० उ: ९ ते बीत अन्तरा में दृष्टी वाद सर्व अन्तर में विच्छेद कह्यो अने बिचाला आठ अन्तरामें कालिक सूत्ररो पिण विच्छेद कह्यो पिण सांसण दूजारो न पाय इहां साधु रो विरोह कोणही काले थये तो पिण सांसण माहावीर नो कहीये एहवुं जणाय छे उतराध्येयन अ: २८ तथा भगवती श: २५ उ: ७ टीका में तीर्थ नाम सासण रो कह्यो छे ९९

प्रश्न—सामायक केतले भांगे नीपजे।

उत्तर—जघन छे भागे भगवती श: ८ उ: ५ टीका में कही छे तथा भगवती श: ८ उ: ५ गुणपचास भागा श्रावकरा कह्या ते माटे वे भागे करी मध्यम ८ भागे समायक उतकृष्ट पणे ९ भागे पिण वाथ्या नहीय १००

प्रश्न—शुभ जोग ने सम्बर कहीजे क अजोग ने सम्बर कहीजे।

उत्तर—ठाणां गठां ५ तथा समवायंगी समवाये अजोग ने छेसंवर कह्या अने योग आश्रव कह्या २ तथा अनेयोग द्वारे योगने अने ६ लेस्या ने उदे भाव कह्या जे सुभ जोग कह्या सुभ लेस्या थी पुन ग्रहै ते न्याय सुभ लेस्या सुभ जोग ने उदै भाव कहीजे आश्रव कहोजे २ तथा उवाइ मे निरजरा ने भेदा मे कुशल मन बचन काया रो जोग प्रवर्त्तावणा कह्या ते सुभ जोग थी कर्मकटे ते लेखे निरजरा रो करणो छै निरजरा पदारथ मे पिण सुभ जोग आवे ३ तथा-उतराध्येयन अ: ३४ सुभ लेस्या ने धर्म लेस्या कही ते लेखे सूभ लेस्या ने पिण निरजरा कही छे एहथी कर्म कटे छे ४ तथा उतरा-ध्येयन अ: २९ केवली चवदमें गुणठाणे जाय जद पहिला मन योग रुधै छे पछे वचन योग रुधै पछे काया जोग रुध कह्या जो सूभ जोग संवर होय तो संवर ने किम रुधे रुधवो तो आश्रव नो छे ५ तथा विपाक प्रथम सूख विपाक मे सूमुख गाथा पति प्रथम गुणठांणे साधांने दान दीयो तेहना सूभ जोग कह्या अने प्रथम गुणठाणे संवर रुप वृक्ष वरणव्यो तिहां ध्यान सूभ योग ज्ञान ए ३ पलव अंकुरा ना धरणहार कह्या ते निरजरा आश्री छे उवाइ मे धर्म शुक्ल ध्याने अने कुसल जोग निरजरा मे कह्या अनु-योग द्वारेमे ज्ञान ने ख्यायक निसपन कह्या खय उपसम नि सपन कह्या ते पिण ज्ञानावरणी रो ख्ययक खयोपसम निसपन छे ते पिण निरजरा उजल जीवछे ते भणी सूभ ध्यान सूभ जोग ज्ञान रुप वलव कह्या छे ते निराजरा रुप छे संवर करता सहचर निर-जरा होय ते माटे संवर रुप वृक्षरा वरणव में निरजरा ने पिण कथन आयो छे पिण सूभ योग न संवर कही जे १०१

प्रश्न—फटक सिंहासण सूभाविक के देव कृत।

उत्तर—स्वभाविक जणाय छे भगवती श्र १५ भगवंत रे अर्थे

वीजोरा पाक कीधो ते न लीयो तो देव क्रत सिंघासण किम भोगवे ते माटे तीर्थंकर ना पुन थी फटिक सिंघासन सूभाविक दिसे जुगलीया रा पुन थी कल्प वृक्ष पूरवे ते पिण सुभावीक छे जिम वालक रा पुन्य थी माता ने स्तने दुध श्रवे पिण देव क्रत दुध न थी तिम फटक सिंघासण तिसय पुन्ये करी छे समवायंगे कह्यो चक्र छत्र चाम २ फटिक सिंघासन ईन्द्र धजा पुर उगछेइ कहतां आगे चाले इम कह्यो तथा पिण देवता चलावे ईम न कह्यो तथा आधा करमो न कल्पे १०२

प्रश्न—कर्म्म ग्रन्थ देवेन्द्र सूरनो कीधो ते सत्य क नहीं।

उत्तर—घणी वातां तो सूत्र मिलतो छे ते तो शुद्ध अने कोई वातां सूत्र विगटे ते भणी सर्व प्रमाण नथी आ गाथा वारमा गुणठाणा २ कह्यो अने भगवती श: ८ उ: २ एकेन्द्री ने मिथ्याति कह्या १ तथा आगा साधु रे निच गोत्र गोत्र उदय नथी कह्या अने उतराध्येयन अ: १२ हर केसी चण्डाल साधु हुता २ तथा कर्म्म ग्रन्थे पांच में गुणठाणे वेक्रय वरज्यो अने उवाई में अम्मड श्रावके वैक्रिय रूप कीया कह्या ३ तथा कर्म ग्रन्थे चवद में गुणठाणे ३ सरीर नो उदय नथी ओर पिण घणा बोल टालया अने उतराध्येयन अ: २९ गुण-ठाणे १४ तीन सरीर कह्या ४ तथा कर्म ग्रन्थे चक्षु, अचक्षु, दरसण में गुणठाणा १२ कह्या, अने भगवती श: १५ उ: ७ सूक्ष्म सम्पराय में दरसण नथी इम कह्यो ५ तथा कर्म ग्रन्थे मति श्रुति आवधि ज्ञान में गुणठाण ८ कह्या चोथा सू वारवां ताई अने भगवती श: ८ उ: २ बे इन्द्री में दोय ज्ञान कह्या तेम न्यायमति श्रुति ज्ञान में बीजो गुण-ठाणो पावे अने बीभंग ज्ञान में प्रथम तेजो गुण ठाणा तिहां तीजो गुण ठाणो पिण पावे तथा कर्म ग्रन्थे च्यार गुण ठाणे ३ माठी लेस्या पावे उपरन्त न पावे इम कह्यो किहांइक छे गुणठाणे में पिण कह्यो ए पिण पूवा पर विरुद्ध छे ७ तथा कर्म ग्रंथे विक्र-

लेन्द्रि :में असनी में २ अज्ञान अचक्षु में ए ३ उपयोग कह्या अन भगवती श: ८ उ: २ दोय ज्ञान पिण कह्या ८ तथा कर्म ग्रन्थे स्त्री पुरुष में जीवरा भेद च्यार कह्या अनै जीवा भिङ्ग में असनी ने नेपुसक कह्या ६ कर्म ग्रंथे सूख संपराय में ६ योग यथा ख्यात में ११ आठमा थी बारमा तांई ६ जोग कह्या अनै भगवती श: १ उ: १ अप्रमादि ने अणारंभीक कह्या सुभयोग कह्या १ तथा कर्म ग्रन्थे तिर्यञ्च रो आउखो पुन कह्यो अनै सुखमरो आउखो तो प्रत्यक्ष पाप दीसे छै ११ इत्यादिक विरुद्ध वातां घणी छै सर्व मानवा योग नहीं सुत्रन विगटे ते वात प्रमान ने करवी १०३

प्रश्न—विपाक में मृगा राणी गोतम ने कह्यो मुहपती करी मुख बाधो ते मुख नाम किणरो ।

उत्तर—ए मुख नाम नाक रो छै दुर्गन्ध ने अर्थे कह्यो दुर्गन्ध तो नाक ने इज आवे ते भणी नाक मुख कह्यो ज्ञाता अ: ८ कह्यो जित सत्रु आदि छै राजा दुर्गन्ध करी व्याप्या थका उतरा सेणी करी आसातो पोहिति कहतां मुख ढाके १ तथा ज्ञाता अ: ६ जिन ऋष जिन पाल पिण मृतक न गन्ध थकी व्याप्या वस्त्रे करी मुख ढाक्या कह्या २ तथा ज्ञाता अ: १२ जित सत्रु राजा दुर्गन्ध व्याप्या वस्त्रे करी मुख ढाक्या कह्या ३ इम नाक ने मुख घणे ठामे कह्यो तथा निरावलिया अ: १ श्रेणक ताड पुड विष आसग सिंपच्चेवेति कहतां मुखमें प्रच्चे येइहां घावे जेणी करी तेहने मुख कह्यो कांन आंख नाक गाल होठ हडवडिया दिक मुखना अशय छै ते सर्वनइ मुख कहीजे आचारङ्ग अ: १ उ: २ प्रथवी कायरी वेदना उपर जनम अन्ध पुरुष नो दृष्टान्त कह्यो तिहां ३२ जागा भाले भेदे घडगी छेदे तिण मुख नो नाम न कह्यो ,कान, आंख, गाल, नाक, होठ, जीभ, दांता, दिक :मुखना अव्यव कह्या ए सर्व ने मुख कहीजे ते भणी म्यारो मूखरा नाम न कह्या ते भणी नाक ने पिण मुखना

अवयवं माटे मुख कहीये वलि गौतम रे मुंहपती न हुंती तो मृगा घाणी थी वात करी ते वेला उघाड़े मुख वात किम करी उघाड़े बोले नही ते माटे मुख आडि तो जयणा पहीला जणाय छे पछे नाक ढांकवारी कह्यो छे १०४

प्रश्न—आचारंग मे मांस मद्य खावणो कह्यो ते मांस नामे केहनो।

उत्तर—ए मांस नाम वनसपति नो गिर दीस छे भगवती श: ८ उ: ८ पंचेंद्री मांस खाता तो नरक कही छे तथा प्रश्न व्याकरण अ: साधांने मांस खावणो वरज्यो छे ते माटे ए वनसपती नो मांस छे पणवण पद १ कुलियां ने हाड़ कह्या २ तथा दसवीकालक अ: ५ उ: १ गा: ७३ कुलिया ने हाड़ कह्या २ इम कुलियां ने हाड़ अनेक ठांमे कह्या तिण न्याय गिरने मांस कही जे १०५

प्रश्न—जांणवा नो जाणं तीव देय एहनी अर्थ सू।

उत्तर—एहनो अर्थ इम करवो जांणवा जांणवौं छतो पिणं जांणंति जाणु छु इम नो वदे व्यानक है इम नकार देवा लारे जोड़वो मृगादिक जीवा ने पुंछ्या मुन कहो पछे तो मुन इज हढ़ कोधा पिण झुठ न बोले दसवी कालक अ: ७ गा: १ असम मिश्र सर्व थावर जीते माटे १०६

प्रश्न—आचारंगे लुण खाणो कह्यो ते सचित क अचित।

उत्तर—अचित विलवण ते वलो तेहने विलवा लुण कहीजे उंद भिदे ते पिण पचायो नसोत चुर्ण मे इउ सप घावे तेहने उभिधं लवण कहीये आचरंग श्र: १ अ: २ उ: सचित पाणि अजाणे आया तेहने ठांमे घालणे तथा परठणे कह्यो पिण पोणो न कह्यो तो लुण सचित किम खाणो कह्यो वृत्ति कार पिण अचित कह्यो छे कारणे सचित थाप्यो ते विरुध छे पाठमे अपवाद न कह्यो ते माटे १०७

प्रश्न—ज्ञाता अ: १६५ वासुदेव ने ३२ सहस महिला समचे कही छे ते केहनी पुत्री।

उत्तर—सोले सहस देवो ते राजा नो बेटी अवे सोले १६ सहस महिला ते श्रेष्टी प्रमुख नी बेटी एवं ३२ सहस स्त्री जिम चक्रवर्त्ते रे ३२ उडु कल्यानीहा अने ३२ सहस जणवय कल्याणीया तिहां एह टीका मे ३२ सहस राजा नी कन्या कही जे ३२ सहस सेठ प्रमुख नी बेटी तिम इहां पिण जणाय छे१०८

प्रश्न—मलिनाथ न अवधी ज्ञानी ज्ञाता में २००० कह्या अने समयमे ५९०० कह्या तेहनो नाय किम।

उत्तर—जे आवधि ज्ञांनी घण प्रकार ना कह्या छे ते माटे बीस सौ कह्यो ते अनेरा प्रकार ना होस्ये सर्व प्रकारना ५९०० इम जणाय छे नंदी म अवधी छ प्रकार ना होसे ते भणी न्याय दीसे छे १०९

प्रश्न—मलीनाथ ना मन पर्यव ज्ञानी ज्ञाता अ: ८ मे ८०० कह्या अने समवयागे ५७०० कह्याते किम।

उत्तर—नंदी सूत्र मे मन पर्यव ज्ञांन ना २ भेद कह्या ऋजु मती १ विजल मति ते मध्ये ८०० अनेरा प्रकारणा होस्ये अने सर्व ५७०० इम जोयतो कारण नही जिम कल्प सूत्रमें पार्श्व नाथने चारित्र छ सयाश्रिउसइणं अठसया विउलम इण इम मन पर्याय ज्ञानी ना भेद जु जुआ कह्या छे इम जोयतो पिण कारण नही ११०

प्रश्न—साधु रे पोसह हुवे क नही।

उत्तर—दसाश्रुत खंध अ: ५ जे साधु पक्षी रे दोन उपवास करे तो अधिक धर्म माटे पोसह कह्यो १११

प्रश्न—छेदपो स्थाप नीक चारित्र रा धणी जघन्य उतकृष्टा प्रतक सो कोड भगवती श: २५ उ: ७ कह्यो ते किम।

उत्तर—टीका मे कह्यो उतकृष्ट प्रतक सो कोड ते तो आद

तीर्थंकर न तीर्थ आव्यो अने जघन्य पिण प्रतक सो कोड़ कह्या ते सम्यक प्रकारे न जाणिये जे भणी दुखम कालरे छेहड़े भरता दि १० क्षेत्र एक साधु १ साधुवी इम वेठ हेतो २० हुवे ते माटे अने अनेरा आचार्य इम कह्यो छे ए जघन उतकृष्ट वेह आदि तीर्थंकर नो जे तीर्थ काल तेहनो अपेक्षा ये इज जणाय छे प्रतक सो कोड़ जघन्य अलपतर उतकृष्ट वह्ह तर एहवुं टीका मे कह्यो छे ११२

प्रश्न—तीर्थंकर नो जन्म तीजे चोथे आरे हुवे किण सूत्र कह्यो।

उत्तर—भगवती श: २५ उ: ७ छे दोप स्थापनी चरित्र रो विरह सम काले दस क्षेत्रा मे पड़तो जघन्य ६३ हजार वरसरो कह्यो जे छठो प्रथम बीजो ए ३ आरा ईकवी स २१ हजार वरस बा ते भणी ६३ सहस वरस आवे तीजा आरा ना केई वरस निकल्या तीर्थंकर जन्मे पछे दीक्षा ले तीर्थ प्रवर्तवइ तिवारे छे दोपस्थाप नीक दूजे हजार वरस्याए अधिका वरते छे ते अलप माटे तेहने नले-खवीया ते भणी ६३ सहस वरसा रो ज बीरह कह्यो इण न्याय तीर्थंकर विजे आरे न जन्मे ११३

प्रश्न—कृष्णजी तीजी नरक थी नीकल तीर्थंकर होसी विचे और भव करी तीर्थंकर हो होसी।

उत्तर—नीरयाउ नर भव मिदेवो हो कृण पंचमे कप्पे तउभुउ सेमाणा वारसमो अम्ममती वरो १ इति रतन संचय प्रकरण मध्ये ते सूत्र विरुध छे अंतगड़ मे कह्यो कृष्णजी तीजी नरक थी नीकली अंतरा रहित तिम पणवण पद २ कह्यो ४ नरक थी निकली अंतरा रहित मोक्ष जावे अने परंपरा मोख जाये अने छठा सातमी था अंतर गत ने साझे परंपरा गत सीझे तिम कृष्ण जी पिण तीजी थी अणंतर मोख जासी पिण विचे भव न करे भवकरे तो परं

प्रश्न गत कहीता ते माटे विच भव करवो कहै ते विरुध छे वारमो तीर्थंकर होसी इम हीज ठाणांग आठमा ठांण नी वृत्ति में कह्यो तथा तेरमा जिन हो सी अने कोइक तेरमो कहै ते अजाण छे समवयंगे पिण अमम नाम वारमो ज कह्यो छे अने पाछला भवरा नामा मे नंद सूनंद ए वे नाम आठमा रा पूर्वाचार्ये कह्या ते माटे क्षष्ण वारमोज हुवे जिम समवायंगे एरवीर नी अनागत चोवीसी रा पाछला भव रा नाम म सव सेण, १ अयमंत २ नाम तेरमा रा कह्या तथा देवानंन्दा ने अनंन्त विजय ए वे नाम बीसमा पिण दीसे छे तथा भरत नी वरत मान चोवीसी में सूविध अने पुष्फदंत ए वे नाम नवमा रा पिण छे तिण आणंन्द सुनंद ए वे नाम आठमा ना जणाय छे कृष्ण बारमो होसी ११४

प्रश्न—माखण वे घड़ि पछे जीव उपजे क नही अभक्ष कहीजे क नही।

उत्तर—वृहत कल्प उ: ५ पहिले पोहर माखन वहरी तीन पोहर मरदन करणो कह्यो गाढा गाढ करणो चोथे पोहर मर्दन करणे कह्यो १ प्रश्न व्याकरण अ: संजम जात्रा पले तिम घृत माखणां दिक भोगवणां कह्या २ नसीत उ: १ घृत माखणं दिक मैंथूने निमत षांणा वरज्या पिण और कारण न वरजो ३ इम अनेक ठांमे कह्यो ते माटे अभक्ष न कहीजे ११५

प्रश्न—पैतालिस महिला वत्तीस प्रमांण १३ प्रमाण नही ते किम।

उत्तर—चउ सरण १ भत्त परिग्या २ संथारपयनो ३ ए तीन पयना पिण्ड निरयुक्ति ४ पञ्च कल्प ५ जीत कल्प ६ ए छ नी नंदी सूत्र में सांख न थी अने माहा नसीत मध्ये अकह्यो ए माहा नसीत रा केई पाना उदेई खाधाते आचार्य्यं मिली नवा घाल्या इम माहा नसीत डोहलांणो ते पूर्वा चार्य सरध्ये न थी एव ७ निर्मुला

पुठे रह्या छे तेह में .पिण विरुद्ध वाता घणी छे ते माटे किण होकि निरयुक्ती चुरण भाष्या दीपका टोकां टीका कीधा नहीं तेह भणी प्रमान नहीं अने पुठे रह्या वतीम तेह प्रमाणीक छे ११६ ·

प्रश्न—चोरासी आगम रा नाम किसा सूत्रमें कह्या।

उत्तर—२८ उत कालिक ३१ कालिक ६० वारे अङ्ग एवं ७२ आठ सक एव ७३ नन्दी सूत्र कह्या पच्च सुत्र रानांम व्यवहार दस में उदेसे कह्या ७८ अन्तगड दसा अणुतरोवई इमे दस पए हावा गरण दस वन्ध दसादोगीद्धिदसा दिह साए ६ नाम ठाणांगठाणे १० कह्यो इम ८४ आगम जणाय छे ११७

प्रश्न—कोई कहै कल्प साधु ने उघाड़े द्वार इम कहै पिण न कल्पे किवाड़ जडवो इमकुं कह्यो नहीं।

उत्तर—वृहत कल्प उ: ३ कह्यो साधु साधवी ने जांघी कांचुवो न कल्पे अने कल्पे .साधु साधवी ने जांघी कांचुवो ते लेख कांचु आ विना साधवी ने न कल्पे तिम वृहत कल्प उ: १ न कल्पे साधवी ने उघाड़े किवाड नकल्पे साधुने उघाड़े किवाड़ रहिवो ते लेखे किवाड जडि रहिवो न कल्पे २ तथा ठाणगाठा ४ उ: १ कल्पे साधुने ४ पछेवडि राखणी ते लेखे अधिक न कल्पे ३ तथा ठाणा गाठा ८ कल्पे आठ गुण सहित ने ए कल्प पडिमा धारवो ते लेखे ८ गुण विना न कल्पे ४ तथा ठाणागठां ४ उ: १ कल्पे पडिमा धारो ने ४ भाषा बोलणी ते लेखे अधिक न कल्पे ५ तथा दसा स्रुत स्कन्ध अ ७ कल्पे पड़ीमा धारी ने ३ संथारा ते लेखे अधिक न कल्पे ६ तथा वृहत कल्प उ १ कल्पे १ साधवी ने ग्रामा दिक मे सेखे काल दोय मांस चोमांसे ४ मास ते लेखे अधिक न कल्पे ७ तथा वृहत कल्पउ: ३ कह्यो कल्पे साधु साधवी ने वड़ा लहुडा वन्दना करवो वस्त्रा सोझा संथारो ते लेखे वड़ा लहुडाइ विना कल्पे नहीं ८ तिम कल्पे साधुने उघाड़ा दुवार ते लेखे जड़िवो रहवो नही। तथा उतरा

ध्येयने अ: १५ गा ४ कह्यो किवाड़ मनकर पिण न वांछणो ८ तथा आवश्यक अ: ४ थोड़ो उघाड्यो किवाड़ ते पिण उघाड्यां दोष कह्यो १० तथा सूयगडांग अ २ उ: १ कह्यो साधुने किवाड जडवो नहीं ११ इम अनेक ठामें साधुने किवाड़ बरजा छे ११८

प्रश्न—सर्व द्रव्य थकी आहारहत केतला अने देस द्रव्य थकी आहारहत केतला।

उत्तर—पड्मंमि सव्व जीवावीय चरिमें हि सव्वदव्वे हिंसे साम इव्वया खलुतदेकाइ संमिनायवा १ प्रथम बीजो पांचमो सर्व द्रव्य थकी ए गाथा पणवणा पद अर्थ में कह्यो छे तेहनो न्याय पाठमें दीसे छे ११९

प्रश्न—क्षण रा जीव मध्य वासी लोकांति कीया केतला भव करसी।

उत्तर—ठाणागठा ८ टीका में एकावतारा कह्या १२०

प्रश्न—सुतेन्द्री ना विषय १२ जोजन नो कह्यो अने सोधर्म इन्द्रनो सूस्वर घंटा घणी दूर थी सूणे इमजं घणन्द्री नो विषय ९ जोजन्नेकह्यो अने देवताने ५०० जोजन थी दुरगन्ध आवेते किम।

उत्तर—एविषय उदारीक शरीर वाला रीदीसें छे पर वैक्रिय सरीरवाला रे नसम्भवे तथा छन्दा रेन्याय दीसे छे ठाणागठाण अर्थ में कह्यो छे १२१

प्रश्न—चक्षु इन्द्रीनो विषय लाख जोजन झाझेरो कहे जे वैक्रिय लाख जोजन करे खांड़ने विखे पाषाणा दिक देषवा थकि झाझेरो ते तो ठीक पिण पूर्वार्द्ध द्वीप ना मनुषोतर समीपे मनुष दिवसो लाख ३४ सहस्र ५०० ने ३७ प्रमाणांगुले नीपना जोजन थकी सूर्य्य उगतो आथमतो देखे छे अने इहां थोडो विषय कह्यु ते किम्।

उत्तर—इहां प्रासवस्तु अधिक विषय हि प्रिण है इहां चक्षु

इन्द्री नो विषय प्रमाणांगुल है अने शेष तीन इन्द्रयां नो विषय छे
हे गुल हुई पणवणा १५ अर्थ म इ १२२

प्रश्न—आचाराङ्ग शु: २ अ: २ उ: १ कह्यो मञ्च माला प्रसाद ने
विखेय कारण विना न रहणो ते किम्।

उत्तर—जिम आचाराङ्ग शु: २ अ: १ तथा दसमीकलीक अ: ५
उ गा ६७ कह्या माचा माला प्रसाद ने विखे जे निसरणो पीटा
दिक माटी चढ़ै तेहने अन्तलिख कह्यो जेते जागा ते तुं आहार
देवे तो न कल्पे पिण गथीया सहित अन्तलिख नहीं कह्यो जे तिम
आचाराङ्ग शु: २ अ: २ उ: १ पिण मञ्चमाला अन्तलिखजागा रहवो
वरज्यो छे ते पिण नीसरणीया दिक मांडि चड़ो न रहवो ए न्याय
छे पगथीया सहित उंचे स्थानके अन्त लिख न कह्यो ते माटे तिहां
रह्या दोष नही १२३

प्रश्न—पात्रा रंगणा क नहीं।

उत्तर—नसीत उ: १४ पात्रा रि ३ पुंसली उपरान्त तेला दिक
न लगावणो अने तीन पुंसली उपरन्त लोद चुर्ण लगावणो वरज्यो
ते लेखे ३ पुंसली लगायां दोष नहीं सुरछाइ न रंगणा १२४

प्रश्न—वस्त्र रे तैल लगावणो क नहीं।

उत्तर—नसीत उ: १८ वस्त्र रा अधिकार कह्यो तिहां एहवु
पाठ छे जो चेवो पड़िग्गह गमनो सोचेव छेणंवि इम पात्ररो मोतिम
वस्त्ररो पिण कहिवों इण न्याय वस्त्ररे पिण ३ पुंसली लगायां तैला
दिक नो दोस नहीं वर्ण पात्रां रे लालकालो पिण लगावे पात्र रे
रङ्गण न वरजा ते माटे अने वस्त्रां रे आचारंग में रंगणा वरज्यो छे ते
माटे रंग न लगाणा पात्रा रे अलावे वर्ण चुर्ण कह्या ते वस्त्र रे
आगले वर्ण धवलोइज तथा घृत तैला दिक नो वर्ण लेवो पिण
कोयला दिकथी न रंगणा १२५

प्रश्न—गृहस्थ ने घरे देसणा देणी क नहीं।

उत्तर—अन्तर घरमें वेसणो नहीं १ सीलोक १ गांथा टीक थी अधिक न टाहणो अने अन्तर घर बिना उर्जागा वेठा तथा देसना दीध्यां दोस नही सूयगंडा ग अ: ९ गा २९ अर्थ में गृहस्थ ने घरे वेसी धर्म देसना देणी कह्यो तथा उपासग दसा अ: ७ भगवान पिंण सिकड़ाल पुत्र री हाटे आवीधर्म कह्यो २ तथा सूयगंडा ग श्रु: २ अ: ६ गां १७ १८ उपगार जाण तिहा भगवान जायने दु विध धर्म कहै ३ तथा पुष्फाया उपागी अ ४ सूभद्रारे घरे आर्य्या गोचरी गइ तिहां बिचत्र प्रकारे धर्म कह्यो ४ तथा पुष्फाया उपागी अ: ४ सोमासाहनी नेपिंण तेहने वरो खेण आर्य्या बिचित्र धर्म कह्यो ५ तथा ज्ञाता अ: १४ पोटल रे घरे आर्य्या गोचरी में विचित्र धर्म कह्यो ६ तथा ज्ञाता अ: १६ कह्यो सूकमालिका रे घरे आवी देसना दिधी ७ तथा उतराध्येन अ: २४ कह्यो जय घोष मुनि बिजयं घोष रे यज्ञा ने पाड़े आवी समझायों ८ तथा दसवी कालिक अ: ५ गा: ८२ गोचरी गया तिहां निर दोष जागा देखो अज्ञा मांगो आहार करवो कह्यो अने अंतर घर ते रसोडा दिक घर छे तिहां वेसणो नही १२६

प्रश्न—भगवती श: ८ उ: ९ नाम साता वेदनी रा प्रश्न मे जहसतमसये पुसम उद्देसए पाप मे भोलावण की उदे सानी छे।

उत्तर—सात मास तक रा छठा उदे सा में दुषमा दुखम आरा नो वीस्तार छे तीण उदेसे साता वेदनो रो प्रश्न छे तेहनो भोलावण छे ते माटे सातमा सतक रा दुषम उदेसो छठो उदेसा मे कह्या तिम इहां कहवु पिंण सातमा सतक रा दसमा उदेसा रो भोलावन नही १२७

प्रश्न—परमाणु रो वर्ण गंधरस फरस फिरे क नही।

उत्तर—भगवती श: ३ परमाणु ने द्रव्य थकी सासतो कह्यो वर्ण गंध रस फरस आश्री असासतो कह्यो इहां केइ कहै वर्णादिक

पलटो जाय कोइ कहै मुल वर्णादिक न पलटे अने वर्णा दिक में जाय मिले ते आश्री वर्णादिक पजवा असासता कह्या निश्चय बात केवलि जाणे १२८

प्रश्न—नमोबभए लिविए एहनो अर्थ सूं।

उत्तर—१८ लिप ब्राह्मी ने ऋषभ देवजी सिखावी ते ऋषभ देवने ब्राह्मी लिप कही जे तथा जिम अनुयोग द्वारे लिख भाव नयरा धणी पाथो कारण वाला रे उपयोगने पाथी पाथी कही तिम लिप करने वाला भगवान रा उपयोग ने भाव लिप कहीजे ते ऋषभ देव ने नमस्कार कियो अने द्रव्य लिप ने नमस्कार करे तो कुरांण पुरांण किब वेद तिख मन्त्र तन्त्र जन्त्र कोक २९ पाप सास्त्र द्रव्य लिप वन्दनीक हुवे ते वंदनीक ता एक एक भाव श्रुत रा दसांगीज छे ते माटे द्रव्य लिप ने निमस्कार न करवो १२९

प्रश्न—साठ नाम दया रा कह्या तेह में पुजा कही ते सूं।

उत्तर—ए पुजा नो अर्थ इम कीयो छे भव थकी देव नो पुजुवो ते पूया जिम कल्याण १ मङ्गल २ शुचि ३ पविन्न ४ यग्या ५ ए पिण दयारा नाम छे ते भाव कलयाण १ भावे मङ्गल २ भावे शुचि ३ भावे पवित्र ४ भावे यग्य छे ५ तिम पुया कही ते पिण भावे पुजा छे इम होज छे १३०

प्रश्न—कीतय, वन्दिय, महिया, ऐहनो अर्थ सूं।

उत्तर—कितीय ते गुण ग्राम कह्या वन्दीय ते काय जोगे वन्द्या नमस्कार कह्यो महिया ते मन योगे करी धाया ए तिहु योगे करी ने अर्थ भासे छे अने ए लोगस तो च्यारे तीर्थ ने कहिवो अने लोगस ना करता गणधर छे तेहने सचित त्रिविध निषेध छे ते माटे महिया शब्द पुष्पा दिके-करि पूज्या इम अर्थ भासे नहीं अने वृती कार तो इम कह्यो जे पाठ मूल तो कितिय, बन्दिय, महिया, एहवो पाठ छे अने पाठान्तरे मया शब्द रे टीकांणे महिया पाठ छे

ते मह्वीया कहिता तली न पणे करी ध्यान रूपे पूजी इम ध्यावे छ सचित वस्तु विरती तो ग्रहैं नहीं अने लोगस तो साधु पिण कहै तिवारे साधु ने महिया सब्दे फुल पूजा किम ठहरी ततलीन भाव पणे उत्कृष्ट भाव तो सर्व ने करीवुते माटे महिया ते फुल पूजा नथी १३१

प्रश्न—सूयगडाङ्ग अ: १८ संबुंड अणगार रैईरीया वहि क्रिया लागती कही तिहां छेहडे ए पाठ छे एवं खलु तस्स तप्पतियं साव तिस हज्जन्ति एहनो अर्थ स्युं।

उत्तर—इहां तेरे क्रिया में सावद्यं तिरो अर्थ सवद्य इम नहीं एवं खलु० निसचे ईतस्स० ते वितरागरे तथ्य ते आश्री सावद्य तो कहतां कर्म बंधे इम अर्थ कियो वारे क्रिया ठांमे पाप कर्म तेरमी क्रिया रे ठामे पुन्य कर्म बन्धे ए सावद्यं ति पाठरो अर्थ छे पिण पापरो हेतु सावज तेहनोकथन नहीं जिम साधव, वरदांम, प्रभास, ए ३ तीर्थ कह्या पिण ४ तीर्थ में नहीं तिम सावद्यं ति कहतां कर्म वन्धे ते धातु जणाय छे पिण सावज निरवद्य रो कथन ने सावद्य नहीं दीच्या लीधो जब सर्व सावज त्याग्यो तो केवली रे सावज किहां थी रह्यो १३२

प्रश्न—दस वरसां पछे भगवती भणवी व्यावहार उ: १० कह्यो तो धनो ९ मासे ११ अङ्ग भण्यो ते किम।

उत्तर—वीर नो अज्ञाइं दोष नहीं ते ठाणे आगम व्यवहार प्रवर्त्ततो सूत्र व्यवहार रो कांम नहीं व्यवहार उ: १० तथा ठाणा-गठा ५ कह्यो जिवार आ गम व्यवहार ह्वै तिवार आगम व्यवहार थापवो अने आगम व्यवहार न ह्वै तिवारे सूत्र व्यवहार थापवो इम कह्यूं ते माटे केवलि आदेले दोष नहीं १३३

प्रश्न—चैत्य कने आलोवणा करणी कही ते कुण।

उत्तर—व्यवहार उ: १ आचार्य्या दिक जंव पच्छ कडा श्रावक

पासे आलोवणा करणी कही एतला रो जोग न मिले तो गम्यं भावीयाए चेइयाइं कहता सम्यग भावित चेत्य पासे आलोवणां करणी कही तिहां टीका में चेत्य यच्च नी प्रतीमा कही छे ते यच्च भगवत नी तीर्थङ्कर नी सेवा करता छता थांने प्रायश्चित देता देष ति माटे ते प्रायश्चित रो जांण छे ते पासे आलोवणा करणी सूल् अर्थ ते ए कियो ते मोलतो अटकाय नहीं ते सम्मंभावियाए चेइ-याए एह नो अर्थ सूं इम कयुं गम्य क भावित ते जिन वचन वासीत अन्त करण एहवा देवता कने आलोवणा करणी कही ए पिण ए पाठनो अर्थ जिन प्रतीमा तो अधिकाई रो अर्थ कीयो जे ते यच्चसे जो न मिले तो जिन प्रतिमा आगे आलोवणा करणी कही ते संभ-वती दीसे नहीं प्रथम तो एहनो पाठ नथी टीका कार पिण संमे भावियाइं चेईयाई एहनो अर्थ यच्च कियो पिण जिन प्रतिमा न कियो यच्च ने अभावे जिन प्रतिमा कही ते भणीए मिले नही जिन प्रतिमा प्रायश्चित देई सूध किम करे यच्च तो प्रायश्चित देइ सुद्ध करे प्रायश्चित रो जाण छे ते भणी यच्चनो अर्थ संभवे तथा चेत्य पासे ज्ञानवन्त पास आलोवणा सम्भवे छे १३४

प्रश्न—द्रोपदी जिन प्रतिमा आगे नीमोच्छुणं गुणो क नहीं।

उत्तर—ज्ञातारी टीका में कह्यो किणहीक वाचनातो नमो-च्छुण पाठ छे अने किण ही वाचन में देखी ने प्रणाम नमस्कार कियो एतलुं ज छे पिण नमोथुणो नथी एहवुं टीका में पिण कह्यो छे १३५

प्रश्न—दसा श्रुत स्कन्धः ४ अः ४ मैं पडिमा धारी बोहार करतां सूर्य्य आथमें तिहां रहै त्या जलं सिवा थल शिवा ए पाठ कह्यो तेहनो अर्थ सूं।

उत्तर—जलदो तो जल दोस अर्घ ने पिछे जल सीते ज्वाज्वल पमांन सूर्य्य छे ते रहै एतले त्रीजी पोरसी उलंघी चोथी पोरसी इं

सूर्य्य सीतल थयो तांई व्यापी पिण सूर्य्यजाज्वला साम छे ते सथला दिक ने विखे रहै हवुं सम्भवे छे १३६

प्रश्न—उतराध्र्ययन अ: १० कह्यो पञ्चीन्द्री लगता भव ७।८ करे ते किम।

उत्तर—ए तीरयञ्च पञ्चेन्द्री आश्री कह्यो दिसे छे प्रथवीया दिक थी चोरन्द्री तांई तो पहिला कह्या अने देव नारकी नो कथन जुओ आगलो कहस्ये अने मनुष्य पणो दुरलभ वतावे छे ते भणी ८।७ भव कह्या ते तीर्थं पञ्चेन्द्री रा अधिक आउषा आश्री जणाय छे टीका में पिण इम हिज कह्यो छे १३७

प्रश्न—पणवणा पद १७ फुस माण १ अफुस माण गती २ ते केहने कहीजे।

उत्तर—अफुस माण गती जे सम श्रेणी अने जे ठामें रह्यो हो तो जेतला आकास प्रदेस फरस्या हूंता अने तिहां थी गति करे तेतला आकास परदेस फरस्यो हूंतो चले ते अफुस माण गती अने फुसमाण ते नव नवा अकाश प्रदेस फरसे उछा अधिका फरसे ते फुस माण गति सिद्ध नो अफुस माण गति छे दुहउ खुहानइ ते कुण वाहु ना अन्तर में ठांमें विग्रह गति करे फर्शीं ते दुहउ खुहा विहु देसे आकास प्रदेस फरसे छे ते माटे १३८

प्रश्न—जघन स्थिति नी वेन्द्री या दिक में ज्ञान पावे क नहीं।

उत्तर—पणवणा पद ५ कह्यो जघन्य स्थिति नी वेन्द्री तेन्द्री चोन्द्री पञ्चेन्द्री तीर्य्यञ्च मिनुष्य में ज्ञान नथी जघन्य थिति काल में समदृष्टी न उपजे ते माटे १३९

प्रश्न—जघन्य मती ज्ञानी तीर्य्यञ्च मनुष्य में ज्ञान केतला!

उत्तर—पणवणा पद ५ दोय ज्ञान कह्या आवध मन पर्या न पावे १४०

प्रश्न—जघन्य आवधि ज्ञानी मनुष्य में ज्ञान केतला।

उत्तर—पणवणा पद ५ उतकृष्टा ४ ग्यान पावे इम ही जघन्य आवधि ज्ञानी में पिण कहवी १४१

प्रश्न—सिद्धा ने साधिह अपद्यवसिए कहणा के अणादि ए अपद्यवसी ए कहणा।

उत्तर—उतराध्येयन अ: ३६ घणा काल रा सिद्धां रे नाय अणादि ए अपद्यवसिए थोड़ा कालरा सिद्धा आस्री सादिए अपद्यवसिए एवं २ भेद कह्या १४२

प्रश्न—दस हजार बरस थिति वाला देवता में केतली लेस्या।

उत्तर—उतराधेन अ: ३६ क्रष्ण तथा तेजु कहिजे छे एकदेवता में द्रव्य लेस्या १ पावे १४३

प्रश्न—नारकी देवता में भाव लेस्या केतला।

उत्तर—उतराधेन अ: ३४ टीका में छे लेस्या कही छे १४४

प्रश्न—सूख विपाकीया में मोक्ष केतला जासी केतला गया।

उत्तर—प्रथम तीन अने दसमो ए च्यारे ठांमे तो सिभ्भाहति पाठ छे ते माटे सिभ्भा से मोक्ष जासे पिण गया नहीं तिम कप वड़िया पदम आदि १० देवलोक गया माहा विदेह में मोक्ष जासी तिहां सिभ्भंहती पाठ छे तिम इहां पिण सिभ्भंहति पाठ छे अने ४।५।६।७।८।९ ए छे ठांमें सिद्धे गाठ छे ते माटे ए छे जणा सिद्ध थया मोक्ष पोहता १४५

प्रश्न—भरथने पहिला चारित्र आयो केवल उपनो।

उत्तर—जंबू द्वीप पणती में कह्यो भरतजी ७७ लाख पूर्व कुंवर पदे रह्या एक हाजार वर्ष मंडलीक राजा पणे सहस वर्ष उणो छे लाख पूर्व माहाराज पद भोगव्यो ८३ लाख पूर्व ग्रहस्थावासे रह्या देस उणो १ लाख पूर्व केवल पर्यायपाली अने संपूर्ण १ लाख पूर्व चारित्र पर्याय इणन्याय पहिला चारित्र आयो पछ केवल उपनो १४६

प्रश्न—मोरा देवी ने चारित्र किहां कह्यो ।

उत्तर—ठाणांग ठा: ४ उ: १ में कह्यो मोरा देवी अलप थोड़ो काल चारित्र पालो सोमोच्च पोंहता १४७

प्रश्न—शीत उष्ण २ स्निग्ध, लुख, ४ ए च्यार फरस सुलसा सूक्ष्म छे अनन्त प्रदेसोया खंध मांहि वादर पुण किमनिपजे ।

उत्तर—लुखा फरसनो वह्लल ताइ कर्गे हपरष री फरस नोपजे ४ ए ४ फरस करो वादर पण नुोपजे ए वृद्ध वर्णा तो १४८

प्रश्न—पाछला पोहर री पिंड लेहणो वे घड़ि होज थाकतां कइ स्थापेते किम ।

उत्तर—वे घडि दिन थाकतां पड़ि लेहण वस्त्रा दिक नो तो सूत्रा में कह्यो नथो सिभ्का नो उचारा दिक नो जोगा नो कह्यो छे सिभ्क तुपडिलेहए सिभ्क कहतां सिंभ्कानो लं कहतां पद पुरणे पड़ि लिहण इहां लु पद पुरणे टीका में दोपमा पिण कह्यो अने कणिही असूद्ध टिवा में लु कहता वस्त्रा दिक कह्यो ते विरुद्ध छे टीका में नहीं तो टवा में किहांथी आयो ए वीसमा अध्येयन में अभीग्र धारी रा कथन में पिण चौथो पोहर लागां पहिला पड़लेहन करणो पछे संथारा करे इम टीका में छे अने पाट में तो चोथे पोहर में पड़ि लेहण रो सेजरो कथन न कह्यो अनें आवसग अ: ४ दोय काल री पड़िलेहण साधु न कह्यो ते लेषे चौथा पोहर मे मन माने तिवारे करो अने पहले पोहर मे पहिलो चोथा भाग मते साधु ने पड़िलेहण कह्यो अने तेहने अपेक्षाय और साधुने पिण १ महुर्त म इ पड़िलेहण जीतव्यवहार अग्नि अहसे कह्यो तो ते प्रमाणे करणो १४९ .

प्रश्न—पांदुगमन संथारे वाले री सार संभाल व्यायावच और साधु करे के नहीं ।

उत्तर—ज्ञाता अ: १ कह्यो मेघ मुनि पादु गमन संथारो कीयो

तेहनी वेयावच आगला पणे थिवरां कोधी चाली छेते माटे वेयावचरो आगार अनुमोदना मेघ मुणीदरे हुंती १५०

प्रश्न—छलाति छल योग किण ने कह्यो जे।

उत्तर—चंद पणती।

श्री

॥ अथ अंणुकंपा री चोपाई प्रारम्भ ॥

॥ दोहा ॥ पोते हणावे नहीं ॥ पर जीवां रा प्राण ॥ हणे तिण ने भलो जाणे नहीं ॥ ए नव कोटी पचखाण ॥ १ ॥ अभय दान दया कही ॥ श्री जिन आगम मांह ॥ ती पिण ध्यंघ उठावियो ॥ जैनी नाम धराय ॥ २ ॥ त्यां अभय दान नहीं ओलख्यो ॥ दयारी खबर न काय ॥ भोला लोगां आगले ॥ कूडा चोचि लगाय ॥३॥ कहै साधु वचावे जीवने ॥ ओराभ न कहै तुं बचाय ॥ लो जाणे बचिया थका ॥ पिण पूछ्या पलटे जाय ॥ ४ ॥

ढाल १ पहलि ॥ चतुर नर छोड़ो कुँगरु नी संग ॥ (ए देसी) इण साधां रे भेषमेंजी बोले एहवि वाय ॥ म्हे पीयर छा छे कायना जी ॥ जीव बचाया जाय ॥ चतुर नर समझे ज्ञांन बिचार ॥ १ ॥ एहवि करे परुपना जी पिण बोले बंध न होय ॥ पलट जाय पूछ्या थका ॥ ते भोला ने खबर न कोय ॥ च: ॥ २ ॥ पेट दुखे सो श्रावका जी ॥ जुदा होवे जीव काय ॥ साध आया तिण अवसरे जी ॥ हाथ फेर्यां सुखथाय ॥ च: ॥ ३ ॥ साधु पधारय दिखने जी ॥ गिरस्त बोल्या वाय ॥ थे हाथ फेरो पेट ऊपरें ॥ सो श्रावक जीव जाय ॥ च: ॥ ४ ॥ जद कहै हाथ न फेरणो जी ॥ साधा ने कल्पे नांह येकहता जीव बचावण ॥- अवे बोले ने बदलो काय ॥ च: ॥ ५ ॥ गोसाला ने वीर बचांवयो जी ॥ तिण में काह्यो छे धर्म ॥ सो श्रावक नई बचावथा॥ ज्या री सरधा रो निकल्यो भर्म॥च:॥६॥गोसाले रे कारणे जी ॥ लबध फोडि जगनाथ ॥ सो श्रावक मरता देखने ॥

थे कायन फेरी हाथ ॥च:॥ ७ ॥ धर्म कह्यो भगवत ने ॥ तो पोते काय छोड़ी रीत ॥ सो श्रावक नहीं बचावया ॥ त्यारी कूण मानसी प्रतित ॥ चं ॥ ८ ॥ गोसाला ने बचावया में ॥ धर्म कह्यो साक्षात ॥ सो श्रावक मरता देखने थे कायन फेरो हाथ ॥ च: ॥९॥ इम कह्यां जाब न उपजे कूडो करे वकबाय ॥ हिवे साध कहे तुमे सांभालो जी ॥ गोसाला रा न्याव ॥ च: ॥ १० ॥ साधां ने लबध न फोरेणी जी ॥ सुत्र भगोति मांह ॥ पिणमोह कर्म बस रागथी ॥ तिण सु लियो गोसाला ने बंचाय ॥ च: ॥ ११ ॥ छे लेस्या हुंती जद वीर में जी ॥ हुंता आठुइं कर्म छद्मस्थ चुक्या तीण समेजी ॥ मूर्ष था पे धर्म ॥ च: ॥ १२ ॥ छदमस्थ चूक पड्यो तीको जी ॥ मूढे श्राणे वोल पिण निरबद कोयम जांणज्यो जी ॥ अवाल होयारी पोल ॥ च: ॥ १३ ॥ ज्युं आणांद श्रावक ने घरेजी ॥ गोतम बोल्या कूर परियाा छदमस्थ चूकमे ॥ सुध होय गया वीर हजुर ॥च:॥ १४ ॥ ईम अवस उदे मोह आवियोजी ॥ नहो टाल सक्या जगनाथ ॥ एतो न्याय न जाणयो जी ॥ ज्यारे मांह सुल मिथ्यात ॥ च: ॥ १५ ॥ गोसाला नें नहि बचावता ॥ तोघटतो अछेरो एक॥ निश्चै हुण हार टले नइ ॥ थे समजो आंण ववेक ॥ च: १६ ॥ गोसालाने वचाविया ॥ तो बधयो घणो मिथ्यात ॥ लोहो-गण कीयो भगवंत नो॥ वले दोय साधारो घात ॥ च: ॥ १७ ॥ गोसाला ने बचावया मे धर्मजाणे जी साम ॥ दोय साध वचावत अपणा ॥ वले ओईज करता काम ॥ च: ॥ १८ ॥ गोसाला ने बचाया में ॥ धर्म जाणे जिणराय ॥ तो दोय साधन राख्यअपणा ॥ ओ किण बिध मिलसी न्याय ॥ च: ॥ १९ ॥ जगत ने मरता देषने जी ॥ आड़ा ने दोधा हाथ ॥ धर्म हुंतो तो आघोने काडता ॥ एतो तिरण तारण जगनाथ ॥ च: ॥ २० ॥ एह वो बिवरो साधवतावियो जी सुत्र भगोति मांह ॥ कोई कूबधो करे कदाग्रोजी ॥ सुबधी रे आवे हाथ ॥ च: ॥२१॥ कहे साधा रे म ख आगले ॥ पंछी परियो माहला-

थी आय ॥ तो मेलां ठीकाणी हाथसुं ॥ म्हारे दयारहे घटमांह ॥ च: ॥ २२ ॥ तपसी श्रावक उपासरे जी ॥ काउसग दीधो गय ॥ त्याने मृगी आयढेहपड्यो जी ॥ गावर भाजो जीव जाय ॥ च: ॥ २३॥ कोई ग्टस्त आयने ईम कहेजी ॥ थे मोटा छो मुनिराज ॥ वेहेठो न कीधा एहने ॥ ओ मरेछे गावर भाज ॥ च: ॥ २४ ॥ जद तो कहे म्हे साध छा जी ॥ श्रावक बेठ्यो करा केम ॥ माहरे काम कांइ ग्रस्त सुं जी ॥ बोले पाधरा एम ॥ च: ॥ २५ ॥ श्रावक बेगो करे नइ ॥ पंषी मेले माला रे मांह ॥ देखो पुरो अंधारो ऐहने ॥ ऐ चोडे भूल्या जाय ॥ च: ॥ २६ ॥ पंषी माला मांह मेलता जी ॥ संके नई मन मांह श्रावक ने बग्यो कियां में ॥ धर्म न सरधे काय ॥ च: ॥ २७ ॥ इतरी समज पडे नही त्यामें समकित पावे केम ॥ छकिया मोह मिथ्यात में ॥ बोले मतवाला जेम ॥ च: ॥ २८ ॥ कहे साधनऊंदर कुडावणी जी ॥ मिनकी पासे जाय ॥ श्रावक बिग्यो करे नई ॥ ओकिण बिध मिलसी न्याव ॥ च: ॥ २९ ॥ मूसादिक ने बचावता जी ॥ मिनकी नेदु:ख थाह ॥ श्रावक ने बेग्यो किया जी ॥ नही कीण रे-अंतराया च: ॥ ३० ॥ मूसादिकरि कारणे जा ॥ मिनकी न साडे डराय ॥ श्रावक मरे मूष आगले ॥ बेग्यो ने करे हाथ संभाय ॥ च: ॥ ३१ ॥ आ परतष वात मिले नइ जी ॥ तावडा छाहडी जेम ॥ जां ओ जीन मारग ओलष्यो ॥ त्यांरे हिरदे बेसे केम ॥ च: ॥ ३२ ॥ कहे लाय लागी तो ठाढा षोलने ॥ साध काढे उघाडी दुवार ॥ श्रावकने बग्यो करे नइ आ सरधा करे षुवार ॥ च: ॥ ३३ ॥ ढांढां दिका बे षोलता जो ॥ षप घणो छे तांह ॥ सो श्रावक हाथ फेस्या बचे ॥ त्यारी कायन आणे मन मांहे ॥च:॥ ३४ ॥ काहे ढांढा षोल बचवस्यां श्रावक रे न फेरां हाथ ॥ एह अज्ञानि जीवरी ॥ कोई मूरख माने वात ॥ च: ॥ ३५ ॥ कहे गाढा हेठे आवे डावरोतो ॥ साधा ने लेणे उगय ॥ श्रावक ने बेग्यो करे तो नही ॥ ओ उंधो पंथ ईण न्याव ॥

चः ॥ ३६ ॥ रित बरसाला रे समेंजो ॥ जिव घणाछे तांह ॥ लटाग जाया ने कातरा जो ॥ पडिया मारग माहि ॥ चः ॥ ३७ ॥ साधु वारे नीकल्या जो ॥ जीयरे मूकैपाय ॥ लारे ढांढादेष्या आवता ॥ पिण जीवा ने नले उगय ॥ चः ॥ ३८ ॥ जो बालक लेवे उठायने जो जीवा ने नले उगय तो उणरी सरधा रे लेषे ॥ उणरे दयानही घट मांह ॥ चः ॥ ३९ ॥ जो बालक लेवे उगयने ॥ ओर जीव देखा लेनाहि ॥ ईण सरधा रो करज्यो पारखा ॥ केई रेषे परो फंदमाहि ॥ चः ॥ ४० ॥ दुहा ।

बेंछे मरणो जीवणो ॥ तो धर्म तणो नहीं अंस ॥ ए अनकंपा किधा थका ॥ वधे कर्मनो बंस ॥ १ ॥ मोह अणकंपा जो करे ॥ तिण मे राग न द्वेष ॥ भोग वधे इन्द्रिय तणो ॥ अंतर ऊंडो देष ॥ २ ॥ दया अणकंपा आदरो ॥ तिंण आंतम आंणो ठाय ॥ मरतो देखो जगतने ॥ सोच फिकर नहि काय ॥ ३ ॥ कष्ट सह्या उपद्रव थी पाल्या व्रत रसाल ॥ मोह अणकंपा श्रावका ॥ त्यापिण दोधो टाल ॥ ४ ॥ काचा था ते चलगया ॥ होय गया चकना चूर ॥ सेंठा रह्या चलया नई ॥ त्याने विरवखाण्या सूर ॥ ढाल२जी ॥ (जीव मारे ते धर्म आछो नही एदेसी) चंपा नगरी नावाणया ॥ ज्हाज भरि समुद्र जायरे ॥ हिवे तिण अवसर एक देवता ॥ त्याने उपसग दोधो आयरे ॥ जीव मोह अणकंपा न आणये ॥ १ ॥ मिनका स्याल कांधे वेहसाणीया ॥ गले पहरि छे रूटमालरे ॥ लोहि राध सूंलोथ्यो सरिर नें ॥ हाथे खडग दिसे बिकरालरे ॥ जी ॥ २ ॥ लोक धड़धड़ लाग्या धुजवा ॥ उर देव रह्या मन ध्यायरे अरणक श्रावक डिगयो नहीं ॥ तिणे कावसग दिधो ठायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ तिण साधा री अणसण कियो धर्म ध्यान रह्यो चीत ध्यायरे ॥ सगला ने जाण्या डूबता ॥ मोह क्रुणा न आणो कायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ अरणक ने डुगाववा ॥ देव विध २ बोले बायरे ॥ तुं धर्म न छोडासी ॥

थारो ज्हाज डूबावु जल मांह रे॥ जो०॥ ५॥ उचि उपाड निचो नाखने॥ करसु सगला रो घात रे॥ कालो पिलो अमावस्या रा जण्या मांन रे तु अरणक वातरे॥ जो०॥ ६॥ ज्ञान दर्शण म्हारा वरतने॥ इणसे केधो विघन न थायरे॥ हु तो सेवक छु भगवान रो॥ मोने न सके देव डोगायरे॥ जो०॥ ७॥ लोक विल२ करता देखने॥ अरणक नो न बींगड्यो नूर रे॥ मोह कुरणा न आणो केहनो॥ देव उपसर्ग कीधो दुररे॥ जो०॥ ८॥ देव धन२ अरणक ने कहे॥ तुं तो जीवादीक नो जांण रे॥ सूधम सभा मधे ताहरा॥ ईन्द्र किधा वखांणरे॥ जो०॥ ९॥ अरणक श्रावक ना गुण देखने॥ एतो आया देवांरी दायरे॥ दोय कूंडल री जोड़ी आपने॥ देव आयो जिण दीस जाय रे॥ जो०॥ १०॥ नमि राय रिषी चारित लीयो॥ ते तो वागमें उतर्यो आयरे॥ इन्द्र आयो तीण ने परखवा॥ ते तो किण विध बोले बायरे॥ जो०॥ ११॥ थारी अगन करी मिथला बले एक तास्यू साहमो जोयरे॥ अंतेउर बलता मेलसो॥ आतो बात सीरे नहीं तोयरे॥ जो०॥ १२॥ सूष बपरायो सारा लोकमें॥ बिलषा देण्या पुत्र रलरे॥ ज्यो तुं दया पालणंने उठयो॥ तो तुं करने यारा जतनरे॥ जो०॥ १३॥ नमी कहे वसू जीवूंसुखे ह्मारो पल पल सफलो जायरे॥ आतो मिथला नगरी दाझतां॥ ह्मारो वले नई तिल मातरे॥ जो १४॥ ह्मारो हरष नइ मीथला बलि या नहीं सोग लिगार रे॥ मैंतो सावज जांण त्यागो तिका रहि॥ ब लि न बचावे अंणगाररे॥ जो०॥ १५॥ नमि राय रखि आंणी नहिं॥ मोह अंणकम्पा री वातरे॥ सम भाव राषो मूगत गया॥ करी आठ क्रमा री घातरे॥ जो०॥ १६॥ ओ तो केसव केरो बन्धवो॥ ओतो नाम गजसुक मालरे॥ तिणदिष्या लेइ काउसग कियो॥ सोमल आयो तिंण काल रे॥ जो०॥ १७॥ माथे पाल बांधो माटी तंणी॥ मांहि

घाल्या लाल अङ्गार रे ॥ कष्ट सह्यो वेदना अति घणी ॥ नेम करुणा न आंणी लिगार रे ॥ जी० ॥ १८ ॥ श्री नेम जीणेसर जांणता होसी गजसूक मालरी घात रे ॥ पहिला अंणकम्पा आंणी नई ॥ ओर साध न मेल्या साथ रे ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्री वीर जीणंद चो वीसमा ॥ जिण कलपी मोटा अंणगार रे ॥ ज्यां ने देव मिनख त्रजंचना ॥ उपसर्ग उपना अपार रे ॥ जी० ॥ २० ॥ सङ्गम देवता भगवान ने ॥ दुख दीधां अनेक प्रकार रे ॥ अनारज लोका विरने ॥ स्वाना दिक दीधा लार रे ॥ जी० ॥ २१ ॥ चोसठ इंद्र मह्नोछव आविया ॥ दिख्यारे दीन भेला होयरे ॥ पिण कष्ट परो श्रीवीर ने ॥ न आया उपसर्ग टालण कोय रे ॥ जी० ॥ २२ ॥ दुख देता देखी भगवानने ॥ अलघा न कीधा आयरे ॥ समदिष्टी देव हुंतां घणा ॥ पण छोड़ावणरी न काढि बाय रे ॥ जी० ॥ २३ ॥ देवा जाण्यों श्री वर्द्धमान रे ॥ उदे आयो दीसे छे कर्म्मरे ॥ अणकम्पा आंणी बिचमें पड्या ॥ ओतो जिणां भाख्यो नहि धर्म्म रे ॥ जी० ॥ २४ ॥ धर्म्म हुंतो तो आधो न काढता ॥ बले बीरने दुखया जांण रे ॥ परिसा देण आया ते हने ॥ देव अलघा करता तांण रे ॥जी०॥ २५ ॥ आतो मछ गलागल मंड रहि ॥ सारा दिप समूंद्रा माह्नरे ॥ भगवंत काहता जो इन्द्रने थाडा में देता मिटाय रे ॥ जी० ॥ २६ ॥ पड़ति जाणे अन्तराय तो ॥ अचित खवाडत पुर रे ॥ एहवि सक्ति घणी छ इन्द्रनी, तिण थी कर्म न हुवे दुर रे ॥ जी० ॥ २७ ॥ चूलणी पीयाने पोसा मधे ॥ देव दिधा छे दुख आयरे ॥ कुण कुण हवाल तिण में कीया ॥ ते सांभलज्यो चीत ल्यायरे ॥ जी० ॥ २८ ॥ तीन बेटा रा नव सूला कीया ॥ तिंण र मुहडा आगे ल्यय रे ॥ तेल उकाल ने मांह तल्या ॥ बल बलता सूं छीट कायरे ॥ जी० ॥ २९ ॥ सम परिनामि वेदना ॥ खमि जाणे आपणां संच्या कर्म रे ॥ करुणा न भाणी अङ्ग जातरी ॥ तिंण छोड्यो नहो जिणं धर्म रे ॥ जी० ॥ ३० ॥ मति मारण री

कह्यो नहि ॥ ते तो सावज जाणी बायरो ॥ कुरणा न आणी मरता देखने ॥ बेठां रह्यो धर्म ध्यान माइरि ॥जी०॥३१॥ देव कहे तुं धर्म न छोड़सी थारे देव गुरुसम छे मायरे ॥ तिंण ने मारुं विध आगलो ॥ थारे मुहडा आगे ल्यायरो ॥ जी० ॥ ३२ ॥ जद तु प्रत ध्यान ध्यायनें ॥ पड़सा माठो गत में जायरे ॥ ईम सूणने चूलणी पिया चल गयो ॥ माने राखण रे उपाय रे ।। जी० ॥ ३३ ॥ ओ तो पूरख अनारज कहे जीसो ॥ जाल राख्युंज्यु नकरे घातरे। ओतो भद्र बचावंण उटियो ॥ ईण रे थांभो आयो हाथरे ॥ जी० ॥ ३४ ॥ अनकंपा आणी जनानि तणो ॥ तो भाग्या व्रत न नेमरे ॥ देखो मोह अणकंपा एहवि ॥ तिंण में धर्म कहिजे केमरे ॥ जी० ३५ ॥ चूलनी पोया ने सूरा दिवता ॥ चूल सतक न सकडाल रे ॥ यो थ्यारां रा मारणाढिकरा ॥ देवत लिया तेल उकाल रे ॥ जी० ३६ ॥ जीवेटा ने मरता देख ने ॥ न आणी मोह अणकम्पा एमरे उण्योमात लियादिक राखवा ॥ तो भाग्या व्रत ने नेमरे ॥ जी० ३७ ॥ मात लिया दिक ने राखतां (भाग्या व्रतन) बधया कर्म रे ॥ तो साध जाय बिच में पडया ॥ त्यांने किंण विध होसी धर्म रे ॥ जी० ३८ ॥ चेडा ने कूणकनि बारता निराबलका भगोति साख रे मानव मुवा दोय संग्राम में ॥ एक कोड ने असी लाखरे ॥ जी० ३९ ॥ भगबंत अणकंपा आणी नई ॥ पोते न गयाने मेल्या साध रे ॥ याने पहिला पिंण बरज्या नई ॥ ते तो जीवारी जाणी विराधरे ॥जी॥ ४० ॥ एमां तो दया अणकम्पा जांणता ॥ तो बीर बिष्टी ले जायरे ॥ सगला रे साता उपजावता ॥ एतो थोरा मे देता मिटाय रे ॥ जी० ४१ ॥ कूणक भगत भगवान रोचेडो बारे बार व्रत धाररे ॥ ईन्द्र भिर आयाते समकिति ॥ ते किंण बिध लोपता कार रे ॥ जी० ४२ ॥ ग्यान द्रसण चारित्र मांहलो ॥ किणरे बधतो जाणो उपाय रे ॥ करे अणकंपा तब जीवरी ॥ बीर

बीगत बूलाया जायरे।। जी० ४३ ।। समदपाल सूखा मे जिल रह्यो ॥ संसार विषे सूख लाग रे ॥ तिंण चोरने मरतो देखने ॥ उपनो उतकृष्टो परम बेराग्य रे ॥ जी० ४४ ॥ चारित्र लिया कर्म काटवा ॥ जाणि मोख तणो उपाय रे॥ करुणा न आणी चोर री ॥ छुडावण री न काढी बाय रे ॥ जी० ४५ ॥ साध श्रावक नि एक रीत छे ॥ तुमे जोवो सूत्र री न्यावरे।। देखो अंतर माह विचार ने ।। कुडि काय करो बकबाय रे ।। जी० ४५ ।।

दुहा ।। अणकंपा ने आदरि ।। कीजो घणा जतन जिंनवर न धर्म मांहलि ॥ समकित पाय रतन १ ।। गाय भेंस आक थोर नो ।। ऐ च्यारू ही दुध ।। ज्युं अणकंपा जाणज्यो ।। मन में अणे सूध ॥ २ ॥ आक दुध पीधा थका ।। जुदा होवे जीव काय ज्युं सावज अणकंपा किया ॥ पाप कर्म बंधाय ३ ।। भोले ही मत भुलज्यो ।। अणकम्पा रे नाम ।। कीजो अंतर परिखा ।। ज्युं सीजे आत्म काज ।। ४ ।। अणकंपा ने आगन्या ।। तिर्थंकर नी होय ॥ सावज निरवज उलखें ।। तेतो विरला जोय ।। ५ ।।

॥ ढाल २ ॥ धिग धिग छे नागश्रीब्राह्मणी ने (ए देसी) मेघ कूमर हाथी रा भवमें ।। जिन भावी दया दिल आणी ।। ऊंचो पग राख्यो सूसलो न मरयो ।। आकरणी श्रीवीर बखाणी ।। आ अणकंपा श्रीजीन आगन्या में ।। १ ।। कष्ट सह्यो तिण पाप सू डरते ।। ॥ मंन दिढ सेंठी राषी तिण काया ॥ बलता जीव दावा नल देषी ॥ सुंढ स्यु गिरगिर बारेन लाया ॥ आ० जि० २ ॥ परत संसार की यो तिंण ठामें ॥ उपन्यो श्रेणक रे घर आई ॥ भगवंत आल दिष्या लीधी ॥ पहेला अधेन गिनाता मांहि ॥ आ० जी० ३॥ मांडलो एक जोजन कीधो ॥ घण जीव बचिया तिहां आई ॥ तिंण बचिया री धर्म न चाल्यो ॥ समकित आया बिना समजन काई ॥ आ० सा० ४॥ नेम कुमर परणोजन चाल्या ॥ पस पंषी देष दया दिल आंणी ॥

इसडो काम सिरे नहीं मुजने ॥ म्हारे काज मरे बहु प्राणी ॥ आ० जि० ५ ॥ परणीजण सुं परनामि फिरया ॥ राजमति ने उभी छिटकाई ॥ कर्म तणे बन्ध सूं नेम डरया ॥ तोडी आठ भवांरी सगाई ॥ आ० जी० ६ ॥ आप सुं मरता जीव जाणीने ॥ कडवा तूंवा री कीधो आहरो ॥ कोडया री अणकंपा आणी ॥ धंन२ धर्म रुची अणगारो ॥ आ० जि० ७ ॥ फोरवि लब्धि अणकंपा आणी ॥ गोसालाने वीर बंचायो ॥ छे लेस्या छदमस्थज हुंता मोह कर्म वस रागज आयो ॥ अ० सा० ८ ॥ गोसाला असजती कूपात्र ॥ तिण ने साज सरिररो दीनो धर्म जाणता तो जगत दुखी थो ॥ वले वीर ओकामकदे नहीं कीधी ॥ आ० सा० ९ ॥ तेजु लेस्या मेली गोसाले बाल्या ॥ दोय साध भस्म करी काया ॥ लब्ध धारी साधु हुंता घणा ॥ मोटा पुरुष त्यानि क्युं ने बचाया ॥ आ० सा० १० ॥ जिंण रिखिए अणकंपा कीधी ॥ रेणा देवी सामो तिण जोयो ॥ सेलष जष हेठे उताख्यो ॥ देवी आय तिंण षडगा मे पोयो ॥ आ० सा० ११ ॥ भगता हिरण गवेषी । सुलसा ॥ अणकंम्पा आंणी विलषी जाणी ॥ छव बेटा देवकी राजाया ॥ सुलसा रेघर मेल्या आंणी ॥ आ० सा० १२ ॥ जगनरे पाडे हरकेसी आया ॥ असणादिक त्याने नहीं दिधी ॥ जष देवता अणकंपा कीधी ॥ रुद्रवंमता ब्राह्मन कीधी ॥ आ० सा० १३ ॥ मेघ कूमर गर्भमांही हुंता ॥ सुखरे तांही कीया अनेक उपायो ॥ धारणी राणी अणकम्पा आणी ॥ मंनगमता असणादीक खायो ॥ आ० सा० १४ ॥ कृष्णजी नेम बांदन ने जाता । ऐक पूरुष ने दुखयो जांणी ॥ साजदीयो अणकंपा कीधी ॥ एक ईंट उठाय उनरे घरे आंणी ॥ आ० सा० १५ दुखिया दोरा दलद्रि देखी ॥ अणकपा उणरी कृण आणी गाजर मुलादिक सचित षुवावे ॥ वले पावे अणगल पाणी ॥ आ० सा० १६ ॥ आप सुं मरता जीव जाणीने ॥ टल जाय साध संकोची काया ॥ आपहणे

नहीं पाप सु ं डरता ॥ अंणकंपा आण मेले नहि छाया ॥ आ० सा० १७ ॥ उपाडी जो मेले छाया ॥ असयंती रोबियावञ्च लागी ॥ आ अणकंपा साध करेतो ॥ त्यारा पाचु ंहि म्हाव्रत भागे ॥ आ० सा० १८ ॥ सो साध बिषम काले उनाले ॥ पाणो बीना जुदा हुवे जीव-काया ॥ अणकंपा आणो असुध बहरावे ॥ छकाया रा पोहर साध बचाया ॥ आ: सा: ॥ १९ गज सुखमाल ने नेमरी आज्ञा ॥ कावसग कीयो मसाण में जाई ॥ सोमल आय षीरा सिर ठविया ॥ सीस न धुणो दया दिल आई ॥ आ: सा: २० व्याध अनेक कोढ़ा दिक सुनने ॥ तिण उपर बेद चलाईने आवे ॥ अणकम्पा आणो साजो कीधो ॥ गोली चुरण देरोग गमावे ॥ आ: सा: २१ लबधधारी राखेला दिक थी ॥ सोलाहो रोग सरीर सु ंजावे ॥ बले जाणे ईन रोग सूं साध मरसी अणकम्पा आणी नहीं रोग गमावे ॥ आ: सा: २२ जो अणकम्पा साधु करेतो ॥ उपदेस दे वैराग चढ़ावे ॥ चोखे चित पेली हाथ जोड़े तो ॥ च्यारं ही आहार रा त्याग करावे ॥ आ: सा: २३ ॥ ग्रहसथ भुलो उजाड बन में ॥ अटवीने बले उजड जावे ॥ अणकम्पा जाणी साधमार्ग बतावे। तो च्यार महीना री चारत जावे ॥ २४ आ: ॥ अटवो में बले अत्यन्त दु:खी देखो ॥ च्यार ही सरणा साध दिरावे मारग पुछे तो मुंन ज साझे बोले तो भिन भिन धर्म सुणावे ॥ २५ ॥ आ: ।

दुहा: दया दया सहु को कहे ॥ ते दया धर्म छे ठीक ॥ दया ओलख ने पालसी ॥ त्याने मुगत नजीक ॥ १ ॥ दया तो पहलो व्रत छे ॥ साध श्रावक री धर्म ॥ पाप रुके जासूं आवता ॥ नवा न लागे कर्म ॥ २ छ कायहणी हणावे नहीं ॥ हंणता भलो न जाणे ताय ॥ मन वचन काया करी ॥ एदया कही जिणराय ॥ ३ ॥ दया चोखे चित पालाया ॥ तिरे घोर रुद्र संसार ॥ आहोज दया पर-पता भले जीव उतरे पार ॥ ४ ॥ पिण ऐक नाम दया लोकीकरो

तिगरा भेद अनेक ॥ त्यांमे भेख धारी भुला घणा सूण जो आण विवेक ॥ ५ ॥

ढाल ४ थी दरवे लाय लागो भावे लाय लागो दरव छे काठी न भावे कूवो ॥ ऐ भेद न जाणे मूलमिथ्याती ॥ संसार नें मुगतरी मारग जुवो ॥ १ ॥ भेखधर भुला रो निरणो कीजे ॥ कोई दरवे लाय वलता न राषे दरवे कुवो पड़ता ने निकाल बचायो ॥ ऐतो उपकार कियो ईण भवरो ॥ विवेक विकल त्याने खवरन कायो ॥ भे: २ ॥ घटमे ज्ञान घालि ने पाप पचखावे तिण पडतो राख्यो भव कुवामायो ॥ भावे लायसूं वलता न काडे रिखेसर ॥ ते पिण गहिला भेद न पायो: ॥ भे: २ ॥ सूने चित सूत्र वांचे मिथ्याती ॥ द्रव ने भावरा नहो नवेड़ा ॥ परवार सहित कुपंथ मे पड़िया ॥ त्यां नरका सूं सनसुख दीया डेरा ॥ भे: ४ ॥ ग्रसथ न ओषध देईन ॥ अनेक उपाय कर जीव वचायो ऐ संसार तणो उपकार कियो में ॥ मुगतरो मारग सुध वतायो ॥ भे: ५ ॥ करे जंतर मंतर झाडा झटपटा ॥ सरपा दिकरो झैरदेवे उतारो ॥ काडे डाकण साकण भुत जषा दिक ॥ तिण में धर्म कहे सांग धारी ॥भे:॥ ६ ॥ ऐहवा किरतव सावज जाणी त्रिविध त्रिविधे साधा त्यागज कीधो ॥ भेख धारी लोकासूं मोलने जीव जीवावणरी सरणो लीधो: भे: ७ ॥ ऐ जीव वचावण रो मुन्नसूं कहे ॥ पिंण काम पड़या बोले फिरती वांणी ॥ भोला ने भर्म में पाड विगोवा ॥ ते पण डुबेछे कर कर ताणी ॥ भे: ८ ॥ कीडी मांका दिक लटा गजया ॥ ढांढा रें पग हेठे चीथ्या जावे ॥ भेखधारी कहे म्हें जीव वचावाता तो ॥ चुण चुण जीवा ने कायले उठावे भे: ९ ॥ जो आखो चमासो उपदेस देवे तो ॥ दस वीस जीवा ने दोरा समझावे ॥ जो उण्ण करे च्यार महीना रेमाहे ॥ तो लाषा गमे जीव तेहिज बचावे ॥ भे: १० ॥ मो घर रे आंतरे कोई लेवे संथारो तो तुरत आलस छोड़ टेवण

जावे ॥ सो पगलां गयां जीव लाखां बचेछे ॥ त्यां जीवाने जाय क्युँ न जीवावें ॥भे: ११ ॥ घर छोड़ ती जाणे सो कोसां उपरे ॥ तो सांग पहिरावण सताव सूं जावे ॥ ऐक कोस गया जीव कोड़ा बंचेछ ॥ त्यां जीवने जाय क्यु नहीं बचावे ॥ भे: १२ जवतो कहे म्हारो कल्प नहीं छे ॥ म्हेतो संसार सुं हुवा न्यारा ॥ कवहि कहे म्हे जीव जीवाया ॥ ए वांणो न बोले एकणधारा ॥ भे: १३ ॥ साधू तो आपणा व्रत राषने ॥ त्रिविधे त्रिविधे जीव नहीं सतावे ॥ संसार मांही जीव पच रह्या छे ॥ तिंण सुं तो हुवा साध निरदावे ॥ भे: १४ ॥ जीवणो मरणो त्यांरो नचावे ॥ समझता देखेतो साध समझावे ॥ ज्ञानादिक घटमांही घाले ॥ मूगत नगरने संत पहुचावे ॥ भे: १५ ॥ गिरस्तरे पग हेठे जीव आवे ॥ तो भेषधांरी कहे म्हे तुरत बतावा ॥ ते पिंण जीव वचावंण काजे ॥ सरवही जीवांरो जीवणो चावां ॥ भे: १६ ॥ इवरति जीवांरो जीवणो चावे ॥ तिंण धर्म रो प्रमार्थ नहि पायो ॥ सरधा इग्नाना रि पग२ भटके ॥ ते न्याव सुणज्यो भवियण चितल्यायो ॥ भे: १७ ॥ गिरस्त रेतेल जाय सुंण फूटगा ॥ कीड़ारां दर मांहि रेला आवे ॥ बिच मे जीव आवे तिंण सु बहुता ॥ तेल चूहो चूहो अगन में जावे ॥ भे: १८ ॥ जो अगन .उठे तो लागी छे ॥ तस थावर जीव माख्या जावे ॥ गिरस्तरा पग हेठे जीव बतावे ॥ ते तेल ढुलते बासंण क्युंन बतावे ॥ भे: १९ ॥ पग सुं मरता जीव वतावे ॥ तेल सुं मरता जीव नही बतावे ॥ आषोटी सरधा उघाडी दीसे ॥ पंण अभ्यन्तर अधारो नजरन आवे ॥ भे: २० ॥ भेख धारी विहार करता मारग में ॥ त्याने श्रावक स्हामा मिलया आयो ॥ मारग छोड़ ने उजर पडिया ॥ तिस थावर जीवाने चीथता जायो ॥ भे: २१ ॥ श्रावका ने उजाडमें पड़िया जाणे ॥ तस थावर जीवाने भरता देखे ॥ गिरस्त रे पग हेठे जीव बतावे ॥ तोमारग बतावणो ईण लेखे ॥ भे: २२ ॥

एक पग हेठे जीव बतावे अज्ञानी ॥ ठालेबादला अम्बर जिम गाजे ॥ श्रावक उजाड मेंमारग पूछे ॥ जद मु'नसाजे बोल ता काये लाजे ॥ भे० २३ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे ॥ त्यामे थोड़ासा जीवाने बचता जाणे ॥ श्रावकाने उभाड़ सूं मार्ग घाल्या ॥ घण जीव बचे तम थावर प्राणी ॥ भे० २४ ॥ थोडी दुर बताया थोड़ो धर्म हुवे ॥ तो घणी दुर बताया घणो धर्म जाणो ॥ घणी दुररो नांम लिया बक उठे ॥ तेषोटी सरधा रा एहनाणो ॥ भे० २५ ॥ कोई श्रांधो पूर्षं गामान्तर जातां ॥ श्रांष विना जीव किण वीध जीवे ॥ कोडी माकी दिक चीथतो जावे ॥ तसथावर जीवांरा घमसांण हुवे ॥ भे० २६ ॥ भेख धारी 'सहजे साथे ही जात ॥ श्रांधारा पग सूं मरता जीवाने देखे ॥ ए पग२ जोवाने नहीं बतावे ॥ तो खोटी सरधा जांणज्यो इण लेषे '। भे० २७ ॥ त्याने बताय२ ने जीव बचावणा ॥ पूंज२ ने करना दुरो ॥ इण धर्म करसूं तो पोतेज लाजे ॥ तो बोजो कूण मानसी उमत कुरो ॥ भे० २८ ॥ ईला सूं लिया सहीत श्राटो छे ॥ गिरस्तरे डुले मार्ग मायो ॥ श्रा तपति रेत उनाले री तिण में ॥ पड़त प्रमांण होय जुदा जीव कायो ॥ भे० २९ ॥ गिरस्त नई देखे श्राटो डुलतो ॥ ते भेख धारा रि नेजरा श्रावे ॥ ए पग हेठे जीव बतावे तो श्राटो डुलतां जीव क्यूं न बतावे ॥ भे० ३० ॥ इत्यादिक गिरस्त रे श्रनेक उपद सूं ॥ तिस थावर जीव मूवा नमरसी ॥ एने पग हेठे जीव बतावे ॥ त्याने सगलो होठोड़ बतावना पडसी ॥ भे० ३१ ॥ किण हिक ठोर जीव बचावे किणहीक संके मन श्रांणे ॥ समज पख्या बीन सरधा परुपे ॥ पीपल बांधी मुर्ख जिम तांणे ॥ भे० ३२ ॥ पग२ जावक श्रटकता देषे ॥ कदा सरब श्रारेहुवा श्राम्रानी थुलो ॥ कूर कपट करि मत कूसले राखण ने ॥ पिण बूधवंत बातन माने भुलो ॥ भे० ३३ ॥ गिरस्थ रो नवंछणो जीवणो मरणो ॥ वांछे

जावतायां लागी पाप कर्मो॥ रागद्वेष रहित रहणी निरदावे॥ एहवी निकेवल श्रो जिन धर्मो॥ श्रा० ३४॥ समासरण एक योजन मांडला में॥ नरनारया ना वृन्द आवे न जावे॥ अरिहन्त आगल वाणी सूणवा॥ भगवन्त भिन भिन धर्म सुणावे॥ श्रा० ३५॥ चार कोस माहीं तस थावर हुंता मरगया जीव उराणे आया॥ नर-नारया पग सूं विन उपयोगतापण भगवत कठे ही न दीसे बताया॥ श्रा० ३६॥ नन्दण मणिहार डेडको हुयने॥ वीरबांदण जाता मार्ग मायो॥ तिणने चौथमारयो सेणकन बछेरे॥ वीर साध साह मा मेल क्यांन वचायो॥ श्रा० ३७॥ गिरस्थ रापग हेठे जीव आवे तो साधन बचावणी कठे ही न चाली॥ भारी कर्मा लोगाने मोष्ट करणने॥ श्रो पिण घोचो कुगरां घाल्यो॥ श्रा० ३८॥ साधां रा नाम तो अलगो मेलो॥ सरावकारो चरचा मुख लावे॥ साध साध सूं मरता जीव बतावे॥ ज्युं श्रावक श्रावक न जीव बतावे॥ श्रा: ३९॥ सिधान्त रा वल बिन बोले अज्ञानी॥ श्रावकांरे सम्भोग साध ज्युं बतायो॥ ए गालारां गोला मुख सूं चलावे॥ ते न्याय सूण जो भविपण चितल्यायो॥ श्रा: ४०॥ साध सूं मरता जीव देखिने॥ संभोगी साधु देखी जो नहीं बतावे॥ ते अरिहन्त री आ-गन्या लोपावे॥ पाप लागे ने विराधक थावे॥ श्रा: ४१॥ साधु तो साधु न जीव बतावे॥ ते पोता रा पाप टालणरे काजे श्रावक श्रावक न जीव नहीं बतावे॥ तो कीसो पाप लागे कीसो व्रत भाजे॥ श्रा: ४२॥ श्रावक श्रावकने न बताया पाप लाग काहे॥ श्रो भेख धरा मत काड्यो कूरो॥ श्रावकांरे सम्भोग साधा ज्युं हुवे तो॥ पग पग बांध जाय पापरो पुरो॥ श्रा: ४३॥ पाट वा जोटा दिक साध वारे मेलो॥ ठरडे मातरा दिक कारज जावे॥ लारे श्रोर साधु त्यांने भोजता देखे॥ जोएे लेन आवे तो प्राछित आवे॥ श्रा: ४४॥ गरढा गिलाण साध त्यांने भोजता देखे॥ जो

ओ लेन ओजिण आज्ञा बारे ॥ माह मोहणी कर्म तणी बन्ध पाडे ए लोक न परलोक दोनु बीगारे ॥ भ: ४५ ॥ आहार पाणी साधु बेहरी न आणे ॥ सभोगी साधु बांट देवारी रीती ॥ आप आणी जो ईध को लेवे तो ॥ अदत लागे नजाय परतीतो ॥ आ: ४५ ॥ इत्यादिक साधां साधांर ॥ अनेक बोलारा ॥ सम्भोगी साधा सूं न कीया अठके मोखो ॥ आहीज बोलारा श्रावक श्रावकार न करे तो मुलन लागे टोखो ॥ श्र: ४७ ॥ श्रावका रा सम्भोग साधा ज्यूं होवे तो ॥ श्रावक श्रावक नपिण इंण विध करणी ॥ ए सरधारो निरणोन काढे अज्ञानी ॥ त्या बिटल थई लियो लोकारो सरणी ॥ आ: ४८ ॥ जो ए श्रावक श्रावका रा नहीं करे तो ॥ भेख धारा रे लेखे भागल जाणो ॥ श्रावका रे सम्भोग साधा ज्यूं परुव्यो ॥ ते परगया मुर्ख उलटी ताणो ॥ आ: ४९ ॥ श्रावका रे सम्भोग तो श्रावका सूं छे ॥ वले मिथ्याति सूं राखे मेलपो ॥ त्यारा सम्भोग तो इव्रतमें छे ॥ तिके त्याग क्रिया सूं टलसो पापो ॥ आ: ५० ॥ त्यां सूं सरिर दिक नो सम्भोग टालिनो ने ॥ ज्ञाना दिकरो राखे मेलापो उपदेस देइ निरदावे रहणो ॥ पेलो समजीने टालो तो टलसी पापो ॥ आ: ५१ ॥ लाय लागी जोग्रस्त देखे ॥ सो तुरत बुझावे छे कायाने मारो ए सावज-किरतब लोक करे छे ॥ तिण म ही धर्म कहे सांग धारी ॥ आ: ५२ ॥ कहे अगन पाणी छकाय मुई त्यांरो ॥ थोड़ो सो पाप कहे हुवे-कानी ॥ ओर जीव वंच्यात्यारो धर्म बतावे ॥ लाय वुझावणरो करे सानी ॥ अ: ५३ ॥ ए धर्म न पाप री मिश्र परूपे ॥ टोटा विच लाभ घणी बतावे ॥ त्यां भेख धारा री परतीत आवे ॥ तोलाय बुझावण दोड्या दोड्या जावे ॥ आ: ५४ ॥ ए हवो दया बतावे लोका ने ॥ छकाया रा पीयर नाम धरावो ॥ मिश्र धर्म कहे तेउ काय न मारा ॥ पिण प्रश्न पुछे ज्यारो जावन् आवे ॥ आ: ५५ ॥ छकाय-जोवा री हिंसा कीधां ॥ ओर जीव बंचे त्यांरो कह

छे धर्मों ॥ ए सरधा सूण सूणने बुधवंता ॥ खोटा नाणा जिम का-
टियो धर्मों ॥ आ: ५६ ॥ कोई नित नित पांचसो जीवान मारे ॥
कोई करे कसाई अनारज कर्मों ॥ जो मोक्ष धर्म हुवे अगन बुझायां
॥ तांईणने हो मारया हुवे मोक्षधर्मों ॥ आ: ५७ ॥ लाय सूं बलता
जीव जाणी ने छकाय हणी नेलाय बुझाई ॥ जो कसाई सूं मरता
जीवा ने देखी ॥ कोई जीव बचावण हणे कसाई ॥ आ: ५८ ॥ जो
लाय बुझां जीव बचे तो ॥ कसाई ने मारयां बेचे घणा प्राणी ॥
लाय बुझाया कसाई न मारया दोयारी लेखो सरीखो जाणी ॥
आ: ५९ ॥ वले सिंघ सरपा दिक चीता बघेरा दुष्टी जीव करे
परघातां ॥ मोक्ष धर्म छ लाय बुझायां तो याने हो मारया
घणारे साता ॥ आ: ६० ॥

॥ दुहा ॥ मछ गला गल लोक में ॥ सबला निवला में खाय ॥
तिण में धर्म परु पीयो ॥ कुगरां कुबध चलाय ॥ १ ॥ मुला जमी
कन्द खुवारयां ॥ कह छ मोक्ष धर्म ॥ आसरधा पाखण्डरी आ-
दरयां ॥ जडा बन्धसी कर्म ॥ २ ॥ मुला खवाया पाणी पाविया ॥
सचतादिक दरव अनेक खाधां खवाड़ायां भलो जाणया ॥ या तो-
नारी विध एक ॥ ३ ॥ एतो न्याय न जाणयो उजर पड़िया अजाण ॥
करण जोग विगराविया ॥ ऐ मिथ्या दिष्टी अनाण ॥ ४ ॥ कुहेत
लगावे जीवने हिंसा धर्म भाखन्त ॥ हिवे सात दृष्टान्त साधु कहे ॥
ते सूण जो कर खन्त ॥ ५ ॥ मुला पाणी अगन नो ॥ चोथो हो कारो
जाण ॥ त्रस जीव कलेवर तणो सातमो मिनष वखाण ॥ ६ ॥ त्यांमें
तीन दृष्टन्त करडा कह्या ते जाणे अज्ञानी विरुध ॥ सम दृष्टि जिण
धर्म ओलख्यो ते न्याय सूजाणे सूध ॥ ७ ॥ केसी कुमर दिष्टन्त
करड़ा कह्या ॥ तो छोड़ी परदेसी रुढ़ ॥ न्याय मेल हुवो समकती
॥ झगड़ो झाले ते मूढ ॥ ८ ॥ जिणरी बुध छ निरमली ॥ ते लेस
न्याय बीचार ॥ सुण भारी कर्मा जीवड़ा ॥ तो लड़वा नछे त्यार ॥

९॥ होवे मात दृष्टान्त धरसू वले॥ आगे घणा विस्तार॥ भिन्न भिन्न सविपण सामलो अन्तर आख उघाव॥ १०॥

॥ ढाल पांचमी॥ (वीर सुणो मोरी वीनती एदेश)॥

मुलां खवाया मिश्र कहे॥ लगावे हो षोटो दिष्टन्त ऐह॥ पापलागा मुलां तणो॥ धर्म हुवो हो खाधां बचीया तेह॥ भवियण जिण धर्म ओलखो॥१॥ कहे कुवा बावडी खिणाविया॥ हिंसा हुई हो तिण रालाग्या कर्म॥ लोक पीये कुशल रहे साता पामी हो तिण रों हुवो धर्म॥ भ० २॥ इम कहे मिश्र परूपता॥ नहि संके हो करता बकवाय॥ ईण सरधारो प्रश्न पूछिया॥ जाबन आवे हो जब लोक लगाय॥ भ० ३॥ हिवे सात दिष्टन्त री थापना॥ त्यांरी सुणज्यो हो विवरा सुध बात॥ निरणो कीजो घट भीतरे॥ बुध वन्ता हो छोड़ो ने पषपात॥ भ० ४॥ सो मिनषा ने मरता राषिया॥ मूला गाजर हो जमी कान्द षुवाय॥ वले मरता राष यां सो मानवी॥ काचो पाणी हि त्याने अंणगल पाय॥ भ० ५॥ पोह माह महिने ठारो पड़े॥ तिण काले हो वाजे सीतल बाय॥ अचेत पड्या सो मानवी॥ मरता राष्या हो त्याने अगन लगाय॥ भ० ६॥ पेट दुखे तलफल करे॥ जीव दोरा हो करे हाय विरांय॥ साता बपरांई सो जणा मरता राष्या हो त्याने होको पाय॥ भ० ७॥ सो जणा दुरभष कालमें अंन बिना हो मरे उपर मांय॥ कोईक मारे तसकायने॥ सो जणाने हो मरता राष्या जीमाय॥ भ० ८॥ किणहीक काले अन्न बिना सो जणा रा हो जुदा होवे जीव काय॥ सेजे कलेवर सुवो परियो॥ कूसले राष्याहो त्याने एह पुलाय॥ भ० ९॥ वले मरता देषो सो रोगला॥ ससाई बीण हो ते साजा न थाय॥ कोई ससाई कर एक मिनष री॥ सो जणारे हो साता किधी बचाय॥ भ० १०॥ जमीकंद षुवाया पांणी दीयां॥ त्यामे थापो हो पाप ने धर्म दोय॥ तो अगन लगाय

होको पाविया ॥ इत्यादिक हो सगलो मिश्र होय ॥ भ० ११ ॥ जो धर्म कहे बचिया तको ॥ हिंसा तिणंरा हो लाग्या जाणे कर्म ॥ तो सातूं ई सरधा लेखवे ॥ कहदेणा हो सगले पाप न धर्म ॥ भ० १२ ॥ जो साता में मिश्र कहे नहीं ॥ तो कीम आवे हो ईण बोल्या री प्रतित ॥ आपथापि आप उथापे ॥ तो कूंण मांनेहो आश्रधा विप्रित ॥ भ० १३ ॥ जो सातुं हो ने मिश्र कहिये ॥ तो नहो लागेहो गमतो लोकामें बात ॥ मिलतो कह्या बिन तेहनो ॥ कूंण करे हो कुडारी पक्षपात ॥भ० १४॥ एक दोय बोलां में मिश्र कहे॥ सगलामें हो कहता लाजे मूढ़ ॥ एवो उलटो पन्थ झाल यो॥ त्यारे केड़े हो बुड़े कर कर रूड ॥ भ० १५॥ सो सो मिनष सगले बच्या ॥ थोड़ो घणो होई सगले घात ॥ जो धर्म बरोबर न लेखवे ॥ तो उथपगई हो मूला पाणी री बात ॥ भ० १६ ॥ बात उथपती जाणने ॥ कद कहेदे हो सगल पाप न धर्म ॥ पिण समदृष्टि सरधे नहीं ॥ एकतो काढ्यो ही खोटी सरधा रो भर्म ॥ भ० १७ ॥ असजतो मरणो जीवणो वंछा ॥ कोधा हो निसचे राग न धेख ॥ ओ धर्म नहीं जिण भाखीयो ॥ सांसो हुवे तो हो अंग उपंग देख ॥ भ० १८ ॥ काच तणा देषो मणकला ॥ अणसमज्या हो जाणे रत्न अमोल ॥ ते नीजरे पद्या समझानी ने ॥ करदीना हो त्यारो कोड्या मोल ॥ भ० १९ ॥ मुला खुवाया मिश्र कहे ॥ आ सरधा हो काच मीणया समाण ॥ तो पिणडारी तन अमोल ज्यूं ॥ न्याय न सुजेहोचाला कर्मा रा जांण ॥ भ० २० ॥ जीवमारे झुठ बोलने ॥ चोरी करने हो परजीव बचाय ॥ वले करे अकारज एहवो ॥ मरता राखेहो मैथुन सेवाय ॥ भ० २१ ॥ धन दे राखे पर प्राणने क्रोधा दिक हो अठारई सेवाय ॥ एहोज कामां पोते करो ॥ पर जीवाने हो मरता राखे ताह ॥ भ० २२ ॥ हिंसा करी जीव राखोया ॥ तिणमें होसी हो धर्म न पाप दोय ॥ तो इम अठारे हो जाणज्यो ॥ ए चर्चा मां

बिरलो समझे कोय ॥ भ० २३ ॥ जो एकणमें मीश्र कहे ॥ सतरे मे हो भाखा बोले ओर ॥ उंधी सरधा रो न्याय मीले नहीं ॥ जद उलटी हो कर उठे झोर ॥ भ० २४ ॥ जीव मारी जीव राखणा ॥ सुतर में हो नहीं भगवंत वेण ॥ उंधो पन्थ कुगरां चलावियो ॥ शुध न सुझे हो फुटा अन्तर नेण ॥ भ० २५ ॥ कोई जीवता मिनष त्रिजञ्च ना ॥ होम करे जुध हो जीतण संग्राम ॥ एकतोओ पाप मोटको ॥ जीव होम्या हो दुजो सावज काम.॥ भ० २६ ॥ कोई ना हर कसाई ने मारने ॥ मरता राख्या हो घणा जीव अनेक ॥ जो गिणे टोयां ने मारया ॥ त्यारी बिगरी सरधा बात बिवेक ॥ भ० २७ ॥ पहिला कहता हो जीव बचावणो ॥ तिण लेखे हो बोल्ये सुत्र न काय ॥ जिव बचिया रो धर्म गणे नहो ॥ खिण थापे हो षिण में फेर जाय ॥ भ० २८ ॥ देवल धजा तेहनो परे ॥ फिरता बोले हो न रहे ऐकण ठाम ॥ त्याने पाखंड़ी जिण कह्या ॥ जगड़ो उझो हो नहो चरचा रो काम ॥ भ० २९ ॥ जो एंकण में अधर्म कहे ॥ दुजा में हो कहे धर्म न पाप ॥ ऐ लेखो कीया तोल पड़े ॥ त्यारे घट में हो खोटी सरधा री थाप ॥ भ० ३० ॥ वले सरणों लेई सेणक तणो ॥ सावज बोले हो तिण री खबरन काय ॥ जोरी दावे पेलां ने बरजोया ॥ तिण मांहे हो जीण धर्म बताय ॥ भ० ३१ ॥ कहे सेणक परहो बजावयो ॥ हणोमति हो फेरी नगरीमें आण ॥ जिण मोख हेते धर्म जाणयो ॥ एहवो भाखे हो मीथ्या वले मिथ्या दृष्टि अजाण ॥भ० ३२॥ राय सेणक थो समकिती ॥ धर्म विना हो किम करसी एकाम ईम कहो कहो भोला लोकने ॥ फंद में नाखे हो सेणकरो ले नाम ॥ भ० ३३॥ सेणक ने करे मुख आगलो ॥ आमो सामोहो मांड खाचा ताण ॥ आप छांदे उटका मेलता ॥ कुण पालेहों श्रीजिनवर आण ॥ भ० ३४॥ समद्रिष्टी तणो कोई नामले ॥ भरमावेहो अण समझ अजाण ॥ ते सक्राई द समद्रिष्टी देवता॥ जिण भगता हो ऐका अत-

तारी जाण ॥भ० ३५॥ ते भीर आया कोणक तणी ॥ जुध कीधो हो तिण सावज जाण ॥ ऐक कोड असी लाख उपरे ॥ मिनषां रा होकी धा घमसाण ॥ भ० ३६॥ सेणक राय परहो फेरा वीयो ॥ ऐतो जाणो हो मोटा राजा री रीत ॥ भगवंत न सारायो तेहने ॥ तो किम आवे हो तिणरी प्रतीत ॥ भ० ३७ ॥ परोहो फिराओ हणी मतो ईलरी छेहो सुलमे बात ॥ कोई धर्म कहे सेणक तणो ॥ तेतो बोले हो चोड़े जुठ मिथ्यत ॥ भ० ३८॥ लोकां सुं मिलती बात जाणनें ॥ कर रह्योहो कुढी बकबाय ॥ मिश्र कहे ते पण अटकला ॥ साच हुवेतो सुत्र में देवे बताय ॥ भ० ३९॥ एतो पुत्रा दिक जाया परणीया उछव दिक हो ओरी सीतला जाण ॥ एहवे कारण कोई उपने ॥ सेणक राजाहो फेरी नगरमें आण ॥ भ० ४० ॥ तेतो रुकाया नहीं कर्म आंवता ॥ नहीं कटयाहो तिणरा आगला कर्म ॥ वले नर्क जाता रह्यो-नहीं ॥ न सीखायो हो भगवंत ओधर्म ॥ भ० ४१॥ भगवंतते मोटा राजवी॥ प्रति बोध्या हो आपणा मारग ठाय॥साध श्रावक धर्म बताविध्यो ॥ ने सिषायो हो पर हो फेरणो ताय ॥ भ० ४२॥ तो सेणक सीष्यो कोण आगले भगवंत ने हो पुछरं साजे मून ॥ वले नजणावे अमना ॥ अग्या विना हो करणो जाणो जावुन ॥ भ० ४३ ॥ वासूदेव चक्रवृत मोटका त्यांरी बरते हो तीन छेषंडमें आंण ॥ जो परहो फेरया मूगते सिले ॥ तो कुंण काढेहो आगो जिन धर्मजांण ॥ भ० ४४ ॥ केई बिसन वाला मिनषने ॥ बिसन सातु हो बिना संनदे छुड़ाय जो ईण बिध जोन धर्म नीपजे ॥ तो छे षड बरजे आंण फिराय ॥भ० ४५॥ फल फूलादिक अनंत कायने ॥ हिंस्या दिक हो अठारे पाप जांण जोरी दावे पेईला ने मनेकीयो ॥ धर्म हुवे तो होफेरोछे षंडमे आंण ॥ भ० ४६॥ वले तिर्थंकर घरमें थकां ॥ त्यांमें हुता हो तिनग्यान बसेष ॥ वले हाल हुकम थो त्या न फेणोहो परहो सुतर देष ॥ भ० ४७॥ बलदेवादीक मोटा राजवी ॥ घरछोड़ी हो की-

या पाप रा पच षांण ॥ सेणक जिम परहो न फेरयो॥ जीरी दाबे हो न बरताइ आंण ॥ भ० ४८॥ ब्रमदत्त चक्रव्रत तेहने ॥ चित मुनी हो समजावंण आय ॥ साध श्रावकरो धर्म कह्यो ॥ परहा री हो न कहो अमना काय ॥ भ० ४९॥ बिसां भेदे रुके कर्म आवता ॥ बारे भेदे कटे आगला कर्म ॥ ऐ मोषरो मार्ग पाधरो ॥ छोड़ो मेलो हो सगला पाषंड धर्म भ० ५० ॥ दोय वेस्या कसाइ बाड़े गई ॥ करता देखी हो जीवारां संधार ॥ दोनु जण्या मतो करो ॥ मरता राख्या हो जीव दोय हजार ॥ भ० ५१ ॥ ऐक गहणो देई आपणो तिण छुडाया हो जीव ऐक हजार ॥ दुजी छुड़ाया ईण विधे ॥ एक दोय सूंहो चोथो आश्रव सेवाय ॥ भ० ५२ ॥ एकण ने पाषंडी मिश्र कहे ॥ दुजी ने हो पाप किण बोधहोय ॥ जीव बरोबर बचावया ॥ फेर पड़सी हो तेतो पाप में जोय ॥ भ० ५३ ॥ एकंण सेवायो आश्रव पांचमो तो उण दुजी हो चोथो आश्रव सेवाय ॥ फेर परपी तोई ते ईण पापमें ॥ धर्म होसी हो ते तो सरी षो थाय ॥ भ० ५४ ॥एकंण ने धर्म कहतां लाजे नई ॥ दुजी नहो कहता आने संक ॥ जब लोका सूंकरे लगावणो ॥ एहवा जाणो हो चोरा कुगरा डंक॥ भ० ५५ ॥ ऐक वेस्या सांवज कामो करो ॥ सेहस नाणो हो ले बलो घर मांह ॥ दुजी क्रतव करो आपणो ॥ मरतां राख्या हो सेंहस जीव छुडाय ॥ भ० ॥ ५६ ॥ धन आंण्यो षोठा क्रतव करो ॥ तिण रे लाग्या हो दोनेविध कर्म ॥ तो दुजी छुडाया हो तेहने ॥ उण लेषे हो हुवो पापन धर्म ॥ ५७ ॥ पाप गिने नहो पुन में ॥ जीव बचिया हो तिण री नगोणे धर्म ॥ पोते सरधा री खबर पोते नहो ॥ ताणां तांण हो बाधे भारो कर्म ॥ भ० ५८ ॥ ईणं प्रस्नोरो जाबन उपजे ॥ चरचा में हो अटके ठाम ठाम ॥ तो पंण नरणो करे नई ॥ बक उठ हो जीवा रोले नाम ॥ भ० ५९ ॥ जीव जीवे काल अनादरे मरे तीणरो हो परज्या पलटी जांण ॥ संबर निर्जरा तो न्यारा कह्या ते लेजावे हो

जीवने निरबांण ॥ भ० ६० ॥ पिरथी पाणी अगन बायरी ॥ बिन सपति हो छठी तस काय ॥ मोल सुकुडावे तेहने ॥ धर्म होसी हो ते तो सगलामें थाय ॥ भ० ६१ ॥ तसकाय छुडाया मे धर्म कहे ॥ पांच काय में हो बोले नहो निसंक ॥ भर्म मेपाड्या लोक ने ॥ त्यां लगाया हो मिथ्यात रा डंक ॥ भ० ६२ ॥ तिवधे छे काय हणवो नहो ॥ एहवि छे हो भगवंतरी बाय ॥ मोल लिया धर्म कहे मोखरो ॥ ऐ फंद मांड्यो कूगरा कूबध चलाया ॥ भ० ६३ ॥ देव गरु धर्म रत्न तीनु ॥ सुतर मे हो जीन भाष्या अमोल ॥ मोल लिया हो नइ निपजे ॥ सोचो सरधा हो आंख हियारी षोल ॥ भ: ६४ ॥ ज्ञान दर्सण चरित्र ने तप ॥ मोख जावा हो मार्ग छे च्यार ॥ त्याने भिन भिन आदरे ॥ साध पालें होते पामेभव पार ॥ भ० ६५ ॥

॥ दोहा ॥ अणकम्पा ऐ लोकनी ॥ कर्म तणो बन्ध होय ॥ ज्ञान दरसन चारित्र तप बीना ॥ धर्म म जाणो कोय १ जे अण-कम्पा साधु करे तो नवा न बंध्रे कर्म ॥ तिण मांहली श्रावक करे ॥ तो तिण ने पिण होसी धर्म ॥ २ ॥ साध श्रावक दोना तणो ॥ ऐक अणकम्पा जाण ॥ अमृत सहुने सारखो ॥ तिणरी म करो ताण ॥३॥ वरजी अणकम्पा साधने ॥ सूत्र रिदे सांष चित लगाई सांभलो ॥ ॥ श्री वीरगय छे भाख ॥ ४

(ढाल ॥ ६ ठी) होवे सांभलजो नरनार (ऐदेसी) डाभ मुंजा दिक नो डोरी ॥ बंधया करे हेला न सोरो ॥ सीत ताप करी ने दुखीया ॥ साता वांछे जाणे हुवा सूखया ॥ १ ॥ उणरी अणकम्पा आणे ॥ छोड़े छोड़ावे भला जाणे ॥ तिणन चोमासी प्राछित आवे ॥ धर्म जाणे तो समकीत जावे ॥ २ ॥ ईम बंधे बंधावे हुवे राजी ॥ त्यांरो संजमजावे भाजो ॥ एतो सावज कारज जांणो ॥ त्यांरा साध किया पचषाणे ॥ ३ ॥ जीवणो मरणो नहो चावे ॥ साधु क्या ने बंधावे छुडावे ॥ त्यारी लागी मु गत सू तालो ॥ तिका किणरी करे

रखवालो ॥४॥ गिरस्थ रे लागी लायो ॥ घरबारे नीकलीयोन जायो ॥ बलता जीव बिल बिल बोले ॥ साधु जाय किवार न खोले ॥५॥ दरबे भाव लाय लागी ॥ जिण थी कोई क हुवे बेरागी ॥ उणरी अणकम्पा आवे ॥ उपदेस देई समभावे ॥ ६ ॥ जनम मरण री लाय थी काढ़े ॥ उणरो काम सिराडे चाढे ॥ पकरावे ग्नांना दिकारी दोरी ॥ तिण थी कर्म आठे देतोरी ॥ ७ ॥ अणकम्पा कीया डंड आवे ॥ परमाथ बिरला पावे ॥ नसीतरे बारमो उदेसो ॥ जिण भाख्यो दयारो रेंसो ॥ ८ ॥ छोडै साध है सूत्र में चाल्यो ॥ ऐतो अरथ अण हुंतो घाल्यो ॥ भोला ने कुंगरा बहकाया ॥ कुडा कुडा अर्थ लगाया ॥ ८ ॥ सौंध बाधा दिक मंजारी ॥ हिंसक जीव देखे अपारी ॥ उणने मार कह्या हिंसा लागे ॥ पहीलो हीज माहाव्रत भागे ॥ १० ॥ मतमार कहे उणरो रागी ॥ तीजे करण हिंसा लागी ॥ सुगड़ाङ्ग छे तिणरी साषी ॥ श्री वीरगया छे भाषी ॥ ११ ॥ गीरस्थ री सरीर ममतामें ॥ साधु वेठा सुमता में ॥ रह्या धर्म सुकुल ध्यान धारी ॥ सुवा गया फिकर नही काई ॥ १२ ॥ ए लोगा परलोगा ॥ जीवणो मरणो कामभोगा ॥ एतो पाचुंही छे अतिचारो ॥ बंछा नहीं धरम लिगारो ॥ १३ ॥ आपणों बंछे तो ही पापो ॥ परनो कूण घाले सन्तापो ॥ घणी जीवणो बंछे अग्नानी ॥ सम भाव राखे ते सुग्नानी ॥ १४ ॥ बायरो विरषा सीत तापो ॥ रह्यो न रह्याचावे तो पापो ॥ राज बीरोध रेवे ते सूकालो ॥ उपदरब जावे ततकालो ॥ ॥ १५ ॥ सात बोलांरो श्रो बीसतारो ॥ ते एश्रीलषघा अणगारो ॥ घटमाही जो समता आवे ॥ हुवो न हुवो एको नईं चावे ॥ १६ ॥ ऐ कण रो देई चपेटी ॥ ऐकण रो उपद्रव मेटी ॥ एतो राग धेष रोचालो ॥ दंसमी कालक सम्भालो ॥ १७ ॥ साधु बेठा नावामांही आई ॥ नावडए न्याव चलाई ॥ न्यावा फंटी मांहे आवे पाणी ॥ साधु देषी लोगा नहीं जाणी ॥ १८ ॥ आप डुबे अनेरा प्राणी ॥ अण-

कम्या किण री नही आणी ॥ वतावे तो व्रता में भागी ॥ जीण री साषी आचारङ्गो ॥ १८ ॥ सानी कर साध बतावे ॥ लोग कुसले षेमे घर आवे ॥ डुबा पंण साध न चावे ॥ रह्याचावे तो तूरत बतावे ॥ २० ॥ मोनसाज रह्या ते सन्तो ॥ ते करे संसार नो अन्तो ॥ प्रणाम ज राषे सेंठा ॥ धर्म ध्यान में रह्या वेठा ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥ दुषिया देषी तावड़े ॥ जो नही मेले छाय ॥ साध श्रावक न गणे ते हने ॥ ए अणतीरथी नीवाया ॥१॥ मारयां मराया भलो जाणया ॥ तीनुं करणा पाप ॥ देखण वाला ने कहे ॥ खोटा कुगरा सन्ताप ॥ २ ॥ करमा करने जीवड़ा ॥ उपज न मरजाय ॥ असंयम जीतब तेहनो ॥ साधन करे उपाय ॥ ३ ॥ देख माहो माहो विख सन्ता ॥ अलगा करदे जाय ॥ ऐम कहे तिण उपरे ॥ साधबतावे न्याय ॥ ४ ।

(ढाल सातमी) नाड़ी भरयो हो डेडक मछला ॥ मांहि नीलण फुलण रो पुरहो । भविक जीन ॥ लट पुहरा आद जलसू ॥ तस थावर भरयो अपुरहो ॥ (करजो पारषाजिन धर्म री) ॥ १ ॥ सूलया धान तणो ढिगलो पड्यो ॥ मांहे लटा नईल्यां अथाय हो ॥ भ० ॥ सूल सूलिया ईंडा अती घणा ॥ तेतो काल बल करे तिण माय हो ॥ भ० कर ॥ २ ॥ गाडो भरियो जमीकंद सूं ॥ तिणमें जीव घण छ अतंत हो ॥ भ० ॥ च्यार पर्याये च्यार प्राणहे ॥ मारत्रा कष्ट कह्या भगवंत हो ॥ भ० का० ३ ॥ काचा पाणी तणा माटा भरत्रा ॥ घणा जीव के अणगल नीरहो ॥ भ० ॥ नीलण फुलण आद लटा घणी ॥ तिण में अनंत बताया वीरहो ॥ भ० कर० ॥ ४ ॥ खात भीनो उकरड़ी लटांधाणी ॥ गिड़ोलाने गधीय जाण हो ॥ भ० टरबल टरबल कर रह्या ॥ याने कर्मो नाख्या आणहो ॥ भ० ॥ कर ॥ ५ ॥ कोईक जागा में उदर घणा कोरे ॥ आमनि सामा अथाज हो ॥ भ० ॥ थोडी सो षरको सामले ॥ तो जाय दोसी दिस

भाग हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ गुल खांड आद मिष्टान में, जीव चिहुं दिस दोख्या जाय हो ॥ भ० ॥ माखी ने मांका फिर रह्या, ते तो हुव को माहो हो ॥ भ० का० ७ ॥ नाड़ो देखी ने आवे भैंसीया, धान ढूके हो बकरो आयहो ॥ भ० ॥ गाढे आयो बलद पाधरो, साटे आय उभी छ गायहो ॥ भ० का० ॥ ८ ॥ पंखी चुगे उकारड़ो उपरे उंदर पावे मिनका जाय हो ॥ भ० ॥ माखी ने मकोडो पकडले, साधु किणने बचावे, छुडाय हो ॥ भ० का० ॥ ९ ॥ भेंस्या हाकल्या नाडा मांहलो, तो सघलारे साता थाय हो ॥ भ० ॥ बकराने अलगो कीया थका, ईंडा दिक जाव बचजाय हो ॥ भ० ॥ का० ॥ १० ॥ थोडासा बलदाने हांकले, तो नमरे अनंती काय हो ॥ भ० ॥ का० ॥११॥ लट गीडोला दिक कुसले रहे, तो तेपंखी ने दियो उडाय हो ॥ भ० ॥ मिनको धकाल उदर बचाय ले, तो उंदर घर सोगन थाय हो ॥भ० ॥ का० ॥१२॥ थोड़ो सो मोको आघो पाछो कीयां, साखो नाषी उड जाय हो ॥ भ० ॥ साधांरे सगला सारखा, तेन पड़े बीच में जाय हो ॥भ०॥का०॥१३ मिन को धकाल उंदर बचाय ले, माखी राषे मांका न धकाय हो ॥भ०॥ ओर मरता देष राखे नहीं यांने चुक पड्यो ते बताय हो ॥ भ० का० ॥ १४ ॥ साघु पीयर बाजे छकायरा, ऐक छुड़ावे तसकाय हो० ॥भ०॥ पांच काय मरती देष राषे नही॥ तेपी यर किण विदथाय हो० ॥ भ० का० ॥ १५ ॥ रजो हरणो लेई ने उठिया ॥ जोरी दावे देवे छुड़ाय हो ॥ भ० ॥ ज्ञान दरसण चारित तप माहिलो ॥ यारे वंधीयो ते मोह बताय हो ॥ भ० का० ॥ १६ ॥ ज्ञान दरसण चारित तप बीना ॥ ओर मुगतरो नहो है उपाय हो ॥ भ० ॥ कोड्यामिल्यां उपगार संसारना तिण थी सूदगत किण विधथाय हो ॥भ० का०॥१७॥ जीतरा उपगार संसार रा ॥ तेतो स गला हो सावज जाण हो ॥ भ० श्रीजिणधर्म मांहो आवे नहो ते कुड़ीम करो ताण हो भ०॥का०॥१८॥ आज्ञानारी ज्ञानी कीया थका

डुवे निस्चे पेलारो उधार हो ॥भ०॥ कीधो मीथ्यातीरो समकती ॥ ते तो उताख्या भव पार हो० ॥ भ० ॥ क० ॥१९॥ कीधो असयंतीरो संयती ॥ ते तोसुगतरा दलाल हो ॥भ०॥ तप साकर पार उतास्यो ते मिव्या सर्वं ह्वाल हो० भ० ॥ क० ॥२०॥ ग्यान दरसण चारित तप तणो ॥ करे कोई उपकार हो० ॥भ०॥ आप तीरे पेला उधरे ॥ दोना रोखेवोपार हो० ॥भ० क० ॥२१॥ ऐचार उपगार छे मो टका तिण मे निस्चे जानो धर्म हो ॥भ०॥ षेष रह्या काम संसार रा ॥ तिण थी बंधता जाणो कर्म हो० ॥ भ० क० ॥ २२ ॥ दुहा० ॥ भेष धारी भुला थका, त्यारे दया नही घट माय ॥ हिंस्या धर्म परुपयो, बिन सूनरेन्याय ॥१॥ दयो दया मुख सुं करे ॥ पिण दयारो खबरन काय ॥ भोलान पडग्रा भर्म मे ॥ तेहणे जोव छकाय ॥२॥ हिंसा धर्म परुपता ॥ फिरता बोलेवेण ॥ पाप डूबे पनेराने डुवोवे ॥ त्यारा फुटा अंतर नेण ॥ ३ ॥ हिंसा धर्म परुपियो ॥ तिण सडुवा जीव घनेक ॥ ते षोटो सरधा परगट करुं समभो आण वीवेक ॥४॥

ढाल ॥ ८ ॥ श्रावक ने मांहो माही छे काइ षुवावे । ओउ होछकाय मारीने जीमावे ॥ ऐजीवहोंसा रो राहज षोटी ॥ तिण माहीं धर्म अनारज बतावे ॥ या हिंसाधर्मरो निरणो कीजो ॥ १ ॥ छकाय जीवारो तो घमसाण कीधो ॥ जीमाय कीयो उणने कर्मा सुंभारी ॥ दोना कानी जोयां दोसे दीवालो ॥ तिण मांहे धर्म कहे भेख धारी ॥ या० ॥२॥ छकाय जीवाने तो खाधां खवाया घरिहंत भगवन्त पाप बतावे ॥ ऐ बचन उथापो ने मिस्र परुपे तिण दुष्टीने दिल दया होन आव ॥ या० ३ ॥ रांक ने मार धीगाने पोषे ॥ आतो बातदीसे घणी घेरी ॥ ईण मांहो दुष्टी धर्म परुपे ॥ तोरांक जीवारा उठया बेरा ॥ या० ४ ॥ पाछल भव पाप उपाया तिणसुं हवा ऐकन्दरी पुन परवारी ॥ तिण रांक जोवारे असुभ उदेसुं ॥ लोका सह्तीतलाग उम्या भेष धारी ॥ ५ ॥ कृपा-

तर दान मैं पुन परुपे॥ तिनं सुंलोक हंणो जीवाने बसे षो॥ कूगरु एहव ाचाला चलावे॥ तीके भीष्टहुवा लेइ साधुरो भेषो॥या०॥ ६॥ पुछे तो कहे म्हेसुनजसाआ सान्नीकर जीव मरावण लाग्या॥ हेठलो श्रोवरो षेस अलगा होवे॥ त्याने व्रतबिहुणा कह्वीजे नागा॥या॥७॥ कोइ मालीरे श्रोड़े भुषो आय उभो॥ गाजर मुला षपोय षुवावे॥ एकांत पाप उधारो दिसे॥ तिण मांही मुरख धर्म बतावे॥या८॥ वेंगाण वालालोदीक अनेक निलोतरी॥ कोइ राधो पोषे परप्राणो॥ तिंण मांहो दुष्टी धर्म बतावे॥ तो दुरगत जावारा अहनाणो॥या॥ ९॥ षरच आघरनी ने भात वरोटी॥ अनेक आरम्भ कर न्यात जीमावे॥ एसब संसार तणा कीरतब छे तिण मांहो सुध धर्म बतावे॥या०॥१०॥ भेष धारी श्रावकाने सपातर थापे॥ तिणं ने नेत जीमाया कहे मोषरो धर्मा जननै सुत्र समतर ज्युंपर गमया॥होंस्या दिढाय बांधे सुढ कर्मों॥या० ११॥ कोई बिस पचीस श्रावकानेतरया॥ घरे जाय घर का नेधंधे लगावे कोई मुंग दले कोइ गोहुं पीसे॥ कोइ आगन सुंधुकोने चुलो फकावे॥या०॥१२॥ कोइ लुण पाणी घाली आटो जोलोवे। कोइ आदण देइ केरे चोषी दालो॥ कोइ रोटी तवे नाषे षोरांसे के। कोइ तरका राधा लेने ततकालो॥या०॥१३॥ छे काय जीवारी होंस्या करने। अनेक चीजा रांध कोधी रसालो॥ पछे दांतण करावे ने भांणे वेसाणे। वाजोटदेई उपर मेले थालो॥या०॥१४॥ पछे भोजन पुरसी ने भेला वेग्या। आप२ तणां पेट सगलाई भरया॥ भेषधारी सहित श्रावकाने पुछिजे॥ थामे कूण २ डुवाने कूण २ तिरया॥या॥ १५॥ जवजीमण वालाने तो पाप बतावे॥ होंस्या करण वालाने कहे पापी॥ जीमावण वालाने धर्म कहै छे॥ आ सरधा भेष धाऱ्या थापी॥या॥१५ जीमण वाला रेने होस्या वालारे॥ पापरोउतपत किणसूं चाली॥ बलेके काया रा जीव सुवा त्यारी॥ नेत जीमावण

वालो दलालो ॥ या ॥ १७ ॥ ईण पाप दलालो मैं धर्म परूपै ॥ पड़ गया मोह मीथ्यात अंधेरे ॥ ते परतक हींस्या धर्मि अनारज ॥ कोई बुडगया त्या कूगरा रे केरे ॥ या ॥ १८ ॥ श्रावकने नेत जीमावे तीण मैं ॥ धर्म कहे मुढ़ बिना वीचारो सुंपति वाधींने मीठा बोले ॥ पिण जीभवहे ज्युं तीषीतरवारी ॥या॥१९॥ किण जीव हण्या त्यांने संका आवे ॥ तो तुरत हणो सूण कूगरा रीवांणी ॥ पहलो हंस्या कीयो पछे धरम बतावे ॥ तो कुगरुबाणी जेहवी वेहती घाणी ॥ या०॥२०॥ किण रांक भिषारीने दान ऊद कीयो ॥ ऊद कीयो दान श्रावक ने दीरावे ॥ धनवंत धर्म लेवण लाग्या ॥ तीरांकारे हाथे कठे सुं आवे ॥ या० २१ ॥ लाडु घोपरा रोकडनांणो ॥ सानी कर सामग्री मैं दीरावे ॥ कूगरु एहवा चाला चलावे ॥ पेट भण्या जाणे पातरे आवे ॥ या० २२ ॥ गाय सुषी हुवा गरभ सुषीव्हे ॥ कूवे पाणी वहेतो ऊवाले आवे ॥ ईण दिष्टांते पेट काले भेवधारी ॥ आप तणी सामग्री मैं दीरावे ॥ या० २३ ॥ जददेवण वालाने तो धर्म कहे छे लेण वाला ने कहे पापज होसो ॥ तो धर्म करण ने मुढ़ अग्यानी ॥ सरब सामग्रीने काय ढबोवे ॥ या० २४ ॥ सरब सामग्री मैं पाप लगाया ॥ ते पिण होसी निश्चे पापांसु भारी ॥ साची सरधाने ऊधावोले ॥ तो बीकालाने गरु मिलया भेष धारी ॥ या २५ ॥ धर्म करे ओरा पाप लगाई ॥ ओ धर्म कहे मत जाण जो पुरो ॥ भारी करमा लोगारे असूभ ऊदेसुं ॥ भेष धारयाओ मत काव्यो कूरो ॥ यो० २६ ॥ कूपातर दानरो चिरचा करतां ॥ पड़मा धारी श्रावक ने मुष आणो भोला लोकांने भिष्ट करणने ॥ ते पिण भेद मिथ्याति ने जाणे ॥ या० २७ ॥ पढ़माधारी श्रावक वहरा ने आणे ॥ तिणने तो ऐकंत पाप बतावे ॥ दातारनें तो धर्म कहे पिण ॥ प्रश्न पुछ्यांरो जाबन आवे ॥ या० २८ ॥ पढमाधारी श्रावक ने पाप लग यो ॥ ते दातारने धर्म हुसी किण लेखे ॥ ईण ईवरत

सेवण ने दान दीयो छे।। तिण किरतब माहमो अज्ञानी न देखे।। या० २८ ॥ पढ़मा पढ़मा कर रह्या सुरख।। तेपढ़मा तो छे श्रीजिण जीरो धर्मो ॥ पढ़मा आदरतां आगार रह्यो त्यासूं ।। सेवा सेवाया सूंबांधसी कर्मो ।। या० ३० ॥

दुहा० जीव दया रेउ परे।। मुलगा तीन दमटांत ॥ आगी बीसतार करे जेतो ॥ तिसुण जो मन कर षंतू ।। ढाल ॥ ८ ॥ मो सहेल्यांहे बंधो रुडा साधुने ऐदेसी ऐक चोर चोरे धन पारको ।। चोरावे हो ते तो दूजो आगवाण ।। तीजो कोई करे अणमोदना ॥ या तीनारो हो षोटाक्तितब जाण ।। भवजीवा तुम जिण धर्म ओ लखो ॥ १ ॥ ऐक जीवहणे तस कायना ॥ हणावे हो दुजो परना प्राण ।। तीजा पंण भलों जाणे मारीया ।। ऐतीनुहो हो जीव हिंसक जाण ।। भ० ॥ २ ।। ऐक कुसील सेवे हरख्यो थको ।। सेवावे हो ते तो हुजो करण जोय ।। तीजो पण भलो जाणे सेवया ।। यां तीनारे कर्म तणो बंध होय ।। भ० ।। ३ ॥ यां सगलाई ने सतगुर मिल्या ॥ प्रतिबोधया हो आन्यामांग गय ।। होवे किण २ जीवाने साधां उधरया ।। तिणारो सूणजो निवरा सूधन्याय ।। भ० ।। ४ चोर हिंसक नेकुसलिया ।। यारे ताई हो साधा दीयो उपदेस ।। त्याने सावद्या निरवद कीया ।। ऐहवो छे हो जिण दया धर्म रेस ।। भ० ॥ ५ ॥ ज्ञान दरसण चारित्र तपतणो ।। साधा कीधो हो तिण थी उपगार ।। ऐतो तरण तारण हुवा तेहना ।। उतरया हो त्याने संसार थो पार ॥ भ० ॥ ६ ॥ चोरतीनोहो समभा थका ।। धनरह्यो हो धणी रो कुसले खेम ।। हिंसक तीनुरो प्रतिबोधया ।। जीव बचया हो कीया मारणरानेम ।। भ० ।। ७ ।। सिल आदरी यो तेहनो असतरी हो परो कुवा मांहो जाय ।। यारो पाप धर्म नहो साधने ।। रह्या मुवाहो तोनु ईबरत काय ।। भ० ।। ८ ।। धनरो धणी राजी हुवो धन रह्यो ।। जीव बचाया होते पिण हरखत थाय ।।

साधु तिरण तारण नहीं तेहना ॥ नारीन पिण हो नही डवोई आय ॥ भ० ॥ ९ ॥ केई मूढ़ मीथ्याती ईमकहे ॥ जोव बचया हो धन रह्यो तिणरो धर्म ॥ तो उण रीसरधा लेषे॥ असतरी हो मुई तिणरा लगा कर्म ॥भ०॥१०॥ जीव जीवे ते दया नहीं ॥ मरे जिण रोहो हिंसा मति जाण ॥ मारण वाला ने हिंसा कहो ॥ नही मारे हो ते तो दया गुण खाण ॥ भ० ॥ ११ ॥ सरद्रह तलाव फोडण तणा ॥ सूंस लेईहो मेल्या आवता कर्म ॥ सरद्रह तालाब भरया रह्या ॥ तिण माहे हो नही जिणजीरो धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ नीब आबा दिक वृच्छना ॥ किणही कीधाहो बाढ़णरा नेम ॥ तो ईब्रत घटी तिण जीबरे ॥ वृच्छ उभारह्या तिणरो धर्म केम ॥ भ० ॥ १३ ॥ लाडू घेवरआद अेक दानने ॥ खावा छोड्या हो आतम आणी तिण ठाया ॥ तो बेराग बधग्रो उण जीवरे ॥ लाडुरह्या हो तिण रो धर्म न थाय ॥ भ० ॥ १४ ॥ दवदेवो गांव जलायवो ॥ इत्यादिक हो सावजकारज अनेक ॥ साधु सरब छोड़ावे समझाय नें । सघलारो हो विध जाणो तुम एक । भ० । १५ । केईक अज्ञानी ईम कहे । छकाय काजे हो दांछा उपदेस । ऐकण जीवन समझा यथां । मिट जावे हो घणा जीवांरा कलेस । भ० । १६ । छकाय घरे साता हुवे । ऐहवो भाषे हो अणती रयो धर्म त्या भेदन पायो जिण धर्मरो । ते तो भुला हो उदे आया असूच कर्म । भ० । १७ । हिवे साध कहे तुमसां भलो । छ कायरे साता किण बिद थाय । सुभा सूभ बांध्या ने भोगवे । नहीं पाम्यो हो त्यां मुगत उपाय ।भ० । १८ । हंण बा सूंसकीया छ कायना । तिणरा टलया हो मेला असूभ कर्म पाप । ज्ञानी जाणे साता हुई तेहने । मिटगयाहो जनम मरण संताप ।भ०।१९। साधु तीरण तारण हुवाते हना । सिध गत में हो मेल्या अबिचल ठाम । छकायलारे झिलती रही । न हो सोज्या हो त्यारा आतम काम । भ० । २० ।

आगे अरिहंत अनन्ता हुवा। काहतां काहतां हो नहीं आवे त्यारो पार। ते आप तीरया औरतारीया। छकायारे हो साता न हुई लीगार। भ०। २१। अंक पोते बच्यो मरवाथकी। दुजो कीधोहो तिण रा जावणरो उपाय। तीजा पण भलो जाणे जीवीया। यां तीना मेंलो सीध गत कुंण जाय। २२। भे०। कुसलेर छ्यो तिण रो ईव्रत घटी नही। तो दुजाने हो तुम जांण जो एम। भलो जाण्यो तिणरे बर तन नीपनी। एतोनुही हो सिधगत जासी केम। भ०। २३। जीवीया जीवीया भलो जाणया। एतो नु ई हो करण सरीखा जाण। केई चतुर होसी तेसमझसी। अण समझ्या हो करसी ताणा ताण। भ०। २४। छकायरो बंछे मरणो जीवणो। ते तो रहसी हो संसार मझार। ज्ञान दरसण चारित तप तणों। आदरीया हो आदरायां खेवोपार। भ०। २५।

इति अण कंपारी ढाल नव सम्पूर्ण।

॥ अथ श्रीश्री भीषणजी स्वामी कृत ढाल लिषतें ॥

(ढाल १ लि) साधने श्रावकर तना माला। ऐक मोटी दुजी ना नोरे। गुण गुंथ्या चारु तीर्थंरा। इब्रत रहग दुकान रे। (चतुर बिचार करो ने देषो। १ आ०) समणो पासग पढ़मो आदरने। आपनी न्यातमेलो। तिण ने चारु दुआहार बहराइ। किण हो प्रत ससारन की धोरे। च० २। एतो गोचरी आंपणि छांदे जोवो सिंधात संभालोरे। दातारने लेवाल दोनुंके। जोन आगन्या किण पालोरे। च० ३। श्रावक नो षाणो पोणो ने ग्रहणो। इब्रत मांही घाल्योरे। उबाइ सूगढा यंग मांही पाठ उघाडी चाल्योरे। च० ४। सेवाया इब्रतक्रम जलागे। एतो सरधा सूधोरे। कर्म तणि बस धर्म परुपे। अकल तिणांरो उंधोरे। च० ५। करण जोग्य बिग राय अग्यानि लागरह्योमत जुठेरे। न्याय करो समजावे तिणसु, क्रोध कर लडवाउ ठेरे॥ च० ६। षाधा पाप षुवाया धर्म॥ ए अण तिर्थी नोवायो रे। वरत इब्रतनि षबर न कांइ॥ भोलाने दे भरमा योरे॥च० ७॥ कहे ममता उतरा वांधन थी॥ दे उपजा वो सातारे॥ एतो धर्म बतावे लोकाने॥ तिके मोह मिथ्यात में रातारे॥ च० ८॥ द्रबे साता ने भावे साता॥ मुरष भेदने जाणेरे सावज साता जोणं धर्म बारे॥ ग्यानो बिना कूण पिछाणे रे॥ च० ९॥ कहे श्रावक रतारो भांजन तिण पोष्या नहि के टोटो रे॥ च्यारुं आहर बह राय न हरषे॥ त्याने लाभज मोटोरो॥ च० १०॥ ओतो सरधा अना रज केरो॥ लोक रिजावण लाग्या रे॥ कोइ साध कहे तो उण रा॥ पांचु इम्हा ब्रत भांग्या रे॥ च० ११॥ रतनारो भांजन बरता करने॥ गुण आदरो या डुवोरे॥ षावो पिवो देवो न लेवो॥ ओतो मर्ग

जुवोरे ॥ च० १२॥ ससंण निग्रंथ ने दानरो दाता ॥ बारमां ब्रत मैं आंख्यारे ॥ पृत संसार कियो सूप देने ॥ त्याने श्रीसुखविर बषाख्या रे ॥ च० १३ ॥ समायक संवर पोसामें ॥ साधाने हरष वहरावेरे सो स्रावक तेजारे पारखे ॥ त्याने क्युं न जोमाविरे ॥ च० १४ ॥ आकरणी जोंण आगन्या वारे ॥ ब्रतां मांहीना आवेरे ॥ सावज जोगरा त्याग करोने स्रावक कोर्म जीमावेरे ॥ च० १५ ॥ स्रावकरा च्यार विस्रामा तिणं मैं कीधो ते माटो जांणि रे ॥ सावज भारने अलगो मेलो ॥ जिंण आगन्या आगवांणीरे ॥ च० ॥ १६ ॥ बार २ दान ने परसंसे ॥ मेदले जाणे मिथ्यातीरे सूगडायंगा अध्येने इग्यार मे ॥ कह्योके वायूारो घाती रे ॥ च० १७ ॥ दांनसाला मंडाइ प्रदेसी मोष रोहेत न जाणी रे ॥ च्यार भाग तिंण किधा राजरा ॥ पिंण साधां नइ वषाणीरे ॥ च० १८ ॥ तिन भाग माहो पाप कहो थे ॥ रिकांण री किमताणी रे ॥ केसी कूमार तो सुंनमाजो ॥ च्यारु बराबर जाणयांरे ॥ च० १९ ॥ अणंद स्रावक ब्रत आदरने ॥ एहवो अभग्र होलिधोरे ॥ अंण तियांने दान ने देवु ॥ स्रीजीण आगल किधीरे ॥ च० २० ॥ छे छंडोरी आगार राख्योते आपणी जाण कचाइ रे ॥ समायक संवर पोसामें ॥ तेपिंण देछिटकाइरे ॥ च० २१ ॥ एकतो त्याग करीने बेंस्यो ॥ एक दानसाला मंडावेरे भगवंतरि आगन्या किंण पालो ॥ साधकिंण ने सरावे रे ॥ च० २२ ॥असंजती ने दान दिया मे ’ धर्म पुन्य काइ थापो रे ॥ बिर कह्यो भगोती सूत्रमें ॥ निर्जरा नइ एकांत पापो रे ॥ च० २३ ॥ जीणने अंन दिया निपजे पुन्य ॥ तो नमस्कार दूर जाणो रे उलटा पड २ क्रम बांध्यो ॥ कर २ ताणा ताणो रे ॥ च० २४ ॥ निरणो न आवे नव बोलां रो तिणरे मोलप मोटोरे ॥ नवंइ बोल सरीषाने थापे ॥ तिणरा सर धाजोटोरे ॥ च० २५ ॥ जितरा द्रब सूपातर वहरे ॥ तेहीज द्रब वताय़ारे ॥ गायमें सधंन धान धरती ॥ त्याने क्युं न जताय़ारे ॥ च०

२६ ॥ कहै करता पाप देवी म्हे बरजा धरम करवो मांडानोरे॥ मिश्र ठिकाणो मुंनज साक्षा॥ आक्रूद्रसणां दिराणोरे॥ च० २७॥ साध श्रावक रो ऐक हि मारग दोय धर्म बताया रे॥ ते पिण दोनु आगन्यां मांही॥ मिश्र अंणहूंतो ल्यायो रे॥ च० २८॥ मिश्र पषने मिश्र भाषा॥ मिश्र गुण ठाणे चाल्यो रे॥ तिण रो नाम लेले अग्यानी॥ झुठो जगरो जाल्यो रे॥ च० २९॥ यांतिनारी तार काढरोलिंग॥ जिण सिषावण आंनी रे॥ मिश्र धर्म ने किंण बिध सरधे॥ भगवंतना संतानीरे॥ च० ३०॥ हाथी घोरा रथ बेसीने श्रीजिर बांदण ने चाल्यारे॥ स्नान किया गहना फूल पहरया॥ श्री मुषसूं नहु पाल्योरे॥ च० ३१॥ पाप तणा फल कडवा बताया॥ ऐ बायक जगनाथो रे॥ सूण २ ने बेराग कीयोज्यां॥ सूहस लोया छोडी हाथो रे॥ च० ३२॥ मुला गाजर ने काचो पांणी॥ कोइ जोरीदावीले षोलोरे॥ जे कोइ बस्त छडावेदिलां संन॥ इंण बिध धर्म ने होसो रे॥ च० ३३॥ भोगीना कोइ भोगज रुंधे॥ वले पाडे अंतरायो रे॥ महा मोहनी कर्मज बांधे दसास्त्र ५ध में जताया रे॥ च० ३४॥ देव् गरु धर्म ने कारण॥ मूढ हणे छे कायो रे॥ उलटा परिया जीण मारग थी॥ कूगरा दिया वहकायोरे॥ च० ३५॥ धर्मरे कारण श्रावक नुतरया मनमें हुधक उला सोरे॥ आरंभ करी जिमाया धर्म जांणेले बोध बीजरीना सोरे॥ च० ३६॥ बिरक्त श्री आचरंग मांहीते ओलषायो तंतसारोरे॥ समदिष्टी धर्मरे कारंण॥ न करे पाप लीगारोरे॥ च० ३७॥ ईकंद्रि मारी ने पचेंद्रि पोषे निषेद्र बांदो बामोरे सद्ध गलागलते चोडे मांडी पाषंडयांरे धर्मोरे॥ च० ३८॥ लोही षरड्यो पिलवर॥ लोहो सूकेस धूपावेरे॥ तिम हिंस्यामें धर्मकोहाथी॥ जोव् उजलो कीमथा होरे॥ च० ३९॥ कहे म्हे पाप करां थोडो सो॥ पोछे होसी धर्म अपारोरे॥ सावज काम कराईण हेतु॥ लिंहां थोमेवो पारोरे॥ च० ४०॥

चतुर्थ विध बंध ना कोठा ठाला ॥ पोछल भवदान बतायोरे ॥ सनत कूमार इंद्र हुवो तिण थी ॥ ए पिण मूसा बायोरे ॥ च० ४१ ॥ ए तो पूछा व्रतमान काले ॥ पाछल भव नहीं चालोरे ॥ फद मांही न्हाषे अजाण लोकांने ॥ कूबध हीया में घालोरे ॥ च० ४२ ॥ तिन कालरि समझ पड़े नहीं ॥ तो हेतन सूत्र बतावेरे ॥ चार इ आहार नो नाम लेइने ॥ गोलाकाय चलावोरे ॥ च० ४३ ॥ चोथो सोन्यासण धर्म काह्यो जीण ॥ दान सनान बतायोरे ॥ आठमा अध्येन गीनाता मांही ॥ घणा लोक दियो भरमायोरे ॥ च० ४४ ॥ जीम कोई सावज दान दिढाइ ॥ मंन मांही होय रलयावत रे ॥ लोकाने मन गमता बोले ॥ चोषी जोगनरा केरायत रे ॥ च० ४५ ॥ आ सरधा सुखदेव सिन्यासी ॥ संस जणा सीष जाणोरे ॥ सेठ सूद्रसण तिणरो भगता ॥ छाड मिजो रंगाणोरे ॥ च० ४५ ॥ कर्म योडाने सूलटो सुझि अंतरगत निरणो कीधोरे ॥ थावरचा अंण गार पूत बोध्या जद ॥ षोटा छोड सजम लिघारे ॥ च० ४७ ॥ अबड़ना सीष सातसे हुंता ॥ अंण दीयो नइ लिधोरे ॥ काचो पाणी अधर्म जानीने ॥ अणसोला अंणसण किधारे ॥ च० ४८ ॥ जो कोई मिलतो दातार ॥ तिणने हरज बहरावतो पाणोरे ॥ लेवालतो इव्रत मैं लेतो ॥ इम हिजदातार जाणोरे ॥ च० ४९ ॥ म्यानी पुरष तो दोनुं जणारो सावज करणो जाणोरे ॥ दातारने काई धर्म कहेतो ॥ आ आंणतिर्थीनो वांणी रे ॥ च० ५० ॥ समकत गमाइ नंदन मणयार साची सरधा भागीरे ॥ तेलोकार तिन पोसा ठाया ॥ भुषत्रषा अती लागी रे ॥ च० ५१ ॥ संगत पाषंड यांरी करने ॥ उलगी मारगलिनोरे ॥ दिन २ कूवा तलाब षीणावे त्या सकल जमारो कीधोरे ॥ च० ५२ ॥ पोसो पार सेणकने पुछी ॥ पोषरणी बाब बणाइरे ॥ धन षरची जस लियो लोकांमें ॥ वले दांन साला मंडाइरे ॥ च० ५३ ॥ सोले रोग सरीर में उपना ॥

सुवो आरत ध्यान ध्यायोरे॥ आप जीखाइ में जाय पड़ायो॥ डेडक मां भव पायोरे॥ च० ५४॥ आद्र कुमारेनें ब्रह्मण बोल्या॥ छोड़ तुं मगधा परचारे॥ म्हारो धर्म उतमने उजल सुंण तुंम्हारी चरचारे॥ च० ५५॥ दोय सहस्र ब्रह्मण जिमाय प्रलोक में सुषदायकरे॥ देव हुवे फुन पंध उपजावेरे॥ बेदतणो ए वायकरे॥ च० ५६॥ आद्र कूमार कह्यो ए पातरने॥ नित जीमाडे तेहोरे॥ दोय सहस्र ब्रह्मण ने दाता॥ नरक पुंहचे वेहोरे॥ च० ५७॥ मंजरा जीम रस गागिरधी॥ कह दियो कांणने राषी रे धर्म पुन्य नो अंस न भाष्यो॥ सुगडायंग के साषीरे॥ च० ५८॥ भ्रगुप्रोहत कह्यो बेटाने॥ सूंण तुं मोरी सीष्यारे॥ वेद भणी ब्रह्मण जिमाडे॥ पछे लेजो दिष्यारे॥ च० ५९॥ कहे ब्राह्मण जीमाया अे फल लागे॥ पुहचावे तमतमारे॥ उतराधयन चोद में साष्यो॥ ए तो छे सावज धर्मोरे॥ च० ६०॥ षोटी सरधा नाहिण चारो॥ पूजा सलाधारा अुखारे॥ कसघणा न सुलटो न सुझे॥ कदागरो करवा ढूकारे॥ ६१ च०॥ राते भुला ते आसा राखे॥ दीहाडे सूझसी सुलारे॥ कहो नो आसा किण बिधराखे॥ दोहा दोपारा चुकारे॥ ६२ च०॥ भाव मारगथी भुला अग्यानी॥ उजड चलया जायोरे॥ मन मांही आसा भुगतरी राखे॥ पिण दिन दिन अलगाथा योरे॥ ६३॥ च०॥ सुतरनी चरचा अलगी मेली। लोक करें पखपातीरे॥ साचीसरधा किण बिध आवे॥ हुवा धखारा साथीरे॥ ६४॥ च०॥ जो थांरा दिलमें कांईयन बेहसे॥ तो सगलो झगडो चुकोरे॥ समता आदर न ममता छोडो जिण तिण प्रागेमत कुकोरे॥ च०॥ ६५॥ ईम्रत ओलखो उतम प्राणी॥ तो छोडदो राग नधे षोरे॥ मान वसी भव अहलो मत हारो॥ पर भव सामो देखो रे॥ च०॥ ६६॥ संघ न पोखलो जीमण कीधो॥ ते तो आपके छांदेरे॥ तिणने

सराले ते मुढ़ अग्यानी॥ क्रमतणा पुंज बांधरे॥ च०॥ ६७॥
तिण जिमणन छांडे जाणि॥ पोसोकर दीयो त्यागीरे॥ पोसा
र दिन पोसज पचाख्यो॥ संख बड़ो बेरागीरे॥ च०॥ ६८॥
उपला श्रावक पोखली घर आयां॥ विनोकीयो सीस नमायो रे॥
ते तो छांडो आपरो जाणो॥ भगवंत नही सीखायोरे॥ च०॥
६९॥ निसकार अंबर न कीयो चेला॥ सुत्र उबाईस चाख्योरे॥
भगवंत भाव दिठा जिम भाख्यो॥ जिण धर्म में नहीं धाख्योरे
च०॥ ७०॥ नवकारना पद पांच परुप्या॥ श्रावकान दीयो टालो
रे॥ जिण आगन्या नहीं न्हस बाटणरी थे भगवंतरा वचन सभा
लोरे॥ च०॥ ७१॥ सांहो मांहो बोनो व्यावच कीया धीर नही
वेखाखारे॥ चिस्तरा कारज सावज दीठा मनकर भलो न जाख्यो
रे॥ च०॥ ७२॥ कहू छे ईव्रत सेवा तिणसें॥ जाणा छा बधता
कर्मो रे॥ पिण ईव्रत सेवा म्हान हुवेछे तिण न धर्मो रे॥ च०
॥ ७३॥ आसरधा श्रावक नही राखे॥ नही दे किण न दगोरे॥
धर्म ठीकाणे क्षुठ बोले तो॥ जिण सांसण मेंठगोरे॥ च०॥
७४॥ आपतो ईव्रतसें आण॥ भोला न धर्म बताई रे॥ श्रावक
ऐहवो झुठ न बोले। जिण धर्म मांही आईरे॥ च०॥ ७५॥
साधन कोई असूध वहरावे॥ तो ग्रभ में आडो आवेरे॥ श्रावक
ने कोई सचित खुवावे तो सुध गत किम बोध जावे रे॥ च०॥
७६॥ ऐक २ मानव क्रमतण वस कर रह्या उधीताणोरे॥ स
चित असूध रा करधो म्हांने॥ हुसी धर्म-सकाम आणोरे॥ च०॥
७७॥ पेटरे कारण अनर्थ भाषे॥ परभव साह्सो न जोवेरे॥
वले पखपात करे झुगदारो॥ मानवरो भव खोवेरे॥ च० ७८॥
दानसील तपभावना च्यारुं॥ ऐ सेव्यां सुगत जावरे॥ दान सूपा
तर वायो सूणने॥ तेईव्रत मै नही लावेंरे॥ च० ७९॥ समचे दान
से धर्म करे॥ त्यानही जाणी जिण धर्म सेलो रे॥ आकन गायरी

दुध अव्याणी ॥ कर दीयो मेल सभेलीरे ॥ च० ८० ॥ ईव्रतमें दांन ले ॥ पेला री ओखदो मार्ग बतावेरे ।। धर्म कह्या विन लोकान देवें जब कुडा कपट चलावेंरे ।। च० ८१ ।। ओर जायगा धन देता देखी परचतु लेखे लेखेरे ।। ओ श्रावक सूपातर त्याने ।। देतु दांन विसेखेरे ।। च० ८२ ।। कलपेति वस्त्र श्रावक न देने गोत तीर्थंकार बांधोरे ।। ऐहवो भ्रम अनारज भाखे ।। ते किण बिधलागी साधोरे ।। च० ८३ ।। आगारनै सूपातर कह्यो २ ।। सानी कर साह्ज दीरावे,रे ।। तिणरे दीसे घोर अंधारो ॥ समकत किण बिधु आवेरे ।। ८४ ।।च० ।। षेती करे व्याज वोहरा पाले ।। सूपातर नाम धरावे,रे ॥ करे मगपण आरान मोसर ।। बले बेटा वेटो प्रणवे,रे ।। ८५। च० साधारो आहार पाणी जो वधेतो ॥ परठे ऐकांत जायोरे ईगारमो पडमारो श्रावक मांगेतो तिण ने नदे ईण न्यायोरे च० ॥ ८६ ॥ धरतो परठयां तो व्रत रहे छ दीया दोष उथाडेरे पांच साहा व्रत सुलगा तिणमें ॥ सगला सि पडे व धारोरे ॥ च० ८७ धरती परव्यां तो अरथन आवे, आकरनी नही नीचोरो ॥ दीधा दाराया भखो जाण या ॥ तिण सावज ईव्रत सीचोरे ॥ ८८ ॥ च० ॥ जगन मंदम उत्यकाष्ठा श्रावक ॥ तीन्यारो ऐक जपातारे ॥ ईव्रत छे सागलारी म्हाठी ॥, तीणमि मजाणो भ्रांतोरे ॥ च० ॥ ८८ ॥ कोई श्रावक रा व्रत लेई साधा पा ॥ आयो जिण दिस जायोरे ॥ मारग में दो मिंती मोलया ॥ तिबोल जुदी २ बायोरे ॥ च० ॥ ६० ॥ ऐक कहे व्रत चोखु पाल ॥ ज्युकटे आठुई कर्मोरे ॥ काल अनादरो रुलते २ ॥ पायो जिणजिरो धर्मो रे ॥ च० ॥ ८१ ॥ ऐक कहै तुं आंगार सेवु सचित्ता दिक अवसभा लोरे ॥ जतन घण कर जेडोलारा बले कुटंबतणो प्रतपालोरे ॥ च० ॥ ६२ ॥ व्रत पालणरो आगन्या दीधी ॥ ते धर्म रो मिंची मोटारे ईव्रतरो आगन्या दीधी तिणने त्यांनी तो जाणे षोटोरे ॥ च० ॥ ६३ ॥ गुरतो मोलया श्रावक

आंधा ॥ चेला पुरा जिरंदोर ॥ ऐतो जाल रचे तिण चोडे ॥ कोई आय, पडे उण फांदोरे ॥ ॥ ९४ ॥ नग्रायरी चर्चा रोकाम पडेतो ॥ ऐक होय,मांडे लडणोंरे ॥ पाखंठिया सूं जाय मिलय,ां बलिलीहो लोकारो सरणोर ॥ च० ९५ ॥ अति दुष्टी हुवे, हंस्या धर्मी ॥ निंधाकरे पर पुठैरे ॥ कोई खांचा ताण साधा पआणि ॥ तो अवगुण लेने उठरे ॥च० ॥ ९६ ॥ कह दान दीयो तिथंकर तिन में ॥ जाणा हां कटया क्रमार ॥ तेतो सोनईय,ा देवा आणो दीधा ॥ तिण ने हुंतो दीसे धर्मीरे ॥ च० ॥ ९७ ॥ कर्म कटे जो सोनईय,ा साटे तो करणो नही करता,रे ॥ ऐ मारगथी सीवपुर पुह चे ॥ तो घर छोड दुखमें न परता रे च० ॥ ९८ ॥ सोनईया दीधां कर्म कटे तो ॥ वरसो जेझन पारतरे ॥ लोकांरो घरभर सोनईया ॥ देता कर्म विडारत रे च० ॥ ९९ ॥ कहे लोधा पापने दीधा धर्म ॥ तिणलेखे रह गया कोरारे ॥ देवां खनेले मीनषां न दीधा ॥ परिया अण हुंता फोरारे ॥ च० ॥ १०० ॥ ऐक कोड आठलाख सोनईया ॥ नीकल्या वरसो दान देइ रे ॥ मुगतरो मार्ग तिणमें नही जाण्यो संवर नि जैरा नही वेईरे ॥ च० १०१ ॥ वरसीदान महोछव सगलो केवल या नही वखाण्योरे ॥ तिर्थंकर न देव दोनु ईब्रतो ॥ त्यापिण धर्म न जाण्योर ॥ १०२ ॥ भगवंत दीखा लीधी तिणकाले ॥ चड़िया अनंत वेरागीरे ! सावज दान सीनान सोनईया ॥ म्हांठ जाणी दीधा त्यागीरे ॥ च० ॥ १०३ ॥ भगू प्रोहित धन छोडी निसरयो ॥ ईखु कार राजा मंगायोरे धनसू धर्म करने कर्म कटेतो ॥ अहलीसा टेकाय गमायोरे ॥ च० ॥ १०४ ॥ घर छोडे त्यांमें अकल घणी थी ॥ आलमकर आघोन काढ़तरे ॥ धनसूं धुर्म हुवे तो करने कांम सिरारै चाढतरे ॥ च० ॥ १०५ ॥ धर्मरा धोरा धनसूं ने चाले भगुने बेटा काह्यो दोहोरे ॥ मांहो माही दीया धर्म थापे तो गया जमारो खोईरे ॥ च० ॥ १०६ ॥ रिषभदत्त ब्राह्मण

देवानंदा ॥ बाणी सुण आयाबेरागीरे ॥ त्या पिण छोड्यो धन अधर्म जांणी ॥ चडीया अतंत बेरागीरे च० ॥ १०७ ॥ कहे आरा मोसर दाय जो दीया मे ॥ मिश्र धमकर रह्या ताणीरे ॥ दाय उथई राज दीवी भानेजाने ॥ तिण लेखे मोट लाभ जाणेरे ॥ १०८ ॥ च०॥ परिगरो छे अनरथरो कारण ॥ करे बोध बीजरो घाता रे ॥ बीर काह्यो दसमां अंगमाही ॥ ओनर्कतण छ दातारे ॥ च० १०९ ॥ गम गम सूत्र सिंघत में ॥ धनसूं धर्म नथापीरे २ ॥ किण बि-ध कर्म कटे दातारा ॥ ईब्रत माहो आथोरे ॥ च० ११० ॥ जंबु कंवर आठ परणी आयो ॥ दाय जे रिध लाया अपारीरे ॥ कोड नीनाणु तो पहरावणीरा बले घरमें हुतो रीध भारीरे ॥ च० ॥ १११॥ कनक कामणी सूं ब्रिकत माव ॥ उतम चारित्रलीधोर वैराग आणी धन छोड दीधो पिण धनसूं धर्म नकीधोरे ॥ ११२ ॥ बिस सहस सोना रूपरा आगर षुट नइ अषुटभडारीरे ॥ चक्रब्रत छ षंडरो साहीब ॥ तिण रारिधरो घणे बिसतारोरे ॥ च० ११३ ॥ एहवीरिध में काल कियोते ॥ नृक पडीयो बांधी क्रमीरे ॥ दुर्गत टल जाय धन दिधाता ॥ देर करता धर्मी रे ॥च० ११४॥ श्रावक तोतिण कलिइ हुता ॥ धन लेवाले त्यांरोरे ॥ याने दिधाउधाहार हुवेतो ॥ देवतरता भव परोरे ॥च० ११५ ॥ चितमुनी र्भुत समजावंण ॥ साध श्रावक धर्म बता ब्योरे ॥ धनसुं सूब्रत जाय बिराजे ॥ एहवो न कहए उपायोरे ॥ च० ११६ ॥ कहे साध आहर करे ईब्रत में ॥ संगमरोछे खोटोरे ॥ एतो बचन अनारज केरा ॥ तिण आदरयो मत खोटोरे ॥ च० ११७ ॥ ईब्रत न प्रमाद बिहुसु संजमन छ धकोरे ॥ खोटो कहै त्यारी उंधी सरधा ॥ त्यां ग्रह्यो मिथ्यातन पकोरे ॥ च० ११८ ॥ साधांतो सावज सगला त्याग्यो ॥ पापरी नई आगारोरे ॥ ईब्रत मैं आहर खावेने पावे ॥ तिनिश्चे नई साध अणगारोरे ॥११९॥च० च्यार गुणगणा एकलो इब्रत श्रावक में दोनु

पावेरे॥ साधारे इब्रत सुलने दीधो॥ कुवधी कूर चलावेरे॥ १२० च०॥ ईब्रत मैं साध आहर करे तो॥ जिण आगन्या नई देतारे॥ पाप जांणता तो सुंन साझता॥ ऐपिण आगन्या लेतारे॥च० १२१॥ प्रतष पाप जाणे आहर कीया सैं॥ क्रमतंणे बंध होयोरे॥ तो गुररी आगन्या लेई॥ मुढे गुरने काय डबोयो रे॥च० १२२॥ गुररी आगन्या ले पाप करणरी॥ तेतो मिलो छे अनारजरे॥ बिने सहीत कोइ सावज सेवे॥ तिंण मोटोकीधो अक्कानोरे॥च० १२३॥ ते गरु पिंण मीलया अतंत अगग्रानी क्रमा करी सुन्यो भुंडोरे॥ पाप करण री आगन्या देने॥ पोते अहलो साटे कांईडुबोरे॥च० १२४ चेलाने अगग्रा ईब्रत री देने॥ घाल्यो पाप मैं सीरोरे॥ देखो अकल गइ डण गुररी॥ डणरे काय परीयो भीरोरे॥ च० १२५॥ पाप करण रा आगन्या देसी॥ तेनिश्चे होसीं भारीरे॥ कूण चेलो गुरन गुर भाइ॥ जोयजो अंतर गग्रान विचारोरे॥ च० १२६॥ साध आहर कीया प्रमादने इब्रत॥ तो दातार ने नही धर्मोरे॥ इब्रत सें ईब्रत मांही घाल्यो॥ ते दोनारे बंधया क्रमोरे॥ च० १२७॥ क्रम तणे वस मुढ अग्यानी॥ सवलो सोखने धाररे॥ आप ढुवे ईब्रत मांही ल्याइ॥ तो बीजाने कीण विधल्याररे॥च० १२८॥ साध आहर कीया पाप परुपे तिंणरे मोह मिथ्यात रोचालोरे॥ तिंण मांही पाप बतावे धुग्यानी॥ तिनुही कालरा रखेसर रा॥ दीयो अंण हुतो आलोरे॥ च० १२९॥ आहर करंण री सूध साधने॥ भगवंत आगन्या दीधोरे तिंण मांही पाप बतावि अग्यानी॥ तिण षांच गलामेलीधोरे॥ च० १३०॥ जो थाने समज पडे नई पुरी तो राषो जींण प्रतीतोरे आगन्या मांही पाप परुपो॥ एहवी मकरो अनीतोरे॥ च० १३१॥ जिण आगनग्रा मांही पाप परुप॥ ते भुले भ्रम अग्यानीरे॥ आगन्या बाहर धर्म बतावे॥ त्याने किण बोध कहीजो ग्यानी रे॥ च० १३२॥ गुण बिना सांग धरे साधारो॥ करे बिकलारी थापोरे॥

छे कारण बिन साध आहर करे तो॥ तिण नेछे एकंत पापोरे॥ च० १३३॥ छे कारण साध आहर करतो॥ जिणं आगन्या नई लोपोरे॥ पाप तिंयाने किण विध लागे॥ संबर कर आतम गोपीरे॥ च० १३४॥ निरवद गोचरी रिखेसरांरी॥ मोक्षरी साधन भाषीरे॥ पाप कर्म आहर करता न लागे॥ दसविं कालिक साखीरे॥ १३५॥ सात कर्म साध ढोला पाडे॥ आहर करे तींण कालोरे। सुध भोगवया अफललागी। सुतर भगोती संभालोरे। च० १३६ सेलक जच्च काधले निकलयो। रेणा देवी सुंराषी पीतोरे। अणकंपा आंणी सामो जोयो। तो जिण रीख कोयोफजीतोरे। च० १३७। सेलकरिष जिम संजम जाणे। रेण देवी जु इब्रत मेलोरे। मुगत नगर ने संत निकलया। त्यां इब्रत छोडी पलोरे। च० १३८। सेलक जखने रेणा देवी। मांहो मांहि नहो मिलायो रे। ब्रत सुधर्मते पार पुहंचे। ईब्रत लगावे पापोरे। च० १३९। रेणादेवी एक भव दुख दायक ईब्रत अंनता कालोरे। साखो ल्हवे तो गिनाता मांहो। नवमो अध्येन संभालोरे। च०॥ १४०॥ ईति संपुर्ण।

॥ अथ चतुर विचारको दुजी ढाल लिष्यते ॥

सुगडायंग अध्येने ईग्यारे मे। दानरो कियो। निचोरोरे। मुढ मिथ्याती विवेक रा विकलते करे अंधाहुंतो भ्कोरोरे। च० १। सोलमी गाथा सुंले ईकवीसमी तांइ। छे गाथा रा अर्थ छे सुधारे। त्यां सावज दांन मे मिश्र थापण ने। अर्थ करे छे उंधारे। च० २। ते सावज दांन संसार रो कारण। तिंण में निरवद रो नई भेलोरे। संसार ने मुगत रो मार्ग न्यारो। ते कठेही न खावे मेलोरे।च० ३।

एछे गाथा रो अर्थ छे भारी सुधा। त्यारोनिरणो की जो बुधवानोरे। ते अर्थ बिवरा सूध छे त्यारो। ते सुणज्यो सुरत दे कानोरे। च० ४। दांनरे अर्थ जीव हणें। त्यांने साधु तो भलोन जाणेरे। देवे पोसतु कार षुदावे कूवादीक। लाभ जाणे सरधा प्रमाणेरे। च० ५। ते आय साधाने प्रस्न पुछे। आरंभ लीया बोले बांणीरे। ईण कारणो में पुन्य हुवे कनई जब साध करे मुंन जाणीरे। च० ६॥ पुन्य पिणसाधु न कहे तिणने॥ बले न कहे थारे पुन्य नांहीरे॥ दोनु प्रकारे महा भयरो कारण॥ मुन करे तेकारण कांइरे॥ च० ७॥ दानरे कारण लोक करे छे॥ तस थावर री घातीरे॥ पुन्य कह्या त्यारी दया उठे छे॥ दया बिन नहीं पुन्यसाथ्यातीते॥ च० ८॥ असजती ने उदेरीर२॥ आरम्भ कर अन्न पांणीरे॥ पुन नही कह्या अन्तराय छे॥ ओहीज कारण जाणीरे॥ ९ च०॥ साधु तो अन्त राय किण ने देवे॥ उणवेला जीभ क्या न हलावेरे॥ चरचारो काम पडे तिण काले हुवे जीसा फल बतावेरे॥ च० १०॥ जे कोई दान परसंसे तिणने॥ कह्यो छकाया री घातीरे॥ ते देवे दिरावे त्यारी सूं कहवो॥ वे पिण उणरा साथीरे॥ च० ११॥ हिंसा जुठ चोरी कुसील प्रसंसे॥ ते बुडगया कालोधारोरे॥ तो करणसुं करावण वालारी किण विध होसी उधारोरे॥ च० १२॥ कोई गांव जला वन गाया कढावे॥ इत्यादिक काजे सब भुंडारे॥ त्याने सरावे ते बुडमया छे॥ तो करणवालातो बसेष कुडारे॥ च० १३॥ ज्युं सावज दान प्रसंसे तिणने॥ कह्यो छकायारी घातीरे॥ देवे तिणने मिस्र धर्म कहे॥ तिणने कहिजे मूढ़ मीथ्यातीरे॥ च० १४॥ माठा कास सराया बुढ छे॥ तोकीसा बुडसी गाढ़ीरे॥ आ सरधा सूण सेहठी धारो॥ थे सल अभिन्तर काढीरे॥ च० १५॥ सावज दान प्रसंस तिण ने माठा फल कह्या जिण राजी रे॥ हिव दान नही नषेधणो साधुने॥ ते पण सूणज्यो न्यायोरे॥ च० १६॥

दोतार दान देवे तिणकाले ॥ लेवाल लेवे घर पोतोरे ॥ जब साधू कहे मत दे ईणन ॥ नषेदे नहो ईण रीतोरे ॥ च० १७ ॥ जो दान देताने साध नषेद ॥ तो लेवालरे पड़े अन्तरायोरे ॥ अन्त राय दीया फलकड़वा लागे ॥ तिणसूं नषेद न करे ईण न्यायोरे ॥ च० १८ ॥ अन्तराय सूं डरता साधन बोले ॥ और परमारथ मत जाणोरे ॥ ते पिण सुन छे व्रतमान काले ॥ बुधवन्त करजो पीछाणे रे ॥ च० १९ ॥ उपदेस देवे साधू तिणकाले ॥ दुध पाणी ज्युं करे नवेरो रे ॥ विन बताया च्यार तीरथमें ॥ किण बोध मीटे अंधेरोरे ॥ च० २० ॥ दोनु भाषा साधू नवि बोले ॥ पुन्य छे अथवा पुन्य नाहो रे ॥ ते पिण बरजो व्रतमान काले अश्री ॥ थे सोच देखो मन माहोरें ॥ च० २१ ॥ कोई कहे पुन कहणो न कहणो बरज्यो ॥ तो पुन्य में पापरो भेल जाणोरे ॥ तिण सूं मिश्र ठीकाणो ले उंध्या अग्यानी ॥ कर कर उंधो ताणोरे ॥ च० २२ ॥ पुन्य छे क नहो प्रश्न पुछा ॥ पापरो कथन न चाल्यो रे ॥ मिश्र रो सरधावाले अग्यानी ॥ घोचो मिश्ररो घाल्योरे ॥ च० २३ ॥ दान में मिश्र नहीं जिण भाख्यो ॥ पुन्य हुसी क पापोरे ॥ सूपात्र सूं पुन्य कुपातर सं पाप ॥ पिण खोटी मीश्ररी थापोरे ॥ च० २४ ॥ वले सुयगडांग अध्येन ईकवीसमें दोय बात जीण भाषी रे ॥ त्यां पिण न कह्यो छे मीश्र ठीकाणे जोवो बतीसमी गाथा साखीरे ॥ च० २५ ॥ दातार न देतां लेवालन लेतां ॥ साधू ईसड़ो देषे बिरतंतोरे ॥ जब गुण अवगुण न कहे तिण काले ॥ तिण सुन करे ऐकन्तोरे ॥ च० २६ ॥ तिण दान तणी साधू गुण करे तो ॥ असंजमरी अणमोदना लागेरे ॥ ते असंजम छे ऐकलो अधर्म ॥ अणमोधासंजम भागेरे ॥ च० २७ ॥ तिण दान न साधू भलो न जाणे ॥ भलो जाणे बंध पाप कर्मोरे ॥ तो तिण चीज दान तणा दाताने ॥ किण विध होसी मिश्र न धर्मोरे ॥ च० ॥ २८ ॥ पाप अणमोधा पाप लागे छे ॥ धर्म अण

मीधा धर्म होयोरे॥ तो मिश्र अण मोधा मिश्र चाहिजे॥ ते मिश्र न दासे कोयोरे॥ च०॥ २९॥ दान देवे दिरावे भलो जाणे॥ ऐतींनु रो ऐक पातो रे॥ पुंन्य पाप मिश्र होसी तो तीनु ने॥ तिणमें म राखो भ्रांतीरो॥ च०॥ ३०॥ तिण दान तणां गुण साध करेतो॥ असंजम री अण मोदना लागेरे॥ ते दान असंजम में जिण घाल्यो॥ अव गुण कह्यांरो वोलतोछे, आगेरे॥ च० ३१॥ दान तणा अवगुण कीधामें॥ लेवालरे पड़े अंतरायोरे॥ अंत राय देणोते साधु नन कलपे॥ तिण सू मुनकरे मुनीरायोरे॥च०॥३२॥ईण नराय साधूने मुंन कहोछें॥ पिण मिश्र न जाण तिणमेरे॥ ईण दान में मिश्र ने धर्म थापे॥ तो कोरो मीथ्यातछ उणमेंरे॥ च०॥ ३३॥ गुण कह्या असंजम अणमोदीजे अव गुण कह्यो तो लागे अंतरा योरे॥ या दोनुं सू डरतो साधन बोले अठ मिश्र किहां थी थायोरे॥ च०॥ ३४॥ साधू मुन करे ते व्रतमान काले॥ उपदेसमी मुल न रा खेरे॥ दोरव षेतर काल भाव देखेंतो॥ हुवे जिसा फल दाखेरे॥च०॥ ३५॥ मिश्र थापण नं मूढ अग्यानी॥ छलछिद्र रह्मा नितदेषीरो ओर वोल मिश्र नाघण छे सूत्र में त्यामें मिश्र दान देटेकीरे॥ च० ॥३६॥ कोई कहै पाप कहै तिण देतां पाल्यो॥ ईसडो बोले वाणी रे॥ ऐ दोनु भाषा न ऐकज सरध॥ ते भाषारा मुढ अजाणीरे॥ च० ३७॥ कोई कहे पाप कहे तिण दान न खेधो ते पिण भाषा रो अजाणरे॥ सावज दान थापण न अग्यानी वोले छे उधी वाणोर च०॥ ३८॥ दान देता ने कहे तु मत दे ईणने॥ तिण पाल्यो न षेधो दोनुरे॥ पाप हुतो न पाप बतायो॥ तिणरोछ निरमल ग्यानो रे॥ च० ३९॥ असंजती ने दान दीयामें कह दीयो भगवंत पापोरे॥ त्या दांन न वरज्यो न षेधयो नांही॥ हुंती जीसी कीधी थापोरे॥ च०॥ ४०॥ किणही साधू ने कह्यो आज पछें तुं माहरा घरकदे मत आयोरे॥ किणही करडा बचनज बोल्या॥ ९हिवे साधू किसे घर

जायोरे ॥ च० ॥ ४१ ॥ साधू ने बरजे तिण घरमे ने पैसे ॥ कारण कह्या तिण घर मे जायोरे ॥ नषेधरो न कारणो बोल्यो ए दोनुऐ काण भाषामें न समायोरे ॥ च० ४२ ॥ ज्युं कोई दान देता बरजराय ॥ कोई दोधा मे पाप बतावेरे ॥ अ दोनुई भाषा जुदी २ छे ॥ ते पिण ऐकण भाषा में न समावेरे ॥ च० ॥ ४३ ॥ कोई रांक गरीब न मरतो देषी ॥ त्योरी अणकंपा मन आवेरे ॥ जब पेला रो पाप चोरी कर पीते रांकांरी अणकंपा काजे न हाथां सूं पकरावेरे ॥ च० ॥ ४४ ॥ धणी नी बिण पुछ्या चोरी करदेवे ॥ रांका री अणकंपाकाजेरे उणरी सरधा रेलेख उणने हो मीश्र ॥ अठे मीश्र कहता काय लाजेरे ॥ च० ४५ ॥ माल धणीरो दाह दोषी तीणरो ॥ हुवो ऐकंत पाप कर्मोरे ॥ रांका नदीधो ते अणकंपा आणे ॥ उणलेषे श्रो प्रतष धर्मोरे ॥ च० ५६ ॥ पेला रो धन खोस रांका नदेवे ॥ तिणमें मिश्र केहेनाहोरे ॥ तो उठगई मिश्ररी सरधा थे सोचदेषो मन मांहो रें ॥ च० ॥ ४७ ॥ पररो धन चोर रांकांन दीधो ॥ तिणमें मिश्र हुवे नाहोरे ॥ तो जाबक जीव हणी रांक पोषे ॥ अठेमिश्र कठे तिण माहोरे ॥ च० ४८ ॥ कोई चोरी करीरांका न पोषे ॥ कोई जीव हणी पोषे रांकोरें ॥ ईण प्रतष पापमे मिश्र कहे त्यारी ॥ सरधा मे छ पुरी वांकोर ॥ च० ४९ ॥ असतने मिषलो जांवक छोडणी तिण बोल्या बुडे जाय बहितारें ॥ जो मिश्र भाषा में मिश्र हुवेतो ॥ जावक छोडणी नही कहतोर ॥ च० ॥ ५० ॥ रांकाने पोषे घणा जीव हणने ॥ त्यानें चोरी होंस्या लागे दोयोरे ॥ ते चोरी त्यारे सरीर रीलागो ॥ जाव हणयारी हंस्या होयोरे ॥ च० ॥ ५१ ॥ रांकने परधन चोर देवे, त्यांने ॥ ऐक चोरी तणो पाप होयारे ॥ ए दोनु क्रतव करे अणकंपा आणी ॥ ने गया जमारो षोयोरे ॥ च० ५२ ॥ परनी चोरी कर रांका न देवे ॥ ईण क्रतव सूं जोबुडोरे ॥ तो हंस्या करने कु पात्र पोखे ते क्यूंवेससी नहो कुंडरे ॥ च० ॥ ५३ ॥

कहे अराधवी बीरोधवी मिश्र भाषा छे ॥ ते भाषा छे धर्म अधर्मोरे॥ अराधवी जीतरो छ ऐकांत धर्म ॥ विराधवी सूं लागे पाप कर्मो रे॥ च० ॥ ५४ ॥ ईम कही २ मिश्र करणी थापे ॥ तिण करणी मे कहे धर्म पापोर ॥ ईम आंटी घाल छे सावज दान में ॥ करे मिश्ररी था पोरे ५५ ॥ च० ॥ ते मिश्र भाषा छे सावज दानमे ॥ तिण बोल्या बंध पाप कर्मो रे ॥ माह मोहणी कर्म बंधे तिण बोल्या ॥ तिणमें कोहां थी धर्मो रे ॥ च० ५६ ॥ अराधवी बेराधवी मिश्र भाषा कही ॥ तेतो बोलवा लेखे रे ॥ अठपाप धर्म रो कथन न चाल्यो ॥ तिणरो सूण जो भेद वीसेषोरे ॥ च० ५७ ॥ अराधवो कही छे सत भाषा ने ॥ ते पिण बोलवा लेख पोछाणोरे ॥ तेसाची भाषा छ सावज नरिबद तीण सावज मे धर्म मजाणोरे ॥ च० ५८ ॥ साची भाषा सावज तिणनें ॥ अराधवी कही बोलबोलेखेरे ॥ पण ऐकांत पाप बंधे तिण बोल्या ॥ तो मिश्र में सुढ पाप न देखेरे ॥ च० ५९ ॥ बिहार भाषाने कही छ जणेस्वर ॥ अराधवी बिराधवी नाहीरे ॥ ते पीण कहीछे बोलवा लेखे ॥ धर्म अधर्म लेखो नही थांहीरे ॥ च० ॥ ६० ॥ धर्म अधर्म लेखे तो बिहार भाषा ॥ अरा धवी बिराधवी जाणोरे ॥ निरवधने तो अराधवी जाणो बिराधवी सावजने पोछाणोरे ॥ च० ६१ ॥ जो मिश्र भावो धर्म अधर्म लेखे अराधवी सावज न पोछाणोरे ॥ बिराधोवी होयतो विहार भाषा बोलसी ॥ तिणने धर्म अधर्म नही कोईरे ॥ च० ॥ ६२ ॥ जो साची भाषा बोले धर्म रे लेखे ॥ थापे अराधवी कोयोरे ॥ तो साची भाषा सावज बोल्या ॥ ऐकांत धर्म जहोयोरे ॥ च० ॥ ६३ ॥ जो मिश्र भाषा मे मिश्र हुवेतो ॥ सत भाषामें ऐकांत धर्मो रे ॥ बिहार भाषा तो सुन होजाये ॥ बोल्या नही धर्म न पाप कर्मो रे ॥ च० ॥ ६४ ॥ ऐतो बोलवा आश्रीच्यारू भाषा ॥ अराधवी बिराधवी जाणोरे ॥ अठे धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो ॥ पनवणा सूं कर

जो पीछाणोरे ॥ च० ६५ ॥ सत असत मिश्रन विहार ॥ ऐच्यार भावा जिण भाखीरे ॥ त्याँमे असत ने मिश्रतो जावक छोडणो ॥ जोवो दसवी कालक साखीरो च० ॥ ६६ ॥ सत भाषा बीहार भाषा ऐतो सावज निरबद दोई रे ॥ तो सावज टाल न निरवद बोले तो पापन लागी कोईरे ॥ च० ६७ ॥ असतन मिश्रतो जावक छोडणो ॥ तिण बोल्या बोलया वुड जाय बहुता रे ॥ जो मिश्र भाषो से मिश्र धर्म हुवे ॥ जावक छोडणो नही कहतारे ॥ च० ६८ ॥ धर्म अधर्म आश्री चारू भाषा ॥ बोलवो नहीं बोलवा चाली रे ॥ सत वीचार बिचार न बोलणो ॥ असतने मिश्र सरब पालीरे ॥ च० ६९ ॥ नीसा बोले बंधे माहा मोहणी क्रम ते ऐकंत छ पाप क्रमोरे ॥ तो मिश्र भाषा बोले तिण मांहीं ॥ किण विध होसी पाप धर्मो रे ॥ च० ॥ ७० ॥ जो गोणनीस बोलामे ऐकंत पाप ॥ तो मिश्र भाषा में ऐकंत पापोरे ॥ केई मिश्र भाषा में मिश्र धर्म कहै छे ॥ तिण आगम दियो उथापोरे च० ॥ ७१ ॥ च० ॥

दुहा० श्रीजिण आगम मोहे ईम कह्यो ॥ धर्म अधर्म करणी दोय ॥ धर्म करणी मांही जिण आगन्या ॥ अधर्म करणी में अगन्यां न कोय ॥ १ ॥ धर्म अधर्म करणी जुई जुई ॥ ते कथ्य न खावे मेल ॥ जे मुढ मिथाती जीवडा ॥ त्याकरदी भेल सभेल ॥ २ ॥ चतुर व्येपारी विणजकरे ॥ जहर न अम्रत दोय ॥ मांगे ते वसत दे गिराहकने । पिण अवरनंदे कोय ॥ ३ ॥ विवेक विकल वेपारी हुवे ॥ तिण ने वसतरी खवरन काय ॥ जहर घाले अम्रत मझे ॥ अम्रत घाले जहर मंझार ॥ ४ ॥ त्याने वसतरी नोग पड़े नहीं ॥ ते घाले और रो और मांह ॥ ते नासकरे नोमी तणी ॥ तिम जाणो धर्म मो न्याय ॥ ५ ॥

ढाल ३ तीजी चतुर बीचार करी ने देखो।

जो कोई घृत तमाखु मिलजे ॥ पिण वासण रो बीगत न पाडे रे॥ घृत लेई न तमाखु मे घाले ॥ तो दोनु को बसत बीगाडे रे॥ च० ॥ १ ॥ ज्यु ईव्रत रो दान व्रत माहो घाले॥ पिण विस्तारो विगत न पाडरे॥ विरतरी बीगत पाख्या विन वाहगा लुजे चित दान पुकाररे॥ च० ॥ २ ॥ श्रावक सांहो मांहो जीम जी मावे॥ ते ऐकांत आश्रव जाणो रे॥ तिन मांहि धर्म परुपै अग्यानी ॥ ते पुरा छे सुढ़ अयाणो रे॥ च० ३ ॥ जीभरो ओषद आंख्या मे घाली आंख रो ओषद जीभ में दाख्यो रे॥ तिण री आंख फुटी ने जीभरि फाटी दोनु इछो खोय नाख्योरे॥ च० ४ ॥ ज्यु अधर्म रो काम धर्म में घाल्यो॥ धर्म रोकाम अधर्म में घालेरे॥ ते दोनु ही बिध बुडा अग्यानी॥ दुर्गत मांही चाले रे ॥ च० ॥ ५॥ सावज किरतब में धर्म जांणि॥ निरवद म पाप जाणेरे॥ सावज निरबद में नही समझे॥ अग्यानी थका उधी ताणेरे॥ च० ६॥ सचित अचित दीया कहे पुन सूध असुध दीया कहे पुनोरे॥ वले पुन कहे पात्र कुपात्र न दीधो॥ ओमत जावक जबूनोरे। च० ७। पात्र कुपात्र दोनुने दीधा॥ पुन कह कह छे कर करताणोरे॥ तिण पात्र कुपात्र गिणया सरीषा। आ पाषंड यारी वाणीरे। च० ८॥ कुंडा धर्मी कुंडा वेस जीमें जब॥ भेला जी में ऐकंण कुंडा मांह्योरे। जात कुजात न चोखो अचोखो। त्यांरी भिन न राखे कायोरे। च० ९। ज्यु पात्र कुपातर सरब ने दीना पुन कहे ऐक धारोरे॥ ओमत कुंडा पंथी जीम जाणो॥ किण सुं भिन नें राखे लीगारोरे॥ च० १० ॥ कोई डावो हुवेतो कुंडा पथ्यो ने न्यात जात संजाणे भीष्टोरे॥ ज्यु कुपात्र दान में धर्म कहे छै॥

त्याने ग्यानी तो जाणं मोथ्या दीष्टोरे॥ च० ११॥ श्रीवीर कह्यो सू पात्रने दीधा धर्म न पुन्यदोनु होयोरे॥ कुपात्र दानमें धर्म कहे ते गयां जमारो खोयोरे॥ च० १२॥ श्रावकन सूपात्र कहीने॥ तिण पोथ्या मे धर्म बतावेरे॥ इसडी परुपणा कर २ अग्यानी। भोला लो काने भर मावे रे॥ च० १३॥ श्रावकने ऐकंत सूपात्र कहछे॥ इस डा बोले छ सुढ अग्यानीरे॥ त्याने श्रावक पिण इसाहिज मीलया॥ त्यारी सरधा साची कर मानीरे॥ च० १४॥ आंधाने आंधो आय मील्यो॥ जब कुण बतावे, बाटोरे॥ ज्युं श्रावक न ऐकंत सूपात्र थापे॥ त्यांरे अकल आडो आयो पाटोरे॥ च० १५॥ श्रावकने ऐकंत सूपात्र सरधे॥ तेतो उठी जठा थी फुठोरे॥ निज गुण अवगुण मुल न सूजे। त्यारी होये नीलाडी फुठोरे। च० १६। श्रावक सूपात्र बरता करने। ईब्रत लेखे जहररो बटकोरे॥ ईब्रतरोईणरे काम पडे जब करेछकाया रो गटकोरे॥ च० १७॥ श्रावक सूपात्र बरता सूंहुवे.। ईब्रत लेखे अधमो जाणोरे। ईब्रत रो ईणरे काम पडे तो॥ छ कायारो करे घमसाणोरे॥ च० १८॥ श्रावक असली सेवे सेवावे, बले परणीज न परणावेरे॥ तिणने ऐकंत सूपात्र थापे॥ ते गालारो गोला चलावे,रे॥ च० १९॥ कोई श्रावकरे हुवे असवी हजारा खास वांन पासवांन अनेकोरे॥ ऐहवाभोगी भमरने सूपात्र जाणे। त्यांरे मुलमें नही बिवेकोरे॥ च० २०॥ हिंस्या भुठ चोरी मैथुन परिगरो मेले बिबध प्रकारोरे॥ ऐहवा श्रावक न एंकत सूपात्र थापे। त्यारे मत मांही पुरो अंधारो रे॥ च० २१॥ श्रावक लाखा बीधा खेती वारेछ कोड मण काढ अणगल पांणी रे॥ त्यांने ऐकंत सूपात्र कहछे आकुदसंणा री वाणीरे॥ च० २२॥ दमडा काजे पाघडा पडे पडावे। आडमी साहमी पजारां चलावे,रे॥ ऐहवा श्रावकने ऐकंत सूपातर कहितां। बीकलाने लाज न आवे,रे॥ च० २३॥ कजिया खोर वधो करावगीया मन आवे, ज्युं

वोखै भुंडारे। मंमा चचारी गाल बसरही मुंहडे। ऐकंत सूपात्र कही काय वुडारे ॥च० २४॥ केई निरलज नागरा फाटाबोले। दीसे उघाडे कुपात्र रे। त्यांने ऐकंत सूपात्र कहके। त्यांने पिण कहीजे ऐहवा सूत्राचरे ॥ च० २५ ॥ कोई दगा दगोरे बीणज करके। कपडा दिक नग वेच वदलावे.रे ॥ त्यांने ऐकत सूपात्र कहीने। विकलाने विकल रीझावे.रे ॥ च० २६ ॥ आगे मोटा २ श्रावक हुंता जीवा दिक नव तत्वरा जाणोरे। रण संग्राम चढता तिण काले। घणां मिनषारा कीया घमसाणोरे ॥ च० १७ ॥ ऐक कागा दिक मारण रा त्याग कीया। ते श्रावकरो पांत माह्योरे। सावज काम बीजा सगलाइ। कुपांत्र मांही ताह्योरे ॥ च० २८॥ श्रावक ने सूपात्र किण न्याय कहीजे। किण न्याय कहीजे असंजती कुपात्ररे। सूत्र मांही जोवो भव जीवां। हीया माहि राखो जेम खातररे ॥ च० २९॥ सूयगडांग अध्येन अठारमें तीन पष तणो बिस्तारोरे। धर्म अधर्म मिश्र पख तीजो। त्यांरो भेद छ न्यारो न्यारोरे ॥ च० ३० ॥ सरवबर तानें धर्म पख कहीजे ईव्रतीन अधर्म पष जाणोरे। वले श्रावकने कहाजे विरती ईव्रती। पिंडत वाल दोनु पीछाणोरे ॥ च० ३१ ॥ श्रावकने वरता करने संजती कही जे गुण रतनारो खाणारे ॥ व्रत आदरता ईव्रत रहीते ऐकंत अधर्म जाणोरे ॥ च० ३२ । श्रावंकरो॥ खाणो पीणो न गहिणो। ईव्रत मांही घाल्योरे तिण माही धर्म कहे छ अग्यानी। खोटो मत तिण झाल्योरे ॥ च० ३३ ॥ पांच इंद्री मोकली मेला पाप कहे त्याया पिंण लाग्यो पापोरे। पाच इद्रारी वीस वीषेके। सेवाय्या पाप कह्यो जिन आपोरे ॥ च० ३४ ॥ श्रावक रीरस इंद्री कोई पाषे। विषे सेवांरे ते वीसीरे। तिण मांही धर्म परुपे मिथ्यातो ।ते वुडा छे विश्वावीसोरे ॥ च० ३५ ॥ कोई श्रावक ने असणा दिक देवे। ते असयंती पणां मांह्योरे। असंजतीने दान देतिंणरा। आछाफल कीमलागे तायोरे ॥ च० ३६ ॥ असंजतीमें

दान दीया में। पाप कह्यो ऐकंतोरे । भगोती सूत्र आठमें सतक छठेउदैसे कह्यो भगवंतोरे ॥ च० ३७ ॥ श्रावक ने दांन दे तिं याही करे प्रसंसा ॥ ते प्रसार्थरा अजाणोरे श्रावकरी असजंत इव्रत छे। ते हुडी रीता पीछाणोरे ॥ च० ३८ ॥ श्रावकने एकांत सूपातर कहवा । इसडो चरचा आणेरे। श्रावक एकांत सूपातर न हुवे तो । च्यार तीर्थ में क्युं जाणेरे ॥ च० ३९ ॥ अधर्मी जीव् च्यार गुंणठाणा । श्रावक पाचमें गुणठाणोरे। वाकी नव् गुण गणा साध रीषेसर। श्रे संसार में सरब जीव जाणोरै ॥ च० ४० ॥ केइ मुढ मती जीव अतंत अग्यानी । ते ईसडो चरचा अखेरै ॥ च० ४१ ॥ श्रावक एकंत सू पात्र न हुवे तो। च्यार तीर्थ कुण जाणेरे ॥ च० ४१ ॥ च्यार तीर्थ ने कही रतना रीमाला । तिण मालारो भेद न जाणेरे। गुण अव-गुण सरब माला मे घाले। अग्यानी थकाउधीताणे रे ॥ च० ४२ ॥ च्यार तिर्थ गुण रतना रीमाला । तिण मांहो इव्रत नइ लिगारो रे। श्रावकारा व्रत माला मांहो घाल्यो ॥ ईव्रत न काढ दीयी वारोरै ॥ च० ४३ ॥ ईव्रत ने एकंत अधर्म कहीजे। तीणं मा अलेक साठा २ नाओरे। व्रत मांहीने कोण वोध आबे। नगलाई सावज जाणोरे ॥ च० ४४ ॥ श्रावकने एकंत सूपात्र थापस। ईसडो चर चाल्याबेदे ॥ श्रावक एकांत सूपात्र न हुवे तो। देवलेक मे क्युं जावेरे ॥ च० ४५ ॥ श्रावक जावे, छ देवलोक मांहो। तेतो समकित व्रत सूंजाणीरे। ऐक समकित सूं पिण देवलोक जावे, श्रावकारेछे व्रत पचखाणोरे ॥ च० ४६ ॥ इव्रती समदिष्टी चोथे गुणठाणो। ते ऐकंत ईव्रती जाणोरे। ते पिण देव लोक माही जाव छे। ते सम-कित गुण पीछाणोरे ॥ च० ४७ ॥ श्रावक देव लोक मांहो जावछे। ते समकित व्रतमें गुणरे ॥ तिनरे पुन्य वंध छ सुभ जोग सूं। वली पाप कर्म करे दुरारे ॥ च० ४८ ॥ जे देवलोक जाव छे निरवद गुण सूं। अवगुणलेजावे दुरगत जाणोरे। ज्युं श्रावक पिण देवलोक

जाव छे। ते गुणरी वोहलताई जाणोरे । च० ५८। अभवि जीव ऐकंत मिथ्याती ते निश्चे कुपातर ताहीरे । ते पिण कष्ट तणे पर तापे। जावे, नोगरीवेक ताहारे । च० ५० । तेतो समदिष्टी साध श्रावक पण नाही। नवमीग्रेवेग जावे,रे । वले सिंनग्रासी गोसाला मतो। ते पिण वीमाणिक थावेरे ॥ च० ५१ ॥ वले कण्ण पखी तुरत सोंध्याती। ते आठमें देव,लोक जावेरे। देवलोक गया सूं सूपात्र हुवे तो ॥ जीव नही रूलतो अनंत संसारोरे ॥ च० ५२ ॥ बारा देवलोक न नवग्रेवेक मांही जोव गयो अनतो बारोरे।। जो देवलोक गयाँ सूपात्र हुवेतो जीव नही रूलतो अनंत संसारोरे। च० ५३। सम दिष्टोने सूपात्र कहीजे। ते समकित व्रत सूं जाणोरे ईव्रत सावज कामा करे तिण सूं। ऐकांत कुपात्र पिछाणोरे च० ॥ ५४ ॥ वले सूपात्र सम दिष्टी न कहीजे समकित ने ग्यान सूं जाणो रे ॥ ईणरी सावज क्रितब कीधा ते कुपात्र पणा में पिछाणो रे ॥ च० ॥५५ ॥

इति श्रीचतुर वीचार की ढाल तोनुं संपूर्ण ।

श्रीचंद्रभाणजी क्रत पचीस्या लिख्यते

॥ अथ श्रीक्रोध पचीसी लिख्यते ॥

भवियण हो २ क्रोध कदेय न किजये ॥ क्रोध अग्नरी झाल हो। भ० करूं पचीसी क्रोधरी सुंण जो सुरत संभाल हो। भ० क्रो० १ ॥ पीजो रुई होवे जेह में ॥ अग्न चीणगारी ऐक हो। भ० पडीयां वाले पलक में ॥ ईम गुणवाले अनेकहो ॥ भ० क्रो० २ ॥ क्रोध कीयान हुवे कदे। आछी वात रो अंस भ० घरमें

दुख व्यापे घणो ॥ बंधे करमांरो बिसहो ॥ भ० क्रो० ३ ॥ अइइर झला हल अती बुरो ॥ खाधा मरे ऐक वारहो । भ० क्रोध सुं बहु बिरयामरे । खाय अनंती मारहो । भ० क्रो० ४ ॥ प्रीत पुराणी क्रोध सूं । बादल जेम बिलाय ॥ भ० फेर मीलाप हुवे नइ । पीछे घणो पीछताय । भ० क्रोढो ५ ॥ दासो मींष देपलो । खदासु हुवा खुवार । भ० मरकटने महीपत तणो ।। पुरो हुवो प्रवार ॥ भ० क्रो० ६ ॥ दिपायण दुवारका दही । क्रोधी कोप अपार । भ० तपस्या बहु बरसांतणो ॥ छिनमें कीधीछार ॥ भ० क्रो० ७ ॥ षंधकरिख क्रोधे करी बाल्यो देस न जोय । भ० उतम तप जप आपरो ॥ पोणमें दीधो षोय । भ० क्रो० ८ ॥ गोसालो भगवंतरो । बोलावे अणंगार । भ० जीआ खासी जोंण कह्यो । भगवती सूत्र संस्कार । भ० क्रो० ९ ॥ क्रोध कीयो नीजकंत सुं ॥ नामे अचकानार ॥ भ० बेची,बवर देश में ॥ पामी दुख अपार हो ॥ भ० क्रो० १० ॥ कोड पुरब तपस्या करी ॥ देस उणो दीन रात भ० षिण में षोवे क्रोध सूं ॥ मरने दुरगत जाय हो ॥ भ० क्रो० ११ ॥ धोग क्रोधी जीवने ॥ फीट२ करे बहुलोय ॥ भ० वाला पिण वयरी हुया । देवे जन्म डबोयहो ॥ भ० क्रो० १२ ॥ क्रोधीरे रहबो करे । जोण तीण सेती बीरोध । भ० बोधन आवे क्रोधसुं ॥ क्रोध सु जावे बूध हो ॥ भ० क्रो० १३ ॥ क्रोधसुं वाजे कूंजड़ो । क्रोधसुं बाजे चण्डाल । भ० क्रोधसु कूल लाजे घणी । क्रोधसुं मरे अकाल हो ॥ भ० क्रो० १४ ॥ क्रोधसूं बीस षाइ मरे कटारी तरवार भ० फांसी खाय कूवे पड़े । पलक में हुवे षुवारहो ॥ भ० क्रो० १५ ॥ माथो फोड़ अपचो करे ॥ बोले आल पंपाल ॥ भ० क्रोध करिने उछले क्रोधसूं मारे बोलहो ॥ भ० क्रो० १६ ॥ क्रोधी नर क्रोधी करे । सींह चीतो हवे साप ॥ भ० दुष्टीने मारे देषने ॥ क्रोध तणे प्रतापहो । भ० क्रो० १७ ॥ चारीतिया क्रोधे चढ़े ॥

काह्यो ग्यानीवाल ॥ भ० उतराध्येन मे उपमा । दीधी दीन दया। लहो ।भ० क्रो० १८॥ लाठी वाजे क्रोध सु । सिर जायछे फुट फूट ॥ भ० राजे रोकि रावले । दोनु लेवे घरलुंट ॥ हो० भ० क्रो० १९ ॥ क्रोधी नर उलखावणा ॥ कुटोजेठोड ठोड ।भ० क्रोधीसु मेलप कीया । लागे भगड़ा भोडहो ॥ भ० क्रो० २० ॥ क्रोधी कूढर दुषामरे ॥ उठे घटमें आग भ० क्रोधीने सुष हुवे नइ । क्रोधने दुष अथाग हो० ॥ भ० क्रो० २१ ॥ क्रोध अगन बुभावया । नाखो षीम्यानो नीर । भ० सूषपामे ज्युं सासता ॥ भाषगया महावीर हो । भ० क्रो० २२ ॥ आगम माहो अनेक छे । क्रोधतणां अवदात ॥ भ० क्रोध तजीने षीम्या करो । सोबाता एकबात हो० । भ० क्रो० २३ ॥ संवत अठारे सेतसठे । वदनवमी सोमवार । भ० आसूमांस आणंद सूं ॥ वोल्या वचन बीचार हो ॥भ० क्रो० २४॥ चुरु पुर चावो घणो । बणीहद मे बिसाल । भ० रिष चंद्रभाण हडे सने जोडी जुगते ढाल ।भ० क्रो० २५ ॥ इति सपूर्ण ॥—

अथ मांन पचासी लीष्यते ॥

मांन पचीसी करवा मंन में । आणंद इधको आयो । सूत्र न्याव भलो सोजीने । जोडो जुगत लगायो । (हारे ववेकी बंदा । मांन न कारये कूडा कारमो हो । १ ।) काचो काया काची माया । काची भरम भुलाया । काचीमें तु राचर ह्यो पाकी कदेयन पाया । हा० २ । हस्ती की अंबा वाडी होदे । चढ चकडोला चलतो । पालखीया खासापर वेठे । रहे गुमानो हलतो । हा० ३ । चपल तुरंग पर चढकार चलतो । मंनरंग करते मोजा । काल जोरावर

लेगयो पकडा । रहे देखती फोजा । छ० ४ । धुम साठाइ सेवाषाते ज्याक्षा भोजन जुगति । अभीमानी नर पापडदेसुं । फिर २ छाणा चुगते । छा० ५ । सत भोमी महलांमे सोवते । मंनरंग लीला करते । काल जोरावर लेगयो पकडी । रहे कुटंबी झुरते । छा० ६ । राग छतीसुं हुंता खडा मंनमे आंणद धरते । काल जोरावर लेगयो पकडी । रहे गुमानो छलते । छा० ७ । जरी वाफना सेला फौंणा । मोत्या भारजमरते । काल जोरावर लेगयो पकडी । रहे गुमानो चलते । छा० ८ । मांन २ घमबोइ भारी ॥ वागां मांही भौलते । सूध साधा की सेवा नइ कीधी । रहे गुमानो चनते ॥ छा० ९ ॥ वांकी २ पगडी बांधी घटमें आट घणेरी ॥ तरुंण पणे मे काल जता खडो ॥ हुइ राखरी ढेरी ॥ छा० १० ॥ मुलक खजाना माया मेरी । करतो मेरी मेरो । अभेमानी नर चल्या अकेल्या । हुई राष कोठेरो ॥ छ० ११ ॥ लाषां दलका हुंता लाढा ॥ गढ पर लेता घेर अंग जाणो लागो अंण चीता ॥ हुइ राषको ढेरी ॥ छ० १२ ॥ मुगढायंग सतर में चाल्यो ॥ ससो पाल राजानो ॥ अंजस माधव, सुंअडोयो ॥ पीछे घणो पीछतानो ॥ छा १३ ॥ घाडीपापड धुरस्यो देषी ॥ मंनमे अंजस आयो ॥ सुखं धरकी माया खोइ पीछेघणो पीछतायो ॥छ० १४॥ काली आदे दसे कूणंकरा ॥ भाइ वडा भोपालो ॥ सहीपत चेडे हाथा मारयो । मांनीनर सछ रालो ॥ छ० १५ ॥ रावंण पापी लेगयो वंन सुं ॥ रघुपत केरीनारी । मंनरी हुंसरही मनमे । लोकमंण लीधोमारी ॥ छ० १६ ॥ काली नागज ग्रभज कीधी ॥ नरसंग लीधो नाथी ॥ मोटा दोय मलाने मारया । सबला जमरा साथी ॥छ० १७॥ जरासींध जोरावर जोधो ॥ कंसवडो अहंकारी ॥ पर षोतमजो पकड पछाडया ॥ नइ सरी गरजलीगारी ॥ छ० १८ ॥ अभीमानी नर चाले षाटी ॥ मनमे मगजन मावे ॥ गुणवंतारा षोगन गावे ॥ आलो जन्म गमावे ॥

छ० १९ ॥ अभीमानी नर बोले ऊंधो ॥ सुलटो कदेयन आवे ॥ पथर थांभे ज्युं नमे न पापी ॥ दुरगत रा दुष पावे । छ० २० । वीनो न जाणे नर अभिमानी अविने सांही उलज्यो ॥ अभिमानी नर भण ने वडे । सवलो कदेयन सुजे । छ० २१ ॥ अभिमानी नर कहेन आछी वातां घर गमावे । नीर्अभिमानी पडेजनीचो पोछे घणो पोछ तावे । छ० २२ । मांन कीया सुं औगण मोटो । मांन तज्या गुण भारी । मांन तज धारे नरमाई । धन २ ते नर नारी । छ० २३ । संवत अठरेसे तेसठबरसे ॥ वुधवार दसरावो । मांन पचीसी मांनत जणने । कोधो अधीक उछावो । छ० २४ । वणी हद चुरमें वासो चीत धरने चोमासे । रिख चद्र भांणाजी भणे मन रंगे । सुणया पातक न्हासे छ० २५ इति संपूर्ण ।

अथ भजन पचीसी लिख्यंते

नेणा न नीहाले हो राणो देवकी रे । ऐदेसी

सूत्र अर्थ सूभ सोधनेरे । अणंद थयो मंन आणी । भजन पचीसी जोडु भावसू रे । करवा क्रोड किलयाणी । भजन पचीसी जोडु भावसू रे । १ । कारज जगरा सबही कारमारे । साचो धर्म संसार प्रभु भजन करो नित नेम सूंरे । निरमल मन नर नार । भ० २ । अरिहंत भगवंत प्रभु ऐकछे रे । जग नायक जग भाण । नाम जुदा पिण अंतर को नही रे । समजो चतुर सूजाण । भ० ३ । काम क्रोध दोनु अलगा करो रे वीनो करो वुधवंत । भगत जुगत नित रुडा भावसूं रे । भजो सदा भगवंत रे । भ० ४ । मोरा नेह जिम मेह ईधक थो रे । ग्यानीरे मनग्यान । सीलवंती रीमनस्या

सील में रे। भजये ईम भगवान । भ० ५ । लजवंती रीमनरा लाज मेंरे। सूगण रे मन संत । त्यागी बैरागी मन त्याग मेंरे। जिम भजये अरिहंत । ६ । ऐला पुत्र उंची वंस उपरे रे। ध्यायो निर्मल ध्यान। पाचु ईदरी वसकरी पामीयी रे.गिरवो केवल ग्यान। भ० ७ । चित सुध सूली उपर चोरटे रे। निश्चल गुणयो नवकार। आतम वसकर लोधी आपरी रे। सुरपदवी लही सार । भ० ८ । आठु जाम भजो अरिहंत ने रे। मोह मच्छर सब छोड। लुल २ धरणी सीस लगायने रे। जतने बेकर जोड। भ० ९। निकेवल भजन गरज सरे नहींरे। दया धर्म सुं दुर। सत दत सील संयम सेवे नहींरे। सात विसन ने कूर। भ० १० । दया सत दत्त चोखा आदरी रे। सेवे संयम सील । भजन करे धारो बातर भली रे। लहे सूर्ग री लील। भ० ११ । प्रभु भजये पातक दुरा तजे रे। वरते मन री वंक । उतम गुरु री राखो आसता रे। देवी सुगत रा डंक। भ० १२ । प्रभु भजन कीया रीपासीये रे। प्रबल रिध परवार। बिध २ मंगल होय बधावणा रे वारणे घूमे वार। भ० १३ ॥ जुठा धंधो करे कुजीवडा रे ॥ जगत सूपनो जाण॥ प्रभु भजन बिन पीसतावसीरे॥ आगे मुढ़ आयाण ॥ भ० १४ ॥ पर घर पीसे पारका पीसणारे॥ आंणे ईंदण छाण ॥ दुखी दलद्री होय दोभाग यारे॥ पापतणा प्रमाण ॥ भ० १५ । कोरी मालाफेरे काठनी रे। जेसे दरजाप। बाहर दीसे वुगला सारसा रे। पिंड में भारी पाप । भ० १६ । नवंकरवालो लीधी नेमनीरे॥ ठीक नई चित्त ठाम॥ निश्चे गुन तेतो जाणे नहींरे॥ किन बिध सीजे काम। भ० १७॥ भोला नर देखी भुले घणारे॥ अरिहंत री आकार॥ तिल मात्र गुन नंहीतेहमेंरे॥ तोरे न तारण हार॥ भ० १८॥ साचा तिर्थंकर त्यारे सहीरे॥ सारीन्याव् समांन॥ औगण भरया केम उधारसीरे वीचार करो बुधवान ॥ भ० १९॥ नीगुण सूगुण मुर्ख जाणे नहीं रे।

नहीं व्रत नंही नेम ॥ बिदके साधू सूं बुध बाहरारे ॥ जंगली हिरण जेम ॥ भ० २० ॥ मार्ग देखी भीडके मीरगलो रे । करे बीचार न कीय । सबसं हरखे भिडके साधसूं रे ॥ होणां सूं ईधकाहीय ॥ भ० २१ ॥ ताणि पखकुडी कुगरा तणी रे ॥ ठोठ भटारक भंड । खरा गुरा सूं मुंढ आढा खडे रे ॥ क्रोधीसूं घाले लर्कांठ ॥ भ० २२ ॥ संगत कीजे सूगणा साधरी रे नीगुणसू, मंजे नेह ॥ अजर अमर सूख पामे सासता र ॥ रहन दुख रो रेह ॥ भ० २३ ॥ संम्बत अठारे सो ईकमठ जाणीये रे ॥ बद वोरस रवि वार ॥ आसू मास घणा अणंद सूं रे । सूत्त कथा पट सार ॥ भ० २४ ॥ सजन पचीसी जोडी भाव सूं र ॥ सुहाई सूभ ठास ॥ रिख चंद्रभाणजी सार रागमें रे समझा साजे काम ॥ भ० २५ ॥

। अथ सूवध पचीसी लीख्यते ।

(अशोक मंनअचरीज थयो ॥ एदेशी) सूवध पचीसी सांभलो ॥ एकन चीत लगाईरे ॥ सूवधी सूरंगा संचरे ॥ कूबध महा. दुषदाइ रे ॥ सू० १ ॥ सूवधी समजे सतावसुं ॥ कूवधी समजे कमोरे ॥ नेम व्रतधारे नही ॥ जोगी बूंटा जे मोरे ॥ सू० २ ॥ कूवध कदेयन कीजये ॥ कूवधज आवि आडीरे ॥ कूवध करीछी स्याळये ॥ कांधे वही कूहाडीरे ॥ सु० ३ ॥ कुवध करी बीरारणी डीकरे ॥ नाग न लाठी वाहीरे नागज टीरी मरगयो कूवध जआडी आइरे ॥ सू० ४ ॥ जोगी कूवव करीघणी ॥ राजा ने भरमायो रे ॥ कुमरी हाथ आई नही ॥ बांदरा तोडोने खायोरे ॥ सू० ५ ॥ कूवध करी थी डुंवडे ॥ जाच्यो दंलद्र जासीरे ॥ गहणो हाथ आयो नई ॥ पडी

गला मैं फांसोरे ॥ सू० ६ ॥ सूवधी चित प्रधान थो। साचो समगत पाइरे ॥ प्रदेशी प्रतबोधीयो ॥ सीवपुर दीधो साइरे। सु० ७। जित सत्रु राजा भणी। सूवधी सुंहते समझायोरे। आठुंइ कर्म खपाय ने। मोषतणा सूष पायोरे। सू० ८। जंबु कुमार घणी जुगतसुं। समझाई आठुं नारारे। प्रभवादीक त्यारी या। लीधो संजम भारोरे। सू० ९। साल भद्रजी री बेंन ने। धने जी समझाई रे। चरित्र लिधो चुंपसुं। छती रीध छीटकाइरे। सू० १०। आद जिणंदजीरी डिकरी। ब्रामी सूंदरी जाणोरे। बाहुबल प्रत बोधीयो। पामी पद निरवाणोरे। सू० ११। सूवधी सोनो सोलमो। सीतल चंदन जेमोरे। सूवधो पारस सारसो सूवधी सुंकरो प्रमोरे। सू० १२। कूवधी काला नागसो कूवधी खेर आंगा रो रे। कूवधो कार संसारसो। कूवधी संग निवारोरे। सू० १३। सोलवंता साधू सती। सीखावे सूध सीलोरे। उजल मन अराधी याल है सुगतरी लिलोरे। सू० १४। कूवधी कूगरु कूसीलया। षोटी बात सीखावेरे। सील खंडे भंडे लोक मैं। दुरगत री दुष पावेरे। सू० १५। भेषलियो भगवान रो। करे अकारज मोटो रे। उतम नर अलगा रह्यो विस ज्यु जाणे षोटोरे। सू० १६। कूगरु संगत नहो कीजयै कूवध हियामैं घालेरे। नाषे मिथ्या जालमें। साधांरी संगत पालेरे। सू० १७। कूवधी कुवध करे घणी कूड कपटरो चालोरे। कूवधो रो संग न किजयै। कूवधी रो मुहडो कालोरे। सू० १८। कूवधी कुलरो षय करे। कूवधी गांम उजाडेरे। कूवधी घर गमायने। कूवधी देस वीगाडेरे। सू० १९। सूवधी कुचलकरे नही। रेत ने नही संतावेरे अनीत मुल करे नइ। दीन २ सोभा पावेरे। सू० २०। सूवधी सेवेसाध ने। चरचा ग्यान री बुझेरे। कूवधी सेवे कूसाधने। साचो पंथ न सुझेरे ॥ सू० २१ ॥ उंठ बलद गज आदमी। दासी दास

कोई रे । कूवधी दुष पांमे घणो । सूंबधी ने सुष होइरे । सू० २२ ॥ कूवधीने दुख कथा घणां ॥ सूवधो सुं सुष सारोरे । आछो हे सो आदरो ॥ निरणो कर नर नारी रे । सू० २३ ॥ सवत अठारे से इकसठे ॥ सूद पांचु मिगसर मासोरे । सुक्रवार सुहामणो ॥ ढाल करी प्रकासो रे ॥ सू० २४ ॥ सूवधी पचीसी जोडी सही ॥ सूहाइ सांवल बासोरे । रिष चंद्र भाण रुडे मने ॥ आंणी इध काइंलासोरे । सु २५ ।

इति संपूर्ण ।

॥ अथ धर्म पचीसी लिष्यते ॥

। (विणमें बासोरे विठल वारु तुमने एदेशो) प्रेम धरोने करुं पचीसी । आणी इधक अपारो । चुपधरी सुणज्यो चीत. चोखे सखरी छे तंतसारो ॥ करणी कीजेरे सदगुर सोषडली । एहथी मीठीरे नहीं छे साकर सुखडली । १ । आरज देस उतम कूल पायो नीको डील नीरोगों । पांचु इंद्री पुरी पाइ सखरो गुर संजोगो ॥ क० २ ॥ सास बास धन जोवन संपत । जल विंदवो जोम जाणो । सेठ सिन्धा पत छोड़ चल्या सब । नहीं कोई थिर थाणो । क० ३ ॥ मात पीता सुत बंधव भाई । माया मोटी जालो । त्यामे फसिया रहे अग्यानी । आगे दुष असरालो । क० ४ । साचो समकत धारो सेंठो । अरोहंत देव अराधो । ग्यान ध्यान में रहोज सेंठा । सेवो निग्रंथ साधो । क० ५ । दया भाव राषी 'नित दीलमें ॥ बोलो इम्रत वाणी । अग्या मांहो धर्म अराधो । निश्चे मोख निसानी ॥ क० ६ ॥ दान सुपात र चितर

दोजे। आणो अधिक उछाहो। किरपण भाव कदेयन कीजे॥ लीजे नरभव लाहो॥ क० ७॥ संगम न भव पोरसाधुने दिधारा फल देखो॥ साल भद्र पामी सुख संपत॥ वाद सुखविसेषो॥ क० ८॥ रिखभदेवजीनेइडोरोते॥ तेदान इषु रस दीधू॥ स्रोयसजी काउ साखा॥ लाहो अधीक लिधो॥ क० ९॥ दांन दियो सुंदल दुग्हासे। दान दोलत होइ। घरमें दोलत हुवे घणी री॥ कुसो न रहे कोई। क० १०। सोल रतन पालोमन साचे॥ सोले कारज सीजे॥ परवार सहुने लागे प्यारो॥ राव रंक सहु रीभे क० ११। सोल सीरोमण साचो सोता॥ लेगयो रावण लंका। कलंक उतार्‍योधोज करीने॥ दोधा जसरा डंका। क० १२। सेठ सुदरसण हुयो सुधियो। सोभा चाढी सासण। पंचा मांहो हुवो परगट। सुली भयो सींघासन। क० १३। निरमलसोले दुरगत न्हासे॥ सील बडो सिणगारो। सरब बरता में। सोल सीरो मेण। मिले सुगत मंजुारो॥ ल० १४। कोड भवारा क्रमज कोधा। तपस्या किध्यां तुटे। खरो षजानो तपरो खोल्यो। लाडो इधको लुंठे। क० १५। च्यार हित्यारो करणज वालो। दिढि प्रोहारो देषो। पुरो तपस्या करीने पास्यो। आवो चल सूष वीसेषो। क० १६। हर कसीजी चंडाल जहुंता। तपसी भारी तेहो सूरनर सेव करे मंन साचे। निसदोन अधीक सनेहो। क० १७। तपस्या किधा सुखलहे ताजा॥ तपरे नहो कोइ तोले। तपस्या भव सायर थो त्यारे। बितराग इम बोले। क० १८। भव अनंता भाजे भावनासु। भलो भावना भावो। भव सायर तिरवाने भवीयण॥ निको भावना भावों॥ क० १९॥ मरुदेवा. रिषभजी री माता॥ भलो भावना भाइ॥ षीणमें आठु कर्म षपाया॥ परम उत्तम गत पाई॥ क० २०॥ आरीसा भवन में उतमे। भरतेश्वर भोपालो। भलो भावना केवल पाम्या। चूखा कर्म चंडालो। क० २१॥

धावं राव सगला मै भारी भाव विना भगवतां भाख्यो ॥ नइ हुवे निस्तारो ॥ क० २२ ॥ समता रस चाखो चित सधरो ॥ ममता ठगनी मारो ॥ दोस रोस सब तज दो दुरा ॥ पांमो भव जलपारो । क० २३ । धर्म पचोसो हरष धरोने । अंग सूं आलस टालो । रिष चंद्रभाण करीमनरंगी । रुढी ढाल रसालो ॥ क० २४ ॥ संवत अठारेसे इकसठे । छठ भादु रवि वारो ॥ परगट किधी धर्म पचोसी । सूहाइ सूषकारो । क० २५ ॥

इती संपुर्ण ।

॥ अथ दान पचीसी लीख्यते ॥

(उतपत जोय जीव आपणी एदेसी)

दानपचीसी दीपती ॥ आषु अधीक आणंद । जथा तथा घणी जुगतसुं । सुणता सुख कंद । दा० १ । दौलत बधे दानथी दान दालिद्र दुर । सूर नर पदवी संपजे । पामे मोख्य पंडुर । दा० २ । दानतणा तीन भेद छे । धुरसू पात्र दान । दान सूपात्र दुसरो । तीजो अभय पीछाण ॥ दा० ३ ॥ सूत्र अरथ सोखाय दे ॥ . बाणी चरचा वखांण । समकित चारीत्र दे सही । प्रथम दान पीछाण ॥ दा० ४ ॥ सील समकित कर सोभता । - पाप तणा पचखाण । सुभ मनदेवे सुजती । बीजो दान वखाण ॥ दा० ५ ॥ जीव गीणे आपण जीसो । दुख काइ न देह । पाले दया घणा प्रेमसूं । अभय दान छे ऐह । द० ६ ॥ दान सूपात्र री कहुं । विध २ सूं विसतार सुरत लगाई सांभलो आलस अल्गोवार । दा० ७ । मैदो खांड

घृत मोल्यां। सोरी हुवे श्रीकार। घेवर आट चोज्या घणी। सबलो हुवे त्यार ॥ दा० ८ ॥ चित बित पात्र दोनु मोल्यां। देवे सूधदान। सूख सम्पत बहु सम्पजे। भाख्यो भगवान। दा० ९। पातर कुपात्र परखने। देवो सूध दान। पात्र कुपात्रमें फेर छे। सूण ज्यो धर-कान। दा० १०। सुपात्र ईम्रत सारखा। कुपात्र बिस खाण ॥ सबने जाणि सारखा। तेतो विकल समांन। दा० ११। घास गउनें घाल्याासखरो दुध दे सोय। पायां दुध पनग नें। हलाहल विष होय। दा० १२। सुपात्र गउ सारीखा। सबने सुखकार। कुपात्र काला नागसा। दुरगत दातार। दा० १३। स्वांत बूंद पडे सीपमें मोती हुवे बहु मोल। बिष धर मुखमें बिष हुवे। हणे प्राण अमोल। दा० १४। आंबा बिरखने सींचया। आम्बा लागे अनेक। सोच्या पेड़ धतुर रो बिरवा फल बोसे क। दा० १५। सुपात्र आम्बा सारिखा। आपे सुख अपार। कुपात्र धतुरा सारिषा। दुष्टी दुख आकार। दा० १६। दान सुपात्रने दीया। आगे बोरया अनन्त घोड़ासा प्रगट करूं। सुण ज्यो धरखन्त। दा० १७। आदेसर अरिहन्तने। आख्यो रस ईख। श्रेयांसकुमार सुजती। किध्यो मूगत नजीक। द० १८। संख राजाने जसोमती। दीधा धोवण दान रिठनेमो राजा हुवो। पास्या मोख नोधान। दा० १९ ॥ बलभद्र साधूभणी दीयो दान सूतार ॥ सुरग पांचमें संचरयो। जासी मूगता मंझार। दा० २० ॥ सालभद्र सुख सम्पदा। पामी दान प्रमाण। सुर्ग बाईसमें संचरयो जासी नीरवाण। दा० २१। सुमुख सुदत साधने ॥ दीयो दान निरदोष। कुमर सुबाहु ते हुवो। जासी सीव मोख। दा० २२। दाम हजारा खरचीया न सरी गरज लोगार। दान सुपात्र दोहेलो ॥ आतमरो आधार। संमत अगर ले सठे। सातुं सूक्रवार। बद वेसाखे दानए। आख्यो ऐ ईधकार। दा० २३। फतेपुर घणो प्रेम सूं। जोडी गाथा पचीस। रिख चंद्र

माण कडे मने। पुरी मनरी जगीस। दा० २४। ईति श्री दानाधिकार दान पचीसी संपुर्णम।

अथ सील पचीसी लीष्यते ।

(नेणाने नोहाले हो राणी देवकीरे एदेसी)

सील पचीसी भल जोडुं सहीरे। आणी मन उछरंग। चितल गाई सुणज्यो चुंप सुरे। आलस छोडी अंग। सील पचीसी सुभ मन साभलोरे। १। ऐ आकणी। सीलव्रत सबही व्रता सीरेरे। सील वडो सीणगार। सीलव्रत त्यारे भव सींध थीरे। सील माहा सूख कार। सी० २। सील रतन चिंतामणि सारिषो रे। सारी न्याव समान। सुर तरु पारस ज्युं निश्चे सहीरे। भाख गया भग वान। सी० ३। वीजेय सेठ घरे नारी वीजयारे। सेंठो पाल्यो सील। दोनुं पच्च री अतिही दीपतीरे। लीधा मुगत री लील। सी० ४। अमर कुंवर सुर सुंदरी एकलीरे। मुकी दीप मंजार। इधका भारी संकट उपनारे। अडिग रही अपार। सी० ५। चंपा पोल उघाडंण चालणीरे। काठ्यो नीर निसंक। सुभद्रा सोभा लही संसार में रे। कीधो दुर कलंक। सी० ६। रुडी पुत्री रायनीरे। मातुं सील सुचंग। जन्म सुधारयो जगमें जीहनीरे। इधको सोभा अभंग। सीं० ७। पटमोतर पापीने पानें पडी रे। द्रोपदी सती रे अषंड। सतीरही उजलीरे। बाधी सोभ विसेष। सी० ८। बाल ब्रह्मचारी नित वंदीयेरे। नेमने राजल नार। दोनुं जगमें हुवा दीपतीरे। जपिया जेजेकार। सी० ९। आठ नारी त्यागी अंगसुं रे। जंबु कूमर जो धार। गुंण निध सील पाली मुगते ग

या रे। निरंजन निराकार। सी० १०। सुमता सुवध आवे सील सुं रे। सील सुं प्रम संतोष। सघरा गुंण सगलाइ संपजे रे। दुर हुवे सब दोष। सी० ११। अटवी भारी काष्ट इधणा रे वेरी धंन दे वाल। करम कठन संच्या भव कोडरा रे। वो लेवो सील रसाल। सी० १२। उत्तम प्राणी हुवे ते आदरे रे॥ अखडिंत सील अमोल पाये लागे सुर प्रेमसुं रे। वोले ईच्छत बोल। सी० १३। धंन २ प्रांणी तुं धरारे। दुधर सील धरंत। दुकर २ करणी तुं करेरे। कीरत ऐम करंत। सी० १४। जीते दस लष भारी जोधनेरे। सवल ते सुर संसार। सीलवंता त्यासुं वड सुरमा रे। आगम मैं इधकार। सी० १५। समुद्र भारी तिरणो सोहलोरे। सूरविधा प्रसंग। दुकर सील कह्योछे दोहलोरे। देषो दुसमे अंग। सी० १६। सूरा बीरा सुध पालसीरे। कायर रो नही कांम। कायर ते जासी नरक कूंडमैं रे। सुर लहे सुभ वांम॥ सी० १७॥ संकट टल जावे सव सील सुं रे। बिकट पाप विभाय। नीकट ते यावे निरवाणरे। जन्म मरन मीट जाय। सी० १८। सूत्र पुराण कुराण मे सीलरा रे। आख्या गुण अभीराम॥ उज॥ ल:मंन कर अराधीयां रे सोझे सगला काम॥ सो० १९॥ सील पाले सांधजीरे॥ छतीरिध सब छोड॥ सब ही तीर या माती सारखीरे। माछा पुरख जगमोड॥ सी २०॥ नि जनारी प्राणी छुटे नही रे। परनारी पचखांण॥ लाखो मन बच काया करी रे। ऐ उतम अहनाण॥ सी० २१॥ पांडु तिथ रा करदो प्रेमसूं रे॥ निज नारी रो नेम॥ जासी हो सी अमर बीमाण में रे॥ आख्यो अरिहंत ऐम॥ सी० २२॥ भव सागर भंमता लाधो भलो रे। रूडो सील रतन॥ रात दीवस नित रूडी रीत सुं रे। कीज्यो क्रोड जतन॥ सी० २३॥ साचा गुण गाया छ सीलरा रे॥ सांभल चतुर सुजाण॥ सखरी सील

बरत पाले सदारे। पामो परम कील्याण॥ सो० २४॥ समत अठार बासट सांडवेरे॥ भाद्र पुनम रविवार रीख चन्द्र भाणजी करी रलयासणीरे। सील पचीसी सार ॥ सो० २५॥

इति संपूर्णम।

अथ तपस्या पचीसी लाष्यते।

(भुलो मन भमरा कांई भमै। ऐदेसी)

करूं पचीसी कोड सूं। तपस्या री तंतसार॥ तपस्या त्यारे जी-भव कुंप ज्युं। मेले सुगत मंभार॥ तपस्या करो जी भल भाव सूं। ऐ आकडी॥ तपस्या करे कर्म नास॥ सुरग पुरीमें जीव संचरे। सफल हुवे मन आस॥ त०॥ २॥ नरकज मांहि नेरिया। पाप तणि प्रमांण॥ भुख तीरषा दिक भोगवे॥ जमा तणीं मार जाण॥ त० ३। सो वरसां जी वेदना सया। काटे कर्म कुरंद॥ जेता रो नवकारसी। दुर करे दुख दंद॥ त० ४॥ पचखे ऐकज पोरसी॥ पाप करे जी पोमाल॥ सहस बरस लग नरक में॥ जेता सहजी हवाल॥ त० ५॥ प्रेम धरी दोढ पोरसी। कीधा कर्म कटाय॥ दस हजार बरस लगी॥ खता नर्क में खाय॥ त० ६॥ पचखाण करे दोय पोरसी॥ रुडो तन मन राख॥ कर्म कटजो केता नरक में। दुख भुगत्यां बरस लाख॥ त० ७॥ ऐक करे जो ऐकासणो। काटे कर्मारा जाल॥ दस लाख बरसा लगजो नरकमें॥ वेधा दुख असराल॥ त० ८॥ निवी करे मन निरमले॥ सरब बीगे देवे छोड़॥ कर्म कटेजो केता नरकमें। दुख भुगत्यां बरस क्रोड॥ त०॥ ९॥ ऐकल ठांणों कीया थका। दस

क्रोड बरस वखाण ॥ कर्म कटेजी केता नरकमें॥ ऐतो कीयो प्रमाण ॥ ॥ त० ॥ १० ॥ दात करे दिल रंग सूं। काटे कीतरा जो पाप॥ सो क्रोड बरसा जो नरकमें सह्या सबल संताप ॥ त० ११ ॥ आंबल करेजी आंणंद सूं। वरसा क्रोड हजार ॥ कर्म कटेजी केता नरक में॥ खाधा मार अपार॥ त० १२ ॥ दस हजारजी कोडरी। बरसें नरकां वास॥ ऐतो कटे अघ आपरा। ऐक कीया उपवास ॥ त० १३ ॥ बेलो करेजी वेराग सूं काटे कर्म वीकार ॥ लाख क्रोड वरसालगें खाधा नरक री मार ॥ त० १४ ॥ दस लाख कोडजी बरस रा। झाझा नरका रा झाड॥ ऐता कर्म जो आपर॥ तेलो करदेवे तोड॥ त० १५ ॥ चोलो करे चितचंग सूं। खाणो देवे जो छोड॥ कर्म कटेजी केता नरकमें॥ बरसज कोडा कोड ॥ त० १६ ॥ ऐक एक उपवास बधावीयां। आगल ईण हीज न्याय ॥ दस गुणो लाभज दाखीयो॥ संक न रा खोजो काय ॥ त० १७ ॥ बारे भेदे तप तपे। टाले कर्मो रो छोत॥ सूत्र गोनीतामें भाखीयो॥ बांधे तीर्थंकर गोत॥ त० १८ ॥ हलधर चक्री राजा हुवे सेठ सेना पती सुख॥ तेतो फल तपस्या तणां भरम न पडज्यो जी भुल॥ त० १९॥ बेटा पोता जी बंधवा सुन्दर सखर सुजाण॥ मन बंछित आई मीले जंप तप रा फल जाण॥ त० २०॥ जस कीरत हुवे लोकमें आगे काय नीरोग॥ पामे प्राणी फुटरी सखरो सरब संजोग॥ त०॥ २१॥ हेम,अगन सोधग्रो सुध होवे॥ बसतर सावण बोर॥ रोग कटेजी रुडा बेद सुं॥ तिम तपस्या गुणाकार॥ त० २२॥ राय अशोक री राणीयाजी। छती रीध देई छोड॥ सुगत गई मोटी सत्यां तपकर कायाजी तोड॥ त० २३॥ सहर फतेपुरमें सही। तपस्या री घणो कोड। रिष चन्द्रभाणजी पुरी रली। तपस्या री कर जोड॥ त० २४॥ संवत आठारे से बासठे॥ सूद मांही

सोमवार॥ पडवा तिथ॥ घणा प्रेमसुं। आखीढाल उदार। त० २५॥

इति श्रीतपस्या पचीसी संपूर्णम्।

अथ भाव पचीसी लीख्यंत।

(कामणीयां करलेसु लाडा दुवलडा मत होज्यो राज असा कांमण म्हांरा राईवर ने कोई दैदेसी)।

भाव पचीसी जोडु भारी। आगमरै अनुसारी॥ निश्चल मन सुणंता चित नीके। साभलता सखकारी राज॥ राखो सुर ध्यानो घे तो निस दीन भावना रूडी॥ काया कसट कीजो सब करणी भाव बीनां सबकुडी। राज॥१॥ भव सागर अथग जल भारी॥ दुख दाई दिन रातो॥ जरा मरण रा वेग जोरा-वर॥ माहा अन्धकार मिथ्यातो राज॥ रा०॥२॥ चढो चढो चढो भव जीवा॥ भावना न्यावा भारी॥ सावधान रहजो नित सेंठा। पामो भवजल पारी राज॥ रा०॥३॥ सब करणी में भाव सीरेछे। भगवंत ईम भाख्यो॥ गज सुक माल असुनी गीरवो। चंगो सीव सूख चाख्यो राज। रा० ४। कपिल बीरांमण सोना कारण। पहुंतो राजंद पासो। असरण भावना केवल पाम्यो। वैकुंटां कीयो बासो राज। रा० ५। वृषभ देखीने प्रत बोध्यो। करकंडु कुल चंदो। उत्तम चारित्र आदर लीनो। पाम्यां परम आणंदो राज। रा० ६। ईद्र थंभ री देखी अवसथा। दुसुंहो नाम नरिंदो॥ उत्तम चारित्र आदर लीनो। पाम्यो परम आणंदो राज। रा० ७। चुडी सबद सूणीने चेत्यो नमीं नाम निरदो। उतम चारित्र आदर लीनो पाम्या परम आणंदो राज। रा० ८। आंबो देखी अथिर जगजाणी। छोड दीया घर फंदो। नि

गई राय लही गत नीको पाम्यो परम आणंदो राज। रा० ९। मृगापुत्र मह्लामें बेठां दीठा साध दयालो। जाती समरण घटमें जाग्यो छोड्या मोहजंजालो राज। रा० १०। आंख बेदना उपनी भारी। कारी काय न लागी। असरण भावना भाई अनाथी तुरत दीयो घर त्यागी राज। रा० ११। समुद्र पाल सुखामें लीनो। कसर नही तिल काई। चोर हणता देखो चेत्यो॥ छती रिध छोट् काई राज। रा० १२। भावो भावो भावना रुडी। भावना भाजे भीरो॥ मोरा देवा अन्तर मुहरत में तुरत लही भव तीरो राज। रा० १३। भरतेसरजो भांवना भाई मोहा दिक रीपु साख्या। खिण मातरमें थया केवली। तिरया वणानि तारया राज। रा० १४। संत कुमार चक्री अति सुन्दर॥ तन बीगड्यो ततकालो॥ काया माया जाणी काची। मुनी थया गुण मालो राज। रा० १५। प्रसन्नचंद रिषी सर पलमें च्यारकर्म चक चुरया। पर सिध पुरण केवल पाया परम मनोरथ पुरया राज। रा० १६। अरजन माली खमा आंदरी॥ ध्यायो निरमल धरांनो। आठु कर्म करीन अलगा। खुब लीया सुख खाणो राज। रा० १७। रेणां देवी सुं नहीं रजयो थिर राख्यो मन ठामो। जिनपाल ने जिन रिषरो भाई॥ अमर थयो अभीरामो राज। रा० १८। बीर जिणद री जीरण बारू। भावना ईधकी भाई। बीलसे लील सुरग बारमो आभावना रीछ ईधकाई राज। रा० १९। ईत्यादिक. बहुला उधरया॥आगी जीव अनन्ता। जनम मरण रामेव्या झगडा माहा धरानी मतवंता राज। रा० २०। चढो भाव नीसरणी चंगी मोख नगर में मालो। आलस तज उजल मन आणी। पाप सकल न पालो राज। रा० २१। भावना. औषद छ अती भारी। खादा दुख खें जावे॥ आसाता व्यापे नहीं अङ्गमें परम उत्तम पद पावे राज। रा० २२। सच्ची सच्ची भावना धन सच्ची। खाधा

कदेय न खुटै । भव भव केरा पातक भारी । तुरत भावं सू तुटै राज ॥ रा० २३ ॥ सहर फतेपुर मे अती सखरो । ईधको धर्म उछावो । समजो मन हरखधरो साचो । वांदो सत गुर पायो राज ॥ रा० २४॥ सम्वत अठारे सो बासट माह बद ॥ बारस तीथ गुरु वारो॥रिषचन्द्र भाण करी मन रंगे । बिधसू ढाल बीचारो राज ॥ रा० २५ ॥ ईती श्रीभावना पचीसी सपुर्ण ॥

अथ खीम्यां पचीसी लीष्यते ।

(तप सरीषो जग कोन हो ऐदेसी)

भणुं पचीसी भावसूं खीम्यांरी मन खन्त हो ॥ भवियण ॥ खीम्यां धर्म पहलो खरो । भाख्यो श्रीभगवंत हो ॥ भवियण १ ॥ खिम्यां करो मनखन्त सूं । खरच न लागे खीम्यां कीया । कष्ट हुवे नही कोयहो ॥ भ० ॥ जस कीरत हुवे लोकमें । लाभ घणेरो होयहो ॥ भ० खी० २ ॥ खीम्या सुखारी खांणछ कोप दुखांरी खांणहो ॥ भ० ॥ कोप तजीने खीम्या करो । जे जगमें धनजाणहो ॥ भ० ३ ॥ खीम्यां खड़ग लेई हाथमें । कोप करे चकचुरहो ॥ भ० ॥ अरि हन्ता ईम आखीयो ते साचला सुर हो० भ० ॥ ४ ॥ खीम्यां ईम्रत सारिषी॥ खीम्यां दाख खीजुरहो ॥ भ० ॥ खीम्यां सब भोजन सीरे । आपे सुख अपुरहो० ॥ भ० ५ ॥ खीम्यां खजानो खुबहे ॥ खीम्यां तप सीणगारहो ॥ भ० ॥ खीम्यां धर कारणी करे । धनत्यारो अवतारहो ॥ भ० ६ ॥ गहणा भारी अतीघणां । वसत्र विवध प्रकारहो ॥ भ० ॥ सुन्दर रूप सुहामणो । खीम्यां बीनां सब छारहो ॥ भ० ७ ॥ कुण २ जीव खीम्यां करी । अन्तर अगन बुझायहो ॥ भ० ॥ नाम कहुं कु तेहना । साभल ज्यो चित्तलायेहो ॥ भ० ८ ॥ परदेसी ने पापणी ॥ जुवती दीधो झहरहो ॥ भ० ॥ करड़ी नृप खीम्यां

करी। लीयो सुरग लहरहो ॥ भ० ९॥ दमदत रिषने देखने। दुरज्योधन दुखदीधहो ॥ भ० ॥ तिलमात डोल्यो नहो। परम खीम्यां रस पीधहो ॥ भ० १०॥ दुष्टी भांणेजेदीयो। भहर मामांने जांण हो ॥ भ० ॥ रिष उदाई खीम्यां करी। पाम्यां परम कोल्यांणहो ॥ भ० ११॥ खन्दक रिखकी खालडी। अलगी कीधी उतारहो० ॥ भ० ॥ नाक सल घाल्यो नहो। पुहतो सुगत मंझारहो ॥ भ० १२॥ पाचसे रिष पीलया। घाणी मांहो घालहो ॥ भ० ॥ खीम्यां कर सुगते गया। मेटया सरव हवालहो ॥ भ० १३॥ अरजन माली आदरी। खीम्यां सल खुस्यालहो ॥भ०॥ हुवा अन्तगढ़ केवली। वेगकरी सीव वालहो ॥ भ० १४॥ क्रोध न सुहतीने करी। खिमावंत गुण षांणहो ॥ भ० सेठ सूता वहु सुलषणी ॥ उपनो अमर बिमानहो ॥ भ० १५॥ खिमावन्त नरने कहे ॥ मोटो मिनष अमोलहो ॥ भ० तीनु लोक में तेहनो ॥ वांधे भारी तो लंहो ॥ भ० १६॥ षीम्यांवंत री करणी सहु। सफल हुवे सुष दाय हो। भ० भव२ में सूष उपले कमीन रहे काय हो। भ० १७। षिम्या चितामण सारीषी ॥ चिंता टेवे चुर हो। भ० षिमग्रा पारस सारसी। आपे सुष अपुरहो। भ० १८। खिम्यां सूरतर सारषो। काम कूंभ सरीसहो। भ०। काम धेन सरीषी कहो। पुरे मंन जगीसहों ।भ०१९। षीमग्रा नावां सारषी। पहुं चावे भाव पार हो भ० षीमग्रा ओषध सारीसी। कटि कर्म बिकार हो। भ० २०। कर्म काठन भव कोडरा। षीमग्रा देवे षपायहो भ० सबने लागे सुहामणो। वेर विघन टल जाय हो। भ० २१। सी सहीणो अती दोहलो। घोर ग्रीषम धाम हो भ० लोचा दिक सब सोहलो। कठिन षिमग्रा रो कांम हो। भ० २२। इम जाणी उत्तम नरा। किण सुं न करो क्रोध हो। भ० सूष पामो ज्युं सासता। मे कयो सूत्रमें सोध हो। भ० २३। संवत अठारेसे त्रेसठे। आखी तिज उमेद हो। भ० चंद्र वार षणी चुपसुं कीधी क्रोध निषेध हो

॥ भ० २४ ॥ रिषचंद्र भांण कहेमनें। घमरा पचीसी सारही। भ० फतेपुर में परगट करी। कीधो म्हा सुखकार हो। भ० २५।
इति संपुर्ण।

अथ विवेक पचीसी लीख्यते।

(चतुर नर मनकूं समझाना ऐदेसी)

अरीहन्त देव अराध। सुगण नर गुण किरत गाइ॥ जन्म मरन मिट जावे तेरा। सिव पुरनी साइ॥ घट विवेक करो भाई। विवेक बीना भवसागर विचे॥ जगत डुबो जाई॥ १ ॥ गाज तणी पर गुंजे प्रभुजी। सुणता सुखदाइ॥ भिन२ भेद भली परभाखे। कसर न ही काइ॥ घ० २॥ दोष अठारे त्यागो दीवी। परम ग्यान पाई। जीवां सहुरी मंनरी जाणे। छानी नही काई॥ घ० ३॥ तरंण तारंण साचा तिर्थंकर। भवसागर मांही॥ सुभ मनसे समरन करता॥ पार उतर जाई॥ घ० ४॥ ऐसा अरीहन्त छोड़ अग्यानी। ओराकूं ध्याई। धात पाषाण देषीने रीझे॥ अकल नहीं काइ। घ० ५॥ अरिहन्त कांजे जीव हणीने। मन हरषत थाई॥ कूगरांरा भरमाया मुर्ष। उजड वट जाइ। घ० ६। रौंट तणी पर रीध न रमणी॥ छीनमे छीट काइ। षट कायारी पीहर साधु। सबने सूषदाइ। घ० ७। परमेश्वर री अग्या पाली नीरमल बुधन्याई। दोष वयालीस तजने दुरा। निर दोषण थाई। घ० ८। माया ममता दोनुं मारी। षीम्या षडग साइ॥ अचल रहे परीसा आया सबरी सेंठाई। घ० ९। भाव भगत अेसा संत भेटो। दुष दलीद्र जाइ। सीवगत मांही जाय बिराजे! अजर अमर थाइ। घ० १०। लोभी गुर वाजे दुनाया मैं। कर कर कपटाइ। अकल बिहण मुढ

अग्यांनी । बांदे पगजाई ॥ घ० ११ ॥ सुगुरु कुगुरु नहीके सारखा परख करो । भाइ । सूगरु त्यारे भव सागर थी । कूगरु दुषदाइ । घ० १२ । जीव दया में धर्म जनेश्वर । भाष्योछे भाई हीस्यां कीया तीन कालमें । धर्म नइ थाइ । घ० १३ । हींस्या कीया धर्म हुवेछे । प्रभु फरमाइ । असी वाणी बोल अग्यानी बांदे पगजाइ । घ० १४ । हिंस्या किया पाप हुवेछे धर्म नहीराइ हिंस्या कीयाँ धर्म हुवेतो । दुरगत कूंण जाइ । घ० १५ । अग्या मांही धर्मज आष्यो । सवसूत्र मांही । अग्या बाहार धर्म हुवेतो हुवे कूंण भाइ । घ० १६ । धर्म ठीकाणे जीव बीराधे । सक नही काइ । उलटा भारी होय आग्यानी । निरमल कीम थाइ । घ० १७ जीण करणी में जीण अग्या । ते कीज्यो चीतलाइ । सुदगत मांही जाय वीराजो । कमी नही काइ । घ० १८ । देव गरु धर्म तीनारी ओलषण आइ । साचा हुवे सो आदर लेणी । षोटा छीटकाइ । घ० १९ । देव गरु धर्म तीनारी । खबर नही काइ सगला नेइ जाणि सारसा । मिथ्या मत छाइ । घ० २० । भिन २ करनें परीछा कीजे । मिनष जनम पाइ । परख बीनां गरज जीवरी । सरे नही काई । घ० २१ । जोकी भवतीर्थ पाका गईहे । चितमें चतुराई । तेतो साचो सरधालेवो ॥ ज्युं कंचण ताई । घ० २२ । पाचुं ईंद्री तसकर पुरा । ठग ठग धन खाई या पांचा न हट कोनें राखे । कुसल खेम थाई । घ० २३ । सवंत अठारे तेसठ बरसे । चन्द्रवार चित लाई । सुद वैसाख दस्युं तीथ साचो । सखरी जोड सुणाई । घ० २४ । बिवेक पचीसी फतेपुर में बिधसु खुब बणाई । रिष चंद्रभाण जी मरहटे रागे । सुणता सुखदाई । घ० २५ ।

इति श्री बिवेक पचीसी संपूर्णम ।

अथ समता पचीसी लिख्यते ।

(राग उमादेमी)

समत रस भारी हो । गुणधारी विरला सुरमा । समता सारण हार । समता रस पीधा हो । थावे छ त्रिपत आतमां । वेगतीरें संसार ॥ समता ॥ १ ॥ समता सारीसीहो ॥ नहीं छे मेवा सुंषडी ॥ चक्री भोजन चंग ॥ तुले न आवे हो ॥ जुगल्यांरा भोजन तेह ने ॥ आपि सुख अभंग ॥ स० २ ॥ समता सुख दाई हो ॥ सदाई नीखे छ सहो ॥ ममता माहा दुखसुल ॥ समता कहीछे हो ॥ सुर तरनें पा रस सारिषो ॥ ममता आक बंबूल ॥ स० ३ ॥ समता सीरेंव रहो ॥ जुल्यां सूं निश्चे हुवे सही ॥ निरमल चेत्या नंद ॥ दुख असाता हो ॥ कदे नही व्यापे देहमें ॥ पासें परम आणंद ॥ स० ४ ॥ अरिहंत देवा हो ॥ समता रस रूडो आचंखो ॥ सब रस केरो सार ॥ तनमन वचरी हो ॥ भागीछे सगली तापनां ॥ आणंद अधिक अपार ॥ स० ५ ॥ गणधर ग्यांनी हो ॥ माहा ध्यानी गिरवा गुण निरमला ॥ समता भोजन मूल ॥ जीमीने त्रिपत हो ॥ हुवा छे परम जोगी सरू । पाम्यां सुख असुल ॥ स० ६ ॥ समता रस पीवे हो । उतम साध साधवी ॥ आचारज उवझाय ॥ सुर पत सूं भारी हो । कह्या छे सुख साधरा सूत्र ठाणंग मांह ॥ स० ७ ॥ समता रस पीवे हो ॥ उतम श्रावक आधिकां । देस थकी दीन रात ॥ त्यांरी पिण कीरत हो कीधीछे आप तीर्थंकरा ॥ आगम में अवदात ॥ स० ८ ॥ उतम प्राणी हो ॥ हुवे ते समता आदरें ॥ ममता वेरण मार ॥ जसगुंण कीरत हो ॥ वांधे छे भारी जेहनी ॥ मांनव लोक मंझार ॥ स० ९ ॥ किण किण जीवा हो कीधीछे समता सुभमती ॥ पामरां भव जल पार ॥ कुण कुण हुवाण ॥ चर करने समता कार मी ॥ अलप

कहुं अधिकार॥ स० १०॥ राय उदाई-हो॥ जाण्योछे भुंडो राज नें॥ समता दीधी मेट॥ समता आणीने हो॥ हुवो छे साध सीरोमणी॥ भगवंतरा पगभेट॥ स० ११॥ संमतारो माण्यो हो॥ हारयो छे संयम दुरमती॥ पुंडरिक कीधो लोभ॥ पुंडरिक संयम हो॥ लीधोछे रुडो प्रेमसूं॥ सखरो चाढी सोभ॥ स० १२॥ कपिल बीरासण हो गयो छो सोना कारणे॥ ममता बधी असमान आतम ने थिर कारी हो॥ भारी जब उपनो रुवाडो॥ गिरबो केवल ग्यान॥ स० १३॥ सोमल पापी हो॥ सिर उपर खीरा घालीया॥ गजसूखु माल गंभीर॥ सीस न धुण्यो हो॥ कीधी छ समतां सूरसों पाम्यो भव जलतीर॥ स० १४॥ मैतारज त्यागी हो॥ बैरागी हुवो माहा मुनी॥ बीव्यो मच्छक वांध॥ समता आणीने हो॥ गयो छ सीव, बासमें॥ अरिहंत वचन अराध॥ स० १५॥ अभे कुंवर ईधकारी हो। गुण भारी बुध आगलो। श्रेणक सुत सूजाण समता आणी नेहो। हुवो छे साध सुहामणो॥ उपनो बीजे बीमाण॥ स० १६॥ कुंवर सुबाहुहो। परण्योछे नारी पांचसो। बीरत णी सुण बाण॥ दीच्छा तो लीधी हो। बैरागी घणी दीपती॥ उपनो अमर बीमाण॥ स० १७ संभूम चक्री हो॥ गयो छो खंड साजवा लोभ घणो मन लाय॥ निरधारो नाख्योहो॥ पापीने देवा नीरमें पड्यो नरक में जाय॥ स० १८॥ ब्रमदत्त चक्री हो॥ राजेसर भारी बारमो॥ दीयो चित उपदेस॥ समता न आणी हो॥ ममता सू नरक सातमी॥ पापी कीयो प्रवेस॥ स० १९॥ वामदेव पापी हो॥ लब्ध-लोभे सींच बीणा सियो॥ सू रूपदेव नें रान॥ वेरो तो पड्यो हो अवर बारु घोल सू। हीरो लेकीयो हैरान॥ स० २०॥ विजय तसकर पापी हो॥ देव दीन बेटो सेठरो॥ मारीनें लीधो माल॥ पापीनें पकड्यो हो॥ मारीछे मुंडी मार सुं॥ पाम्या बहुत हवाल॥ स० २१॥ समता काही छेहो॥ नंदण बन सारषी॥

दोलत सूख दातार ॥ ममता दुख दाई । हो मोटी छ आगल मोखरी ॥ मेले नरक मंझार ॥ स० २२ ॥ तप जप कीया हो । सगलो छ बाता सोहलो ॥ सोनो देणो दान ॥ रस समता पाणी हो । नहो छे नीश्च सोहलो । भाख्यो श्रीभगवान ॥ स० २३ ॥ समत अठारे हो । तरेसठ सुद जेठमें । दसमी मंगल वार । समता पचीसी हो । जोडी छे रुडी रीतसु फतेपुर सहर मंजार ॥ स० २४ ॥ समता रस पीजे हो । मारीछे ममता मोहणो । समज्या नो ए सार रिष चंद्र भाणजी हो कीधो छ पर उपगार ने । इदवाणी हितकार । स० २५ । संपुर्णम ।

॥ अथ उपदेस पचीसी लीख्यते ॥

(॥ जुहारा जाटका गढजेपुर बांकोरे ॥ एदेसी)

चोरासी मै चाक ज्युं रे । करी २ कर्म कठेर । घरटी ज्यूं फीरयो घणोरे । पाम्यो दुष अघोर । सूग्यानी जीवडा करणी भल कीजेरे ॥ १ ॥ काज सरे करनी कीयारे । भाखगया भगवंत । अलप दुखाने आदर्यारे । आगे सूष अनन्त । सू० २ ॥ सत गरू सीष माने नही रे । राषे षोटी रूढ । पुन्य हीणा ते बापडा रे । म्हामिथ्याती मुढ ॥ सू० ३ ॥ पाप करीने प्राणीया रे । नरकां करे रे निवास । भुंडा फलतिहां भोगवेरे । नांखे होये निसास ॥ सू० ४ ॥ पाप चितारे पाछलारे । अधरमी सूर आय । तीम कीधा कर्म जीवडेरे । तीम भुगतावे ताय ॥ सू० ५ ॥ रोवेझुरे रांक ज्यूंरे । अधीका दुष अनन्त ॥ जम गाढा वेरी जोसारे ॥ पीड़ा बोहत करंत ॥ सू० ६ ॥ वरसां दसहजारनोरे । जगन आउखोजांण । उत्यक्रष्टो सागर तेतीसनो रे ।

आय गया जग मांय॥ सू० ७॥ नीठ नरकां सूनिसरयो रे तिर जंच मांहीं तास॥ आंतर२ दुष भोगवेरे। सूत्र मांही समास॥ सू० ८॥ हलका कर्म पड्या हुवेरे। पुन्य तणे प्रभाव॥ माणस हुवे मोटकोरे॥ सखरो सरल सभाव॥ सू० ९॥ जाडा नही कर्म जेहनेरे॥ आय मिले अणगार। पांच महाव्रत पालता रे॥ धीरां माहा गुण धार॥ सु० १०॥ दयावंत रीषदेखने रे॥ लुल २ लागे पाय॥ प्रदिखणा देई प्रमसुं रे॥ नीचोसीस नमाय॥ सु० ११॥ साधूजी सूत्र साखथीरे॥ देकडो उपदेस काया माया कारमीरे॥ राषो धर्म रो रेस॥ सू० १२॥ साधं बचन सुणी हु लसेरे॥ घटमें आवे ग्यान॥ सुखसगला संसार नारे॥ जाण्या जहर समान॥ स० १३॥ वयरागी मन वालनेरे॥ साध पणो लेसार॥ उतमकेइ आदरे रे॥ बिध सेती ब्रतवार। सू० १४॥ करणी कर कर्म काटनेरे॥ पुरा संच्या पुन्य थाट। दयापाली हुवे देवतारे। गहरा सुष गहगाट॥ सु० १५॥ देवंगणां घणी दीपती॥ जपे जेय २ कार। पल सागर लग प्रेम सुंरे। सुष विलसे संसार। सू० १६॥ पुन्यवंत पामे वली रे। उतम कुल अवतार। घर सम्पत हुवे घणीरे। बहुत बजावे वार॥ सू० १७॥ चरित्र लेइ चुंपसुंरे। आठ कर्म करी अनन्त॥ पामे परम गत पावसींरे अविचल सुख अनन्त॥ सू० १८॥ साधूजी चन्दन सारसारे॥ टाले तन मन ताप। निरभागी वादेन-हीरे। पोते भारी पाप॥ सू० १९॥ साधुजी नावां सारषा रे। पहुंचावे भवपार। नेडापिण ढुके नही रे॥ निरभागी नर नार॥ सू० २०॥ भिन २ भेद भाषे भलाजी। उपगारी अणगार। निरबुधि समजे नही रे। घटमे घोर अंधार। स० २१। वेस्या सङ्गत वेसतारे। ब्रत रो होय विनास। सुध समकित वीणसे सहीरे॥ पांवडीयारे पास॥ सु० २२॥ ऐक घड़ी आधी

चढ़ीरे। साधूजी सङ्गत थाय। चेलायती नामे चोरज्यं रे। जीव भलोगत जाय। स० २३। समत अठारेसे साठमेंरे। बद आसु सोमबार। वारसतिथ बिदासरे रे। आषी ढाल उदार। स० २४। उपदेस पचीसी थोपती रे। जोड़ी जुगते जाण। ईदिप चन्द्र भांण कहेसनरे। चेतो चतुर सुजाण। स० २५।

इति संपूर्ण।

॥ अथ समगत पचीसी लिष्यते ॥

(आज निहेजोर दीसे नाहेलो ऐदेसी)

सखरी पचीसी सुण ज्यो सुभ मती। समगतरी तंतसार ॥ समगत आयां सब गुण नीपजेरे। पामें भव जलपार ॥ १ ॥ समगत धारी हो विरला सुरमा। सेठां ईण संसार॥ पाखंड मारग सबही प्रहरे। कुधवंता सब ही नर नार॥ समगत० २ ॥ समगत कहीछे अंक सारखो। अंक विण मींडी अनेक॥ निस्चे त्यां सूं गरज सरे नहीं। तिम समगत बीना देख॥ स० ३॥ ईम जाणीने उतम प्राणीयां। पाडो समगत ठीक॥ तिलभर सांसो राखो मती॥ बात करो तहतीक॥ स० ४॥ देव तिर्थंकर जगमें दपिता सांसो भाजणहार॥ जग सागरमें जाणी। जीहाज ज्यूं। देवेपार उतार॥ स० ५॥ ज्यांनो धरांनो गिरवा गुंण नीला। निरलो भी निग्रंथ॥ उतम गुरने ओलख आदर्यां। तुटे कर्म गंथ॥ स० ६॥ आग्यामें धर्मज आखीयो। दया धर्म उपदेस। साचीसरधा हुवे सुभमती। जप्यो सकल जणेस॥ स० ७॥ देव गुरू धर्मर कारणे। जीवहणे छै काय॥ माहा मिथ्याती त्यानें जिण कह्यो। आचारंग जोरे माय॥ स० ८॥ छका-

यारा जीव बीराधीयां । नीश्चे ही सन्ताप । तिणमें थापे धर्म अभागीया । अरिहंत बचन उथाप ॥ स० ९ ॥ हिंस्यां कर कर हरखे पापीया धर्म गीणे साखग्रात ॥ ठाणंग सूत्रमें भा खीयो । घटमें घोर मीथ्यात ॥ स० १० ॥ नवतत्व निरणी करले निरमलो । नधरे संक लीगार । समगतधारी त्यांने जिण कह्या । उत्राधेरन संभार ॥ स० ॥ ११ ॥ समगत बीना चारित्र हुवे नहीं । उत्राधेरन में साख । अठाईसमा अधेरन में भगवंत ईण पर भाख ॥ सू० २२ ॥ प्रथम लखण जाण पणो समो । बीजो लखण संवेग । दोनुं भार गुण छे प्रतीघणां । तीजो लछनिर-वेगा । स० १३ ॥ अणकंपानें राखे आसतो समकत लखण पांच ॥ सुत्रमाही भगवंत भाखीयो । खोटो न करो जी खांच ॥ स० १४ ॥ संकाराखे जिण बचनां मझे ॥ मन परमत चाह । फोकट सासो बेदे फल मझे । तिजो दोषण थाय ॥ स० १५ ॥ कुगरु प्रसंसा करे अती घणी । परचो करे धर प्रेम ॥ बिरजणि ख्वर सुत्र में कह्यो । समगत जावे जीऐम ॥ स० १६ ॥ उतम गुररी राषे आसता । संक नही तिलकाय । स्याना ससभु होवे तेहने । नसके देव डीगाया ॥ स० १७ ॥ कला बहुतर प्राणी सीषयो । क्रोडा लीधक माय । लोकां मांही आदर अती घणो । पीण गरजसरे नहीं कोय ॥ स० १८ ॥ खाता रोजनामा सी-षयो । झगडा दीध चुकाय । पोते रो झगडो चूक्यो नहीं । तीण रो खबरन काय ॥ स० १९ ॥ माणक मोती हीरा परषीया । बीजी चीज अनेक । परखन कीधी प्राणी धर्म नो । तो गरज सरे नही ऐक ॥ स० २० ॥ बाताघातांसीषी अतघणी । मनसीवा प्रमोद ॥ धर्म न सीखे आजीन राजनी । तो भमसी नरक नीगोद ॥ स० ३१ ॥ मानव भव रुडो अवसर मिल्यो । चेत चतुर नरचेत । चेत्यां विन तो पडसी अती घणी । चतराइ मांही रेत ॥ स०

२२ ॥ सो वातारी ऐक वात छे। धारो जीनवर धर्म । राग धेखांसै पडज्यो मतो। पामो सुष प्रम ॥ स० २३ ॥ संवत अठारे त्रेसठ पचमीं। वदी आसु गरुवार। सपरी कीधी ढाल सूत्र मणो। आगमरे अनुसार ॥ स० २४ ॥ वणी छदमे चुरु फावतो। चोमासो चीतल्याय। रोष चढ भांण भाषे मनरली। सांभलता सुष थाय ॥ स० २५ ॥

। अथमोख पचीसी लिषते ।

(अलविलारी चालमें एदेशी)

ओ जीवकाल अनादरो रेलाल। आठ कारमारे संगहो। भवि कजन। नाटीकया जीम नाचीयोरे लाल। रामत नव २ रंगहो। भ० १। मोषपेडी पग लेल ज्योरे लाल। जीव वडो सगली जात मेंरे ला०। वसियो अनंती वार। भ० दुष अंनता देखीयारे लाल काहता न आवे पार हो० भ० २ मो० निरलज सुल लाजे नहीरे ला०। वे सरमा वुध हीन हो। भ०। धर्म रतन धारे नहीरे ला० पाप करण प्रविण हो भ० ३ ॥ निज ओगण सूजे नहीरे ला०। धरे कुगरु सुं प्रेम हो। ताणि पष कूगरा तणीरे ला०। बुडे वीगर विवेक हो भ० ४। तोनु उगन दुरा तजोरे ला०। भजो सदा भगवानहो भ० मोख पेडी कहु मनरलीहो ला० सुणो सुरत देई कान हो० भ० ५। मो० प्रथम पेडी पाधरीरे लाल। गुरू सुख सीख्यो ग्यान हो० भ०। सम क्रित पेडी दुजी सहीरे लाल। सेंठो मेरू समान हो भ० मो ६। तीजी पेडी चारित्र तणीरे लाल। अविचल अचल असार हो। तपस्या पेडी चोथी तोणीरे लाला ॥ निसंक चढो नर नार हो भ० मो०। ७ दान पेडी अती दीपतीरे लाल। देवो

सुपात्र दान हो० भ०। बेंठो पेडो सुध मीलगी हो लाल। तिण नूं थातो विशेष हो। भ० मो० ८। भावना पेडो अती भलीरे लाल। भावो बुध भंडार हो। भ०। खमा पेडी सखरी खरीरे लाल। समता पेडी सार हो भ० मो० ९। पचखाण पेडी फावतीरे लाल। दया पेडी दीपंत हो। भ०। सखरी पेडी सुध साधरीरे लाल। मोख गया भगवंत हो० भ० १०। माहाब्रत पेडी मोटकीरे लाल। अणु ब्रत पेडी अनुप हो०। भ०। समरण पेडी सोभती रे। लाल चतुर चढो चित चुंप हो। भ० मो० ११। संतोष पेडी सुहामणीरे लाल। अखंड पेडी जिन आण। भ०। निरमल पेडी सुध नीसरणीरे लाल। वैराग पेडी वखाण हो० भ०। मो० १२। आचार पेडी दीपतीरे लाल॥ निश्चल पेडी नवकार हो। भ०। धीरज पेडी होवडे धरीरे लाल। संयम पेडो सुखकार हो भ० मो० १३। बीनो भगत पेडी चढोरे लाल। रूडो पेडो सुभलेस हो भ० उदम पेडी उजलीरे लाल। अवल पेडी उदमेस हो० भ० मो० २४। गुपत पेडी गाढी घणीरे लाल। सुमत पेडी रूडी सोभ हो भ०। सूंघ पेडी सांतरीरे लाल। नीकी पेडी निरलोभ हो भ० मो० १५। ध्यांन पेडो अती दीपतीरे लाल। सखरी पेडी सीझाय हो भ०। समदम पेडी सांभलो रे लाल। निरमल पेडी गधन्याय हो भ० मो० १६। उतम पेडी गुरू आसतारे लाल। संबर पेडी मोरदार हो० भ०। निरजरा पेडी निरमलीरे लाल। अबोचल पेडी उपगार हो भ० मो० १७। जोग पेडो जिनवर कहीरे लाल। जाप पेडी भल जाण हो० भ० गुण पेडो गहरी घणीरे लाल। चढो चतुर सूजान हो भ० मो० १८। ईण विध पेडी अनेक छे रे लाल। धर्म रतन री धारहो भ०। उतम प्राणी उतावलीरे लाल। पग मेल्यां भव पार हो भ० मो० १९। अरिहंत गणधरा आद देरे लाल। आगे तीरया अनंत हो भ०। मोख पेडो पगमेल नेहो लाल। आणी भवनो

अंतहो भ० २०। सुरपत नरपत सूख सहुरे लाल। ज्यांसू अनंता जाण हो भ०। सिध गत रा सूख सासता रे लाल। भाख गया जगभाण हो भ० मो० २१। हलूकरमी जीव हुलसेरे लाल। सूण २ मोख सरूपहो। भ० जग सूख जाण्यो जालमा रे लाल। तिको तोरे भव कुंप हो। भ० मो० २२। अंतर आंख उघडनै रे लाल करो भलो करतुतहो। भ०। पाखंड में पडज्यो मतीरे लाल। सिवटवे सूत हो० भ० मो० २३। सहर बीदासर सोभतोरे लाल धर्म रोधणो हुलासहा० भ० रिष चंद्रभाणजी उपगारनै रे लाल। चित धरनै कीयो चंमासहो भ०। मो० २४। सवत अठारे अड सटेरे लाल। बद कातीक मासहो० भ० सूकरवार करी सोहीरे लाल। साख पेडी प्रकास हो० भ० मो० २५॥

संपूर्णम।

॥अथ ग्यान पचीसी लिख्यते॥

(राण पुरो रलयामणोरे लाल) एदेसी।

चहुंगत मांही चाकज्युं रे लाल। दडोतणो दिष्टंतहो। सुबी चारीरे। भमत भमत दुख भोगव्यारे लाल। आकरा बार अनंत। १। सु० धर्म रतन उरधारयेंरे लाल। टालजे पापनी टेव। सू०। अरिहंत देव अराधोयेरे लाल। सारोये सतगुरु सेव,। सू० धर्म। २॥ पुन्य प्रमाणे पामयेरे लाल। उतम कुल अवतार। सू० देही नीरोगी दीपतीरे लाल। आदरो भल आचार। सू० ध०। संसार भाकसी सारषारे। वारं नरभव वेस। सू०। निकसम छो निरवांण नैरे लाल कट जावे सरब कलेस० सू० धर्म ४। साध पणो

सूध श्रोदरोरे लाल। श्रावकना व्रत बार। सू० पोसा पडकमणां करोरे लाल। लीजे नर भव लाह। सू० ध० ५। सील सीरोवण सिवयेरे लाल। दुर हुवे तन दाह। सू० तपस्या करो कर्म तोडोयेरे लाल। भावना निरमल भाव। सू० मरुदेवा ज्युं मोषमें रे लाल। जीव सतावी जाय। सू० ७। खीमरा करो मन खंत सूंरे लाल। आणी अधिक उछाह। भ०। परदेसी राय तणी परेरे लाल। जीव भलीगत जाय। भ० ध० ८॥ क्रोधी नर क्रोधे करोरे लाल। सींह सर्प हुवे नीच हो। भ०। जगत हुवे वेरी जीसोरे लाल। मारे भुंडी कुमोच हो भ०। ध० ६। जमींकंद मांही जीवडोरे लाल। अनंता कह्या अरिहंत। भ०। भारी पाप छे भोगव्या रे लाल। त्यां त्यां धर्म अनंत भ०। ध० १०। काया माया कारमीरे लाल। झुठा नकरो भोर। भ०। आउ अथर जल ओसज्युंरे लाल। डाग-ला वाड्गे दोड। भ० ध० ११। जंबुंतणी परे गाजसोरे लाल। निद्रा मोह नीवार। भ० सावधान करे साधजीरे लाल। गाफल न रहो गीवार। भ० ध० १२। पर हरो नींदा पारकीरे लाल। निंदा करे गुण नास। भ० होरो सो नरभव हारनेरे लाख। नरका करे नीवास। भ० ध० १४। राग धेष राखो मतीरे लाल। राग ध्येष दुख रास। भ० ॥ जक पांमें नही जीवडोरे लाल। अहनिस रहे उदास। भ० ध० १४। कुरंग मरे वस कांननेरे लाल। पेखण हेम पतंग भ०। साग मरे वसना करेरे लाल। अती दुख पामें अंग। भ० ध० १५। मछमरे बस जीभरे रे लाल। हसती काया हेत। भ०। अेक अेक दुखण आपरारे लाल। तङफर मरे तेथ। भ० ध० १६। पांचु वसे पिंड जेहनेरे लाल। लपट रहे नित लाल। भ०॥ तिर्ण अपराधी जीवरेरे लाल॥ होसी कवण हवाल। भ० १७॥ ईंद्री वसकरी आपरोरे लाल॥ कापो च्यार कषाय॥ भ०॥ मन वसकर ज्यों सांहिलोरे लाल॥ जीव भलीगत जाय॥

भ० १८ ॥ काल आहेडो कोपीयोरे लाल ॥ कर झालीकबांण ॥ भ० ॥ कांण न रखे केहनीरे लाल ॥ बावे, अचुका बाण ॥ भ० १९ ॥ जरा करेतन जोजरोरे लाल ॥ जगत हंसे बहु जास ॥ भ० नारी नेह धरे नहीरे लाल ॥ परजन आवे न पास ॥ भ० २० ॥ माणक मोती मुंगयारे लाल ॥ असरफयां माल अतुल ॥ भ० ॥ मन वलभ मेलावडोरे लाल ॥ धर्म बीना सब धुल ॥ भ० २१ ॥ मन में ईसधारो सतीरे लाल ॥ करस्यां धर्म अनतो काल ॥ अरी आया सुख आगलेरे लाल ॥ क्षुण घडे तरवार ॥ भ० २२ ॥ तिण कारण तरुंण पणेरे' लाल ॥ बाल पणे बुधवान ॥ भ० ॥ उतम करणी आदरोरे लाल । धरो निरंजन ध्यान । भ० २३ । संवत अठावे से इठावनेरे लाल ॥ सुद सावण सुख कार ॥ भ० ॥ आखी पचीसी ग्यांनरी लाल ईग्यारस तिथ गुरु वार ॥ भ० २४ ॥ फतेपुर में फा बतीरे लाल ॥ सूगण मन सूहाय ॥ भ० ॥ रिष चंद्र भाणजो पुरी रलीरे लाल ॥ ग्यांन पचीसी गाय । भ० २५ ।

संपूर्णम ।

। अथ समझ पचीसी लीष्यते ।

(ए हवे ओसरे गगन घन उमायो ऐदेसी)

सूरतरु सुरमण सारसो । पारस नरभव पायरे ॥ सफल करो सूल धर्म सुं । भायना निरमल भायरे । चतुर सुण्यां नीनर चेत ज्यो ॥ १ ॥ अवीचल भजन आधाररे । सेवा करो सुध साधरी । निसदीन नेह लगायरे ॥ साधरी सेवा कीया बीना । जनम अखीया रथ जायरे ॥ च० २ ॥ करमां करी जीव काल कालया घणा ।

ओपमा उफणो जाण रे। तिल वडा जिमतल तले। अगनानी सुढ़ अयाणरे॥ च० ३॥ ईम जांणी समकत आदरो रे। सारा मांही सीरदार रे। समकित विन करणी सहु। छाणा सलुक सोछार रे॥ च० ४॥ जीव दया कर जगत सुं। बोलि ईम्रत वायरे। अल दोधो वमत न आदरो॥ सील पालो सुखदाय॥ च० ५॥ माया रा लोभ करो मती॥ मत करो कुडी मरोड रे। सुरनर सेठ सेन्यां पती॥ छिन मांही गया सव छोड़ रे॥ च० ६॥ वाणो सुणो वीतराग नी। भांजो देवो मन भरमरे। घा-गन्यां पालो अरिहंत री। पामो ज्यूं सुख परमरे॥ च० ७॥ ऐक ऐक सूरता छ ऐहवा वाहिर कोमल जिम बोर रे॥ सूख पर मीठा बोले घणा। घट मांही वाठन कठोर रे॥ च० ८॥ ऐक ऐक सुरता छि ऐहवा बाहर जेम वीदामरे। कोहांक मुख करडा वाह्यो। ताजा कोमल घटतानरे॥ च० ९॥ ऐक ऐक सुरता छे ऐहवा। वाहिर मांहो ऐक मीठासरे। दोनोंछ ओपमा दाख नी। कोमल गनान प्रकास रे॥ च० १०॥ ऐक ऐक सुरता छे ऐहवा नीच नीबोली समानरे। घट मुख जहर वसे घणो। ऐंधा वुधी सुढ़ अगनान रे॥ च० ११॥ हंस जीसा सुरता हुवे। न्यारा करे खीर नीर रे। कुमती सुमती न्यारी करे। वुधवंत म्याणी वजीररे॥ च० १२॥ ऐक ऐक सुरता छे ऐहवा ओलखे सरव आचाररे। पीताने माता तणी परे। सीख देवे हितकार रे॥ च० १३॥ ऐक ऐक सुरता छऐहवा। पुरष चतुर समपेखरे। सद गुरु साखधरे सहु। वीनयवंत हरष वीसेखरे॥ च० १४॥ ऐक ऐक सुरताछ ऐहवा। राखे मुडा प्रणामरे। सोकतणी पर साधसुं अहो निस आठहो जामरे॥ च० १५॥ ऐक ऐक सुरता छ ऐहवा हेत मीत होत कार रे॥ सोता समाध.चावे सदा। पेखोया हरख अपार रे॥ च० १६॥

चोगणतज गुण आदरो ॥ बावो भल धर्म बीजरे । सींचो जल सील संतोख सूं चंगो लागे सीव चीज रे ॥ च० १७ ॥ आलस मोह उडायनें नित समरो नवकार रे । आमता ओर राखो मती । पामो ज्यूं भव जल पार रे ॥ च० १८ ॥ आवसी काल अजाण थी । मारसी जिम मृगराजरे । आडो कोई नहीं आवसी । जाप जपो जिणराजरे ॥ च० १९ ॥ पंखीया उपर पापीयो आवि मीचांणो अजांणरे ॥ ईम आसी काल अजाणीयो । जाप जपो जगभाणरे ॥ च० २० ॥ मैं सुसेंसु सुढ करो मती । आवे नहीं संग आथरे । नारी कुटम्ब किण रो नहो । समरण चालसी साथरे ॥ च० २१ ॥ घट मांहीं हरख धरो घणो आ ज्यो रुढो उपदेस रे । जे सुख चाहो थे जीवनो राख ज्यो धर्म नो रेसरे ॥च० २२ ॥ समत आठारेसे ईठावने बद भादु नवमी भोम वार रे । रिप चन्द्र भाणजी फतेपुरा समज पचोसो कही साररे ॥ २३ ॥

ईति समझ पचीसी संपूर्ण ।

॥ अथ बेराग पचीसी लीख्यते ॥

(चीज करे सीता सतीरे लाल ऐदेसी)

मास सवानव मानवीरे । माता उदर मंझार रे । चतुर नर । भारी संकट भोगव्यारे लाल । पाप तणे प्रकार रे ॥ च० १ ॥ चित मैं विचारीने चेत ज्यारे लाल । असूनी मांहो उपनोरे । असूच रोलीनो आहार रे ॥ च० भुल गयो दुख भोगयारे लाल ॥ गर भ्योमोहत गीवांर रे ॥ च० २ ॥ कांण न राखे केहनो रे । छकि योफोरे मद छेलरे ॥ च० फुल रोहीडा ज्यूं फुलीयोरे लाल० ॥

भिन सींगरो बेहल रे॥ च० ३ ॥ संबलफुलसी साहबीरे॥ आउषो जल ओसरे॥ च० काया काचो कूंभसोरे लाल। जरा छुरे तन जोसरे॥ च० ४॥ सेखसली जिम सामठारे। बांधि कूडा बंधरे। च० नेम व्रत धारे नहीं रे लाल। अग्यानी मुरख अंधरे॥ च० ५॥ माखी जिम गुल खेलमेरे। पड ने छोड़ प्राण रे॥ च० कामीने ईम कालयोरे लाल०॥ जन्ममरण घणा जांण॥ च० ६॥ संसार रुप समुद्र मे रे॥ कलमा च्यार कषायरे॥ च० पण्डित नर पैसे नही रे लाल। मुढ पडे त्यां मांहरे॥ च० ७॥ सूतर में भाष्यो सही रे। साधूजी रतन समान रे। च० उतम नरकोड आदरे रे लाल॥ प्रदेसी ज्युं पीछाण रे। च० ८॥ चौ०। सोप सीगोटया सारसारे। षोटा कूगरु कूदेवरे। च० अकल विहुणा आदमीरे लाल। सारे त्यांरी सेवरे। च० ९॥ चौ०। काचरे महल में कूकरो रे। भुसे घणो रूप देख रे। च० इम भुला आकरयोरे लाल। अग्यानी लोक अनेक र॥ १०॥ चि०॥ निन्दा करे सूध साधरी रे। झुठारो पष झाल रे। च० बुड़ा घणा ते बापडा रे लाल हुसी बोहल हवालरे॥ च० ११॥ साध समीपे साभलेरे। बिध २ सूत्र बात रे॥ च० मकसील जेवा मानवी रेला ल० माने नही तिल मातरे॥ च० १२॥ गरक हुवे जावे ग्यान मेरे॥ समझो चतर सूजाण रे॥ च० कोरा घड़ा रीडपमा रे लाल०॥ तजदेवे षोटी तांणरे॥ च० १३॥ घर धंधे षुतो घणो रे॥ जुतो भारी जेहरे॥ च० सूतो पाप री सेज में रे लाल। आगे दुख अछेहरे॥ च० १४॥ सतगरु बैद सारखारे। ओषध धर्म अमोल रे। च० कर्म कठीन रोग काटनेरे लाल०। बोले इम्रत बोलरे॥ च० १५॥ नरक गामीरे लागे नहीं रे। विरमदत जेम विचार रे॥ च० चित बचने चेत्यो नहीं रे लाल०। हीरो सो भव गयो हार

र ॥ च० १६ ॥ सील रतन सारा सीरे रे। पाल्या उतरे पार रे ॥ च० सेंठ सुदरसण सील घी रे लाल०। सीव सुख पाल्या सार रे । च० १७॥ परनारी पेमे पड्यो रे । मनरथ नरक मंझार रे । च० मुंज नरेसर मोटको रे लाल० । खलक में हुवो खुवार रे ॥ च० १८॥ संतोषी नर हुवे सुखीरे । सीला-वटा ज्यूं सुर रे । च० अमर विमांण मे उपनोरे लाल० ॥ झांझे सुषरयो झुलरे ॥ च० १९ ॥ लोभी लालच लोभयोरे । धारे नहीं धर्म धेठरे । च० सातमी नरक में संचाल्यो रे लाल० ॥ सागरदत नाम सेठरे ॥ च० २० ॥ पारस फरस लागरा पछे रे । लोह थी होवे हेमरे । संगत किधा साधरी रे लाल० । आदमी सुंधरे एम रे च० २१ ॥ भडभुंजारी भाड ज्यूं रे ॥ पच रह्यो जग पुर रे ॥ च० उतम नर कोइ उछलेरे । दुष सेती होवे दुररे । च० २२ । अंतरंग आलोचनेरे । धारे जिणवर धर्म रे । च० करसांरो करदो कोयलारे लाल० । पामो सूष प्रमरे । च० २३ । संवत अठारे साठमेरे । सूद आसू छठ भोमरे । च० विसपत वार विदासर रेला० । आषी ढाल अमोलरे । च० २४ । कीधो के उपगार कारणेरे । वेराग पचीसी वेसरे । च० रिषचंद्र भाण कहे मने रे लाल० । राषो दयारो रंगरे । च० २५ ।

इति संपूर्ण ।

॥ अथ प्रमोद पचीसी लिष्यते

नरक दुखारो किधो निरणो । उतराध्येन मंजार । विजे अंग साहाविरजी । ओरो कयो घणो विसतार । (सूग्यानी पापने कीजी

दुख। ह्वांरे हो विवेकी धर्म धरीजेरे । १।) प्रसन व्याकरन मैं कह्योरे। नरक तणो अधीकार। भगवंत प्रभु भाषीयो। हुं जोडुं तिणरा अनुसार। सू० २। आरंभ करी अती मोटकारे। धनरे धाप अपार। मारे पांचु इंद्री जीवने। नहो आणि सक लिगार। सू० ३। मांस भषे मद्रा पिवेरे। कयो भगवति मांहो। उवाइ ठाणा-यंगे आषीयो। जीवा पता नरक मैं थाय। सू० ४। चोरी जारी आदी देइनेरे। ईधका केरे अन्याय। परघर षोवे पापया। जीवा चल्या नरक मैं जाय। सू० ५। कुड कपट करे घणो रे॥ आपे अछता आल। जाय पड़े अंध घोर मैं। ज्या रे उठे झालो झाल। सू० ६। कुं लीषा मारे घणो रे। देवे गांव जलाय। धाड़ा करे अती पापीया। जीवा चल्या नरक मैं जाय। सू० ७॥ भेष लियो भगवांनरो रे। सेवे घणा अणाचार। भारी नरक मैं भोगवे। जीवा-षमे गुरजां री मार॥ सू० ८। आवे जम उतावलो रे। करतो मारो मार। दुष देवे पापी जीव ने तेतो। सांभलज्यो नर नार। सू० ९। मारे मुदगर मुसलारे खडग तणी देवे मार। केईक षाल उतार ने रे॥ बले देवे उपर षार। सू० १०। केईक उधा टेरने रे। सोटा मारे तांह। कईक बाले अगनमैं रे। कइ कागला वणी षाय॥ सू० ११॥ भुष अनंती भोगवेरे। त्रिषा अनंती जाण। सीत ताप बेदन सहे। बले बींधे भाला वांण। सू० १२। लोहो राध नी नंदी उकले रे। डुवावे तिंण मांह। सीला गला रे वांधने रे उपजावे दुष अथाह। सू० १३। सुष संडासा फाडने रे। तातो पावे तोय। उंचो आकासे उछले। त्रिसूले लेवे पोय। सू० १४। व्याघ्र बिघज सांभलोर। तड २ तुटे प्रांण। तीषाते तरवारसा। जव भुवे घणो हेरान। सू० १५। उंचा परवत उपरे रे। पापीनें चढाय। नीचो धरती नाखदे। जब टुक २ हो जाय। सू० १६! तो पिण पापी मरे नही रे। फिर पाछो मीलजाय। सोष करसी

आउ नरक में रे। तिती मास्या नही मराय। सू० १७। दीसे जम डरावणा रे। बोले ऐहवो वाय। मती मारो माहाराजजी रे। पिण गरज सरे नही काय। सू० १८। निरदेई नगरी हणीरे। हुवे जीभा री सेर। ऐहवा सबद हुवे लोकमे। ज्यांरे प्रगट था पाप अघर॥ सू० १९॥ जेहवी मानव लोक में रे। वेदना विवध प्रकार। तिण सूं अनंती नरक में रे। निश्च भुगत निराधार। सू० २०। पहली पाप करे घणा रे। पछे समझे सुरत संभाल। तो पिण सूरगा संच रेरे। जिम पाछल खेती सुकाल। सू० २१। परदेसी नद पापीयो रे असी बरसा री आय। दीन गुणतालीस दीपतो॥ भलो कीधो धर्म उछाव॥ सू० २२। श्रावक रा ब्रत पालने रे। उपनो अमर बीमाण। माहां विदेह खेतमें मी मोक्ष जासी निरवाण। सू० २३। सवत अठारे सो चोसटेरो सुद मीगसर गुरुवार। प्रमोद पचीसी प्रेमसुं। जोडी सुत्र अनुसार। सु० २४। रिष चंद्रभाण कहे मनी रे। खरबुजे री कोठ। जो सुख चावो जीव ने। तो लीज्यो धर्म री ओठ॥ सू० २५॥

संपूर्ण।

॥ अथ नेम पचीसी लिख्यते ॥

(बरसाणे बोल्या छे मोर। ऐदेसी)

सुमत बीजे सुत सोभता जी भिग भिग तन छिब जोर। बीनैको नेम जपो कर जोड॥ १॥ दरसण दीठा दुख टलेजी नासे कर्म कठोर॥ बी० २॥ राजमती रलयामणी जी। जुगती दीठी

जोड ॥ बी० ३ ॥ करी सगाई नेम नी जी । क्रष्ण घणी घर कोड ।
बी० ४ ॥ जान करी जादु पती जी ॥ नर नरी चहुं ओर ॥ बी० ५ ॥
सहीया गावे, सोहला जी ॥ जाचक डीगोर ॥ बी० ६ ॥ बींद बण
व कीयो वणी जी । माथे बांध्यो मोड ॥ बी० ७ ॥ पट हस्ती उपर
बेठने जी । चाल्या समद कीसोर ॥ बी० ८ ॥ मोरी करवा कारणे
जी । पसू पंखी ठोर ठोर ॥ बी० ९ ॥ भेला कीधा राजवी जी
सूणयां कांना सोर ॥ बी० १० ॥ दया आणी दिल भीतरे जी । हसती
दीधो फोर ॥ बी० ११ ॥ जादु पती आडा फीरया जी । कीधा
बोहत नीहोर ॥ बी० १२ ॥ भाईते भुंडी करी जी ॥ तेल चढी देई
छोड़ ॥ बी० १३ ॥ लोका मांही आपणी जी ॥ अपजस होसी जोर
॥ बी० १४ ॥ नेम कहे में नारने जो बिष ज्यूँ दीधो छोर ॥ बी० १५
मन लाग्यो सींव मोख सुं जीं ॥ आणंद री नहीं ओड ॥ बीं० १६ ॥
नेमकवर जग मोहणीं जीं । तडके दींधी तोड ॥ १७ ॥ बीं० सहस
पुरष सागे करी जीं ॥ संयम लीयो धर कोड ॥ बीं० १८ ॥ राजल
सणी घरणीं ढलीं जीं । मनडो कींधो मोड ॥ बी० १९ ॥ संयम ले
सुगते गईजी ॥ कोण करे तसु होड ॥ बीं० २० ॥ दया धर्म दीपा-
यने जीं । नेम तीखा भव घोर ॥ बी० २१ ॥ ध्यांन लाग्यो सुज
नेमसुं जीं । जेसे चंद चकोर ॥ बी० २२ ॥ संवत अठारे वासटे जीं
बीदा सर सुभ ठोड ॥ बीं० २३ ॥ रिष चंद्रभाण कहे नेम नें जी ।
वांदु वे करजोड ॥ बी० २४ ॥ नेम पचीसीं गावतां जी । टल जावे
भवखोड ॥ बीं० २५ ॥

इति श्रीनेम पचीसीं संपूर्ण ।

॥ अथ वहर मांन पचीसी लीख्यते ॥

(मेरे ईतनीं चाहीये । ऐदेश)

श्रीमंदिर जगसेहरा । सहुनें सुखदाई ॥ भावभले मन भेटया सिवपुर नीं साई ॥ श्री० १ ॥ जगमंदर जुग दीपता । जग अंतर जामी ॥ जग नायक जग रा धणी । वांदु सीर नामी ॥ श्री० २ ॥ वहु स्वांमी वांदता । भव भव दुख भाजे । अजर अमर पदवी लहे भले सुख भाजे ॥ श्री० ३ ॥ सुवांहु समरु सदा । निज सोसन माई । अन्य देवरो आसता । सबही छोटकाई ॥ श्री० ४ ॥ श्री सुजात प्रभु स्वांमी ने । नमता नव नीधी ॥ अठुंई कर्म खपाय ने पामें गत सीधी ॥ श्री० ५ ॥ स्वय. प्रभुजी ने सेवीया । दुख दालि-द्र जावे, ॥ आणंद ईधको उपजे । सासता सुख पावे, ॥ श्री० ६ ॥ रीषभा नंद जिणंद ने ऐकसो आठ वारो । लुल २ नें लटका कीयां । पामें भव पारो ॥ श्री० ७ ॥ अनंत बीर अरिहंत ने । जपया दुख जावे, ॥ ईण भव आणंद उपजे । परभव सुख पावे, ॥ श्री० ८ ॥ सुर प्रभु सुरज समा । मल गयांन प्रकासे । मीथ्यां अंधारो मेटने । पुरी मन आसे ॥ श्री० ९ ॥ साहा बीदेह खेतर मझे । बे-साल बीराजे ॥ गयगंजण जिम गाजता ॥ पाखडी भाजे ॥ श्री० १० वजर धर जी ईगयार मां । भावनां करी भेटे ॥ दीन दयाल दाने सरु । मन सांसो मेटे ॥ श्री० ११ ॥ चद्रा नंद जी पादरो समरण सुख कंदो ॥ ईण भव प्रभव उपजे । अधीको आणंदो ॥ श्री० १२॥ चरण वांदु जींण चरणकी । सारे नित सेवा ॥ वेकर जोडी वीनवे, ॥ असंख्य देवा ॥ श्री० १३ ॥ भुजंग जिणे सर भाव सूं । समरया सुखहोई ॥ सखरी गत पामें सही ॥ सांसो नही कोई ॥ श्री० १४। ईसर स्वांम अराधीयां ॥ निश्चे गत नीकी ॥ बीजी करणी वेसज्यु ।

समरण सीर टीको ॥ श्री० १५ ॥ नेम प्रभु निश्चल घणां। मेरु गिर जेमो ॥ जनम जीतब सफलो हुवे ॥ समरणा नित नेमो ॥ श्री० १६ ॥ ईम्रत सुं मीठी घणी ॥ बीरसेनजी री बांणी ॥ सुण सरधा हुवे समगतो। पांमि निरबाणी ॥ श्री० १७ ॥ माहा भद्रजी मोटका मोटा उपगारी ॥ माने मोटा महीपती। देवे. पार उतारी ॥ श्री० १८ ॥ देव जस मुख देखतां ॥ हरखे नर नारी ॥ मेटता पातक उडे ॥ जपया जे जे कारो ॥ श्री० १९ ॥ अजीत बीर अरिहंतने। बंद तां गुण बांधे ॥ ओगण सबही उडायने ॥ सूभ कारज साधे ॥ श्री० २० ॥ सुर नर अप छरभाव सूं। सारि जिण सेवो ॥ देवे. कडो देसनां जग गरु जग देवो ॥ श्री० २१ ॥ सुण बाणी जिणंदरी जग लागे फीको ॥ बैरागी मन बालने ॥ करे कारज नीको ॥ श्री० २२ ॥ बीसुंही बहर मांनजी ॥ करीं ने कर्मा अंतो ॥ परम उतम गत पांमसी ॥ बांधो बुधवंतो ॥ श्री० २३ ॥ संवत अठारे से तरेसठे ॥ दीयाली आयो। करी पधोसी कोड सूं ॥ बहरमानजी बखाणी ॥ श्रीं० २४ ॥ बणीहद मांह के बडो। दुक पर चावो ॥ रिष चंद्रभाणजी भणि ॥ पडीया सूषपावो ॥ श्रीं० २५ ॥

इति संपुर्ण।

॥ अथ सीलरा कड़ा लिष्यते ॥

धर्मनां के अनेक प्रकारके। व्रत मोटा कह्या पांचुही सारक। सील समांन जीको नहीं। सुत पुरांण कुरांण बीचारक। सील समांन जीको नही। सीलसुं सांडजो प्रीत अपारक। पररमणी जणणी गणो। आंख मींच मत करो अन्धारक। कालही परभव

पुहचाणों। दुख देसी बले काम बीकारक। आकरे आवे नही लागसी सवलो लोजेराजो समकित सारक। सील संघाते जेरा सीले। रतन जडित जोवो सोना नो हारक। तो सोणगार सुहामणो। सील समो नही कोई आधारक। (सील अखंडित सेवजेरा॥ १॥) जेहवो चंचल कुंजर कांनक। बेग पडे जिम पाको पानक। जेहवो चंचल बीजलो। अथिर हुवे जीसो संध्यारो भांणक। डाभ अणी जल बीदवो। जेहवो जोवन सूं अभिमांनक। खिण खिण जावेछे छीजतो। विषय मत राचजेरा बीष समानक। फल कोंम्पाकनी ओपमां। सुख नहीक या दुखारी खांण क विपत होय सुवा सही। ईन्द्रनरेंद्र वडा वड़ा राजानक। आसा अलुभा हो चला गया। परभव नांहीं कोसो घणा हेरांनक। रमणी क रुप मती राचजेरा॥ सुत्र सांह भांख्योक श्रीभगवानक। सींल ॥ २॥ सुध सींल पाल्यां कुल कलंक न होयक। जिण धर्म साचो करीं जानज्यो सोयक। पापने मुलथीं पर हरो। ऐम बीचार करो मन सांहक। देव देवी तणो पुजनीक होयक। तीन लोकामें जस हुवे घणो। रोगने आपता तेहनें कोयक। मोख गामीं हुवे सीलसूं। अगन सीतल हुवे सीलसूं जोयक। सींलसूं बिष ईम्रत हुवे। सोलसूं सर्प हुवे फुलनी मालक। हांथी हुवे बकारी सारसो। सील सूं सींह हुवे म्रग समांनक। आपदा टले संपद सींले। कामण दीष्ट नोष्ट देवेजो टालके। समुद्र थाह देवे जो तेहने। मेरु लीयो हुवे सतकारके। बीर जिणेसर ईमकही। ऐ गुण जाणीं सील सुध पालक। सील ३॥ चोथे जो सबर दसमेंजो अङ्गक। अरथ कहुं तुम सुण ज्यो मन रंगक। अङ्ग सुं आलस परहरो। बारेही परखदा तेहने संगक। वाणी जोजन गांमनी। श्रीबीर बखाणीये सील सुचंगक। सुगंण माणस मन मांनज्यो। जिण आद्न्यो। घणो सील उछरंगक। तेतीन्या संसार समुद्रमें

सेष बाकी रही नदी जिम गंगक। जतनधणा करी राखज्यो। ऐक भागां सहुब्रतानो भंगक। ते भणी ब्रिहम चार्य मोटको। मोटी कीयो छोटा रो प्रसंगक। बतीस उपमां वरणवीं ऐक२ सूं सुणो अधिक मन रंगक। सील॥ ४॥ ग्रह गणां मांही बडो जिम चंदक। रतनां कर आगर मांही समुद्रवा। रतना में वेडुर्य मोट को। भुखण मोटको मुगट सोभंतक। बसतां मांही कपासनीं फुला मांही मोटको अरबींद फुलक। चंदनमें गोसीस बखाण ये। हेमवंत मोटको। अर्धद ह्रदक। नदी सीतोदामोट-की। समुद्रां में मोटको सयंभु रमण संमुद्रक। रुचक पर्बत मोटो बीटली। हसतीयां मांही मोटको ऐरावण गंधक। चो पदमें सींह केसरी। सोवन कुमार में देव देवेंद्रक। धरणी धरनाग कुमार में सर्बहतामें ब्रिछबरत इंद्रक। सी० ५। देव लोकां में मोटको पांचलो जाणक। सभामें सौधरमी सभा बखा-णक। थित मैलव थीत मांकही। दाना मांही बडो अभयजी दानक। रंगमें कृसचीमोट को। सघयणां मोटको पहलडो जा-णक। सम चोरस मोटको सठाण में। ध्यानमें मोटको सुकल धयानक। ग्यानांमें केवलदीपतो। लेस्या नही कांई सुकल समांनक। मुनीसरां माही तीर्थं कर। खेत्र में मोटको माहा वीदेह जाणवा। परबता में मेरु उचो कह्यो। वनां में नंदण बन बखाणक। रथ मांह मांह रथ मोटको। ब्रतारो अधीपती सील बखाणक। सी० ६। सुगंध मांणस तुमे साभलो रासक। जावे छे जोबन टूटे धन आसक। ज्युं सरल रहज्यो सहोईण जुग सुगधे सांडीयो फासक। बीखेय बीलास मतराच ज्यो। ईण जुग दलपती थया छ दासक। आंख आणी किम उघडे। मोडेछ अंग करे सुख आसक। ईणभव दास सहु राखसी। बले धन जोबन रो करे बीणासक। नाम छ अबला नारनो इंद्र नरेंद्र करा सहु नासक।

त्रीभुवन पाय लगावृया। निजर पड्या करे सोल रोमासक। विषय वधामण वावली॥ दुर तज्यां मीले सोवपुर वासक। सो० ७। अथिर हुवे जीसी आभा नी छांहक। अथिर हुवे जीसी कायर बांह-क। अथिर कन्यां धन जेहवो। अथिर हुवे जीसो धुंदरो मेहक। अथिर राजा जीसो दुवलो॥ अथिर धनुष आकास नो जाणक। अथिर ध्वजा देवलतणो॥ अथिर जाणों जीसो ग्रीषम नों मेहक। अथिर छ फुसनों तापणो। अथिर जाणो जीसो मानवृ देहक। अथिर छो कुंभ माटी तणो। फुट जावे लागे थोडी सी ठेसकं। अथिर छो रंग पतंगनो। अथिर जाणो जीसो नार नो नेहक। परजे आप जे-हने छेहडोया नार देखालसो छेहक। सो० ८। नारीनां चरित्र नो न लाभे पारक। उंदरो देखीनें हुवे भय भ्रांतक। सर्प हो सीस लेई सुवे,। देहलोडा दीयां दुख धरंतक। काम पडे गिरवर चडे सोकल पाय कपोल धरंगक। कंध आणी धरणी धुरा। कामणीरे संग दुख अतंतक। धरनी नाथ धुजायने। खिण मांहो रंग वो रंग थायक। मुंज राजा तणो क्षय कीयो। नरक सूं नारीयां दद छुटायक। नीरखज्यो नेवरा पोंडता। पास पड्या थका कोयक छुटं तक। ये पहली आपो संभालज्यो। मन करो रमणी सुंरमवारी खंतक। सो० ९। नारी अरथे हुवा सवला संगरामक। वडा वडा भुपती रह्याछे ठामक। कट कट सुवा छ अतीघणां। कुंण कुंण देसने कुण कुण गामक। कहुंछुं थोडी बांनगी' चित लगाय सुणो मन तेहनो नामक। द्रोपदो रे प्रसंग सूं कृष्णजी पाडी पदमो तरनी मामक। रावण सीता न परहरी। भारथ कीयो छे लीछ-मण रामक। रुकमणी ने पदमावती। कृष्णजी परणीया करी संगरांम क। उदाईयो चंद प्रद्योतनें। ते पिण मोनईया फुल करे संग्रामक। अर्जुन जुध कीया घणा। रंगने सुभद्रा परणवा काजक सो० १०। मेणरेहा तणे कारण जाणक। मेणरथ हणीया छे संधव

प्राणक। मर ते गयो नरक सातमी। चंद प्रधोत ने तेहीज जांणक मृगावती रुप सांभली फोजा लेआवियो मोटे मंडाणक। कसुंबीं नगरी घेरो दीयो। जीवा रो कीयोघणो घमसाणक। रोहणी परणवां कारणें वसूदेव राजा कीयो जुधतांणक। बले रांणी पदमावती कोणक बचन कीयो प्रमाणक। ऐक क्रोड असी लाखनो मौंनष मराय कीयो घमसाणक॥ सोल० ॥११॥ काम कला ईया खोपेजी कारक। कुलतणो केडे उडावेजी छारक। उलट रहे मद सूं छकी। उच छोडी करे नीच सूं आचारक। बोचरया बाघण सू बुरी। इण जुग चित नीं चोरण हारक। छल छिद्र रहे जोवती। रहे कांम कटाक मे नायका नारका। नयण वेयण बरसावती। लहकती वहकती तीखी तरवारक। लख ग्यांनी आगे लुटया। अरणको दिकनें आद्र कुमारक। मोटा रिषेस्वर तेहने। सयंम धर खोस्यो धुतारक॥ नकं देवी जिणवर कह्यो। नारी नी संगत बरजी वारंजी बारक। सो० १२। ओरनो रुप जोवे सीणगारक। ओर सुं भोगवे भोग बीलासक। बचन सूं ओरने रीझवे। ओर सूं चित हुवे चित मंझारक। आल देवे सीर उपरे। कुडरी कोथली कपट भंडारक। कलह काजल तणी कुंपली। कामण भुसीयो सकल संसारक। मधुर बचन बेस्वासदे। विरचतां लावे नही काईं जी बारक। स्वारथ न दीसे सुधतो। नारीजी वीणासयो नीज भरतारक। सुरीकंता सी सांभलो। तेहने नेह जीसो नीमनो छारक॥ सोल० १३॥ सगली ही नार नही चंचल होयक॥ पुरष भला मत कहो सहु कोयक। नार ज्युं नर पिण जाणज्यो। आपणो दोषण जाणज्यो सोयक। सेवता विष दोनुं बुरो। सोलसूं सीवपुर दोन्यां ने होयक। बाजे हो तालीजो किण बीधे। ऐकण हाथे नहीं वाजे कोयक। पुरख कोई परनार सूं॥ सेवे कुसील जनम देवे खोयक पाप उदे हुवे ईण भवे। राय खोटे लुटे मुली देवे, पोयक। प्रभवमें

दुख हुवे घणो। ईण समो फांस बंधण नही कोयक॥ सी० १४॥
नारी हुवे केई सील नी खाणक। वीर जिणंद कीया त्यांरा वखाणक
संकट पड्या कायम रही। चंदण बाला वले चेलणा जांणक। राज
मती वले द्रौपदी। सुभद्रा सती नी सील वखाणके॥ श्रीमती ने
पदमावती। दवदती अंजना सीलनी खांणक॥ मैणरया कमला
वती। म्रिगावती सीलमें सुध प्रमांणक। सतयांरा नाम केता कहुं
जिण धर्म दीपायो राखी कुल काणक। जनम सफल करी जस
लीयो॥ सुधमंन पालवे, जिणवर आणक। धन २ त्यारे व्रतने
सील रे कारणे भाजंदे प्राणक॥ सी० १५॥ सब तरु आगणे उगी
छ मूरक॥ ओगणी रुपे जो आक धतुरक। केष्ट करे अंग वासना
छोड ने सील करे भषपुरती हाथी सटेखर संग्रहें॥ रतन चींता
मणी रालदे दुरक। काचग्रही कुमती लहे। बिष्टा मांह सुडो
घाले गंड सुरक॥ कण सहत कुडो जी छोड छे। आंबां न दाडिम
छोड खोजुरक॥ काग नीबोली रयन करे। बिषयसेवा चोथोव्रत
चकचुरक। अकल वीनां जीव वापडा॥ नर्क नीगोदमें बह गया
पुरक। सासता सुखा नी होवे चाहना तो पालज्यो सील नारी
तजो दुरक॥ सी० १६॥

संपुर्ण।

श्रीश्री१०८ श्रीभीखणजी स्वामी क्रत

उपदेस की ढाल लिष्यते

दुहा—अरिहंत देव अराधीये। निर्मल गुण निगरंथ॥ धर्म जिण आग्या मझ्या। तत्व अमोलख तंत॥ १ ॥ सुढ मती मन मोहवा। थापे हिंसा धर्म॥ छांडे निर गुण देव गुर। ते भुल्या अग्या नीं भर्म॥ २ ॥ कहे धर्म ने कारणे॥ प्राणि हण्यां नही पाप। देव गुरु कारणे हण्या। आग्या दे जिण आप॥ ३ ॥ इम कही विरुध परुपता। नही आणे मन लाज॥ देवल प्रतमा कारणे॥ करे अनेक अकाज॥ ४ ॥ हिंस्या धर्मी जीव ना॥ भाख्या फल भगवंत ठाम ठाम सूत्रमें देखज्यो॥ ते सुण ज्यो करो खंत॥ ५ ॥ ढाल १ लो०। (भवीयण जोवोरे होरदे वीमासी एदेसी)। परिथ्वी हणी देवल प्रतमा करावे॥ धर्म हेते जीव. मारे॥ त्यांने मंद बुधी कह्या दसमें अंगी। वले पेहलेई आस्रव द्वारेरे। कुमत्यां थे हींस्यां धर्म काई थापो॥ ऐ आकडो १ ॥ समणों मांहण कोई हींस्या परुपे॥ छेदन भेदन सोग। सूयगडायंग अठारमें आख्यो॥ वाला री पडसी बीजोगरे॥ कु० २ ॥ आचारंगरे चोथे अधेरन॥ दुजे उदेसे जाणों॥ धर्म हेत हण्या दोस नहीछे॥ आ अनारज री वाणीरे॥ कु० ३ ॥ आचरंग रे चोथे अधेरन॥ दुजे उदेसे जाणो॥ धर्म हेत कोई जीव नहीं हंणनो॥ ओ आरज बचन प्रमाणो॥ कु० ४ ॥ जीव मारम जनम मरण मुकाव्या॥ पामे अहेत अबोध॥ आचरंगरे चोथे अधेरन

पहले उदेसे सोधरे ॥ कु० ५ ॥ आचारंगरे चोथे अधेन ॥ पहलो उदेसो पीछाणो ॥ धर्म हेत जीव नहीं हंगनो ॥ तीन कालरा जिन जो री वाणीरे ॥ कु० ६ ॥ प्रश्नव्याकरण रे पांचमें अधेन ॥ प्रतमा परग्रह में चाली ॥ प्रगरो सेवो धर्म कहोने ॥ कूंमती होवडा कांई घाली ॥ कु० ७ ॥ तीन मनोरथ श्रावक ना चाल्या ॥ ठाणंग पांचमें ठाणे ॥ आरम्भ प्रीग्रहो छोड़णीरी भावनां । भाव सव्या धर्म किम जाणेरे ॥ कु० ८ ॥ दसमो कालक धर्म अहिंस्या । दया ग्यान रो सारो ॥ सुयंगडांग पहले अधेन ॥ चोथे उदेसे मंझारो ॥ के० ९ ॥ आठाईस मे उताधेनमें मोख ना मारग अमोल ॥ थे देव गुरु धर्म मोलरा थापो आहीज मोटी थांरे पोलरे ॥ कु० १० ॥ धर्म ठीकाणो जीव हणोतो । दया कीसी ठोड़ पोलो॥ कुगरा ना बहकाया आतमने । कांय लगावे कालोरे ॥ कु० ११ ॥ उत्राध्येन रे बोरमें अध्येन । तीर्थ सील बतायो । थे सीतुंजा दिक तीर्थ थापो । ओई पिण झुठ चलायोरे ॥ कू० १२ ॥ ग्यांन दरसण रा जतन करेतो । जात्रा कही सुखदायो । गीनाता सुत्र पांचमे अध्येने ॥ तो थाने तो खबर न कांयो ॥ कु० १३ ॥ ईम ही माहावीर सोमल ने ॥ जात्रा भगवती में भाखी ॥ शतक अठारमें दसमें उदेसे । चारित्र जतन जात्रा दाखोरे ॥ कु० १४ ॥ ठाम ठाम तीरथ जात्रा असलोक । जिण कह्यो आगम मांही । ते तीरथ जात्रा थांसूं करणी न आवे ॥ तिण सुं मांडीं बीकलाईरे ॥ कु० १५ ॥ सेतुंजेने पर्वत कह्यो जिणेसर । पिण तीरथ न कह्यो लीगारो ॥ अन्तगढ़ गीनाता मांही । देखो पाठ उघाड़ो रे ॥ कु० १४ ॥ तीरथ कहे तिण माथे पग देवो । तिण उपर चढे जुती सुधा ॥ वले मल सुत्र तिण उपर नाखे । त्यांरे लेखे ते पुरा उंधा रे ॥ कु० १७ ॥ सुख सूं कहे मे । प्राकरण टीका मांना ॥ वले माना आगम पेताली ॥

तो पिण बोल्या रो नही टीकाखो । त्यारे कर्म तणी रेख काली रे ॥ कु० १८ ॥ माहा नसीथरे अध्येन पांचमे । कवलप्रभा-कह्यो सोय ॥ सावज पोपनां आला जोनाला ॥ त्याने सुढ माने कोयरे ॥ कु० १६ ॥ मिथ्यात पणे द्रोपदी प्रतमां पुजी । पुला दिक थाया समकित पाई ॥ गंध हस्त आचारज कह्यो छे अंग निरयुगती माई रे ॥ कु० २० ॥ अभव संगमां दिक प्रतमां पुजे तेही प्रतमां सुरयादी पुजे ॥ ते जीत बीहाररी लोक कोरत छ । आगम री जुगती भरतन सुझे ॥ कु० २१ ॥ भसम ग्रह उतरया पछे समण निगरंथ नी उदे पुजा थाय ॥ ऐ प्रतच्च पाठ कह्यो कल्प सूतमें । ते बीकला ने खबरन कायारे ॥ कु० २२ ॥ सूप्रष्ट कह्यो जिन वलभ खरते । तिण तीरथ जाचा उडाई ॥ जिन प्रतमां थापे करि पेट भराई ॥ भसम ग्रह प्रताप वताई रे ॥ कु० २३ ॥ ईत्यादिक प्राक्रण टीका में ॥ बोल कह्या छे अनेक ॥ थे कहो प्राक्रण टीका म्हे मांना ॥ पिण बोल नही मानो ऐकरे ॥ कु० २४ ॥ जदकहे प्राक्रण टीका नही माना ॥ तो आरो नाव लेवो किण न्याय ॥ सूत्र नो उतर कहु इण उपरी ॥ ते सूण ज्यो चित लायरे ॥ कु० २५ ॥ भगवंतने बांदता तथा दिच्चा लेता ॥ कह्यो पेचां हियाऐ सुहाय ॥ तथ परलोक सुहा सुहाऐ ॥ राय प्रसेणी भगोती मांही रे ॥ कु० २६ ॥ प्रतमां पुज तथा लाय सूंधन कांढ ता ॥ कह्यो पछा होया ऐ सुहाय ॥ राय प्रसेणी भगोती मांही तिहां ॥ प्रेचा पाठ कह्यो नाही रे ॥ कु० २७ ॥ प्रतमा पुजे लाय सू धन काढे ॥ तोख्या पेचाहीयाऐ नही कांई ॥ भगवंत ने बांदता दीच्चा लेता । कोई पछा पाठ छ तांहीं ॥ कु० २८ ॥ पछा हीयारो ते इण भव मांही ॥ लोकीक बाता मंगलोक ॥ पेचा हीयाऐ ते प्रभवमांही । लोकोतर बात तहतीक ॥ कु० २६ ॥ कोई कहे जिण प्रतमां पुजे । ते तो नीसोसाय पाठ मोख जाचे ॥ तो

खंधक नो ईखंकार लाय सूं धन काढे। त्यांपिण नीससाएे पाठ पीछाणो रे ॥ कु॰ ३० ॥ पाछा पाठ लारे नीससाय कह्यो छे। ते ईण भव मांह द्रव्य मोख जोय ॥ लाय थकी धन बारे काढ्या ॥ दलिद्र मुकावो होय रे ॥ कु॰ ३१ ॥ राज बेसतां सुरयाभ प्रतमां पुजी ॥ त्यां पछा पाठ लार निससाएे ॥ ते पिण तिण भवमे ॥ विघन मेटननें विन मोखसूहाएेरे ॥ कु॰ ३२ ॥ तुंगया नगरी नाश्रवका पोण ॥ किया विघन मेटनने द्रव्य मंगलीक ॥ सरब प्रोविनेश्रपत ॥ तिम सूरयाभकीयो लोकीक ॥ कू॰ ३३ ॥ भगवंत ने वांदता हित लिता ॥ पेचा परलोएे नार निस्साएे ॥ तो लोकोतर बात प्रलोकनी मोख ॥ यो जाणो क्रमांथ की मुकायरे ॥ कु॰ ३४ ॥ सुषदेवने कह्यो। थावरचो पुत्र ॥ सोमल ने कह्यो महावीरो। थारे विरामण समोदिया सासत्र मे कह्यो के ॥ कुल श्रामांस मां भेद छटोरो ॥ कु॰ ३५ ॥ विरामण रा मत महावीर न मान्यो ॥ पिंण त्यारे मत री साख दिखाई ॥ ज्युंथाने प्राक्षण् री पीण साष बताई ॥ भव जीव समाभावंण ताई ॥ कु॰ ३६ ॥ बोले मुषसुं कहे प्राक्षण मह्य माना ॥ तो ईतरो बोलन मानो कीण लेखे ॥ श्रभींतर श्राख होयारी फुठी ॥ श्राप भोखें सामो नई देखरे ॥ कु॰ ३७ ॥ बले मुख सूं कहे जिण आगन्या माना पीण। आगन्या री नही ठीक। अग्या रो नाम लेइ झुठ बोले। श्रो प्रतष पाषंडी क रे ॥ कु॰ ३८ ॥ सुरयाभने वांदणरी अग्या पिण।' नाटकरी अग्या नही दीध। मंन मांही नाटक ने नही अंण मोदो ॥ राय प्रसेणी प्रसीधरे। कु॰ ३९। व्रधमान जिण आगन्या नाटक केरी। अग्या न दाधी तहतीक ॥ तो प्रत्मा आगे अग्या किमदेसी। श्रे पीण आंधेने नही ठीक रे। कु॰ ४०। अग्या २ कर रह्या मुर्ख अग्या रा मुढ अजांण ॥ भोलाने भरम मे पाड विगोया। तेपीण ऊंवा कर रह्या तांण। कु॰ ४१ ॥ जिणं अग्या मांही धर्म कहो तो।

जिण अग्या बारे नही अंस ॥ समकित रामुल सुढ अजाण ॥ इण रह्या जीव निधंस रे ॥ कु० ४२ ॥ कहीरने कीतरो कहुं ॥ अग्या दया ऐक जांण ॥ पिण अग्या री नीरखो करे न्याय बादी ॥ तोपा मे पद निरवाण रे ॥ कु० ४३ ॥ अग्या बारे धर्म कहे अनारज ॥ अग्या मांही पाप माने भ्रात ॥ द्रव्य लिंगी साधीं भेख मांही ॥ ते पीण हंस्या धर्मीरी पांतरें ॥ कु ४४ ॥ मुख सुं कहे म्हे दया धर्मी ॥ चाले हिंस्या धर्म री चाल ॥ जीव खुवायामे पुन्य परुपे ॥ तो मोह मिथ्यात में लालरे ॥ कु० ४५ ॥ इब्रत सेवयामे पुन्य परुपे ॥ पाप सेव्या कहे पुन्य ॥ त्याने हींस्या धरमी जाणो ॥ त्यांरी सरधा आचारज बुनरे ॥ कु० ४६ ॥ इम सांभल उतम नरनारी ॥ हींस्या धर्म नो संग नहीं कीजे ॥ दया धर्म जिण अग्या में चाले ॥ तिंण री सीको सीरपर धरलीजे ॥ कु० ॥ ४७ ॥ समत आठारे से नवे बरसे ॥ भाद्रवा सुद्र पांचम बुधवारी ॥ हींस्या धर्म उलखा वन काजे ॥ जोड़ कीधी बालोतरे सहर मंझारी ॥ कु० ४८ ॥

ईति संपूर्ण ।

॥ अथ सुवाहु स्वामी री स्तवन लिख्यते ॥

माहा बेदेह खेत्र मंझे सूवाहु सुख कारी जी । प्रभु तिर्थंकर चोथा सही । बांदु बारं वारोजा ॥ प्रभु बिनतडी अवधार ज्यो ॥ ऐ० १ ॥ लाख तियासी पुरवो । आप रह्या घर बासोजी । प्र० उतम चरित्र आदर्यो । छोड्या लिल बिलासो जी । प्र० २ ॥ चतुर कर्म दल चुरने । पाम्या ग्यान पंडुरो जी । प्र० सूर नर अपछर सूरपती ॥ आया आप हजुरी जी । प्र० ३ ॥ मीठो

दुस्मत सारसी । वाणी भली प्रकासी जी । प्र० सूण २ ने हरख्या घणा ॥ काटगइ करमा री फांसी जी । प्र० ४ ॥ वैरागे मन वालने । साधु हुवा घर त्यागीजी ॥ प्र० अन्ते वांसी आपरा । सूरत सुगत सुं लागीजी ॥ प्र० ५ । काया धनुष थारी पांचसे । लषण ऐक हजारी जी । प्र० अष्ट द्रधक दीपे घणा । सूरतर जिम सुख कारीजी । प्र० ६ । बारे गुणा कर दीपता । अतीसय भल चोतीसो जी । प्र० पैतीस वाणी परबडी । जीत्या राग ने रीसोजी । प्र० ७ । दरसण दीठां आपरो । कट जावे करमां रा जालो जी । प्र० मोख नगरना सासता । पामे सूष रसालोजी । प्र० ८ । सेवा करुं नित आपरी । नित देखुं दीदीरो जी । प्र० अरस परस वाता करे । धन२ ते नर नारी जी ॥ प्र० ९ । मन उमाहो मांहरो । तुम चरण नित भेटुंजी । प्र० प्रस्न पुछुं प्रेम सूं मन रा सांसा मेटुं जी । प्र० १० । सगत नही आवण तणी किम फरसुं तुम पायो जी । प्र० इण भव आय सकुं नहीं । म्हारे सबल घणो अन्तरायो जी । प्र० ११ । ऐसा ग्यानी को नही हिवडा भरत मंभारी जी । प्र० आगमरी छे आसता । ओ मोटो आधारीजी । प्र० १२ । भरत खेतर में हु बसुं । पुफ बीजे में आपीजी । प्र० मन वचन काया करी । जपुं तुमोरी जापो जी । प्र० १३ । ध्यान निरंतर आपरो । कलावंत जीम तारी जी । प्र० तमोली री पान ज्युं संभालु बाकं बोरीजी । प्र० १४ । संवत १८५४ । फतेपुर मन मोडी जी ॥ प्र० रीखचन्द्र भाणजी विनवे । वांदु वे कर जोडी जी । प्र० १५ ।

इति संपूर्ण ।

॥ अथ मली नाथजी रो तवन लिष्यते ॥

(मुखडा क्या जोवे दरपन मे ऐदेसी)

निसदीन भाव धरीने भजये। मली जणेसर संनमै। नील वरण सोहे अती नीको। सुभ लषण है तंन मै। जीवडा मली जपो जे संनमैं। जीव० १। पांचुमीर हणी ने पाम्या। केवल दिन्हा दीनमैं। सुरनर आगल देसना दीनी॥ इन्द्र गरजे ज्युं घनमे। जी० २। रिध देषी ग्रभो मत माई। छोड चलोगा छिन मैं। महल मालिया यांही रहैगा। वासा होगा बनमै। जी० ३। रंक माणस हिरदे मै हरष्यो। संपत लही सुपन सैं॥ जग सुष प्रतष सुपना जेसे संक नही तील इनसै। जी० ४। दुरगत मांही सह्या दुष जीवडे। राच्यो सात कुविसन मै। षट प्रगट बाता दरसाइ। जैसे सुख दरपन मै। जी० ५ धरम रतन हीरदेमै धारो। मत राचो सुष धन मै। सुषे २ पामो ज्युं अवचल सीवगत थोडा दीन मैं। जी० ६। बाणी सुण वेराग लीये भव। छोड़ दीया घर छीन मै। बलिहारी तिण साधन केरी चेल्या भर जोवन मै। जी० ७। करम सूभट सुं कजीयो मांडो॥ सुरवीर ज्युं रण सैं। मंन मोहा दीक मार लीया मुनी॥ सुरत लगी मोखन मै। जी० ८॥ नीर तणी पर निरमल सामी॥ समता भाव संनमै॥ नीसप्रेही निरग्रंथ निरागी॥ र हीमा तीन भवनसै॥ जी० ९॥ रिष सारी चालीस हजारी॥ नीस दीन भाव भजन मैं॥ सहँस पचावन अजीया साची। राची नही माजन सै। जी० १०। एक लष चोरासी सावक लील भई जिन गुण मैं। तलष पैंसठ सहस सावका॥ भगत भली तनंमन सै। जी० ११। अजर अमर बाधा नइ तिलभर। सुहता मोष सुषन मै छुटगया भवं प्रपञ्च सेती। नइ आवे फेर दुषन

मे ॥ जी० १२ ॥ कोयल अंब सुरगी राचत । रसकी ध्यांन रेसनमें ॥ कजलो बंनको धयावत कुंजर तीम साहीवजी तन मे॥ जी० १३ ॥ हसा चाहत मांन सरोवर ॥ गोप्या धयान किसनमें ॥ राग नीवासी रागी राचत॥ तीम साहवजीं तन मे ॥ जी० १५ ॥ संवत अठारें त्रेपन वरसे ॥ सूद स्रावण वारसदीन से । रीषचन्द्रभाण भणे पडीयारे ॥ हरष धरी तनमनमे ॥ जी० १६ ॥ इति

अथ श्रीमंदर स्वांमीजी रोस्तवन लिख्यते ।

(राग खटमलरी)

श्रीमंदर स्वांमी ॥ तुम दरसण से हुं कामी हो । जिणजी दरसण री बलहारी । बीनो कारी मन मोडी । नित बांदु बेकर जोडी हो ॥ जि० १ ॥ माहा बीदेह मंभारी । पुंडरिकणी नगरी सारी हो ॥ जी० ॥ श्रीयंस नृप सुखकारी ॥ सतकी नांमें तसूनारी हो ॥ जी० ॥ २ उतम कुल उदारी । तठ आप लीयो अवतारो हो ॥ जी० । सुपना लह्या दसच्यारी ॥ हीवडा हरख अपारीं हो० ॥ जो ॥ ३ ॥ सुभ मुहरत तुम जाया । जब सूरपती मोलीने आया हो ॥ जी० ॥ मोहछब भारी कीधो । तुम नाम श्रीमंदर दीधो हो ॥ जी ।४। दिन २ बोधे जिम बांनो ॥ लण ग्यांन सकल गुण खाणो हो जी० परण्या रुखमण नारी ॥ वहु लील करी संसारी हो० । जी०५। मोह माया सबत्यागी । घर छोड़ हुवा बेरागीं हो ॥ घातीया कर्म खपाया । जद केवल पदवी पाया हो । जी० ६ ॥ मिल आया सुर नर नारी । देसना दीधो हितकारी हो । जी० ॥ भीज गया भव् प्रांणी । चो संग थया गुण खाणी हो ॥ जी० ॥ ७ ॥ पांचमे तीस वखांणी । मीठी तुम ईम्रत बाणी हो ॥ जी० अतसय तीसमे चारी

आप उतकृष्टा उपगारी हो ॥ जी० ८ ॥ गुण निध दीन दयाला ॥ कीया तीन भुवन उजवाला हो ॥ जी ॥ सुर तरु ध्येन समांनी ॥ तुम समझ्या मोख सुथांनो हो ॥ जी० ९ ॥ सुंदर देही सोहे । सुर मान व री मन मोहे हो ॥ जी०॥ लुललुल पायलागी । कर जोड खड्या रहे आगी हो ॥ जी० ॥ १० ॥ मन उमाहो मांहरे ॥ जाणे रहुं पास तुमारे हो ॥ जी० ॥ वाणी सुण नित नेमो ॥ प्रश्न पुछूं धर प्रेमोहो । जी० ११ ॥ अंतराय क्रम मुझ भारी ॥ लीयो भरथ मंझे अवतारी हो० ॥ जो० ॥ पिण हुं बचनां री रागी ॥ खोटी सरधा सब त्यागी जी० ॥ १२ ॥ भुल गया लेई भेखो ॥ कर रह्या फिन बोसेखो हो ॥ जी० ॥ पिण हुंसगला सूं न्यारो ॥ तुम मारग लागि प्यारो हो । जी० २३ ॥ मोरमन जिम मेहा । नरनारी ईधक सनेहा हो ॥ जी० ॥ चकोर चाहे जिम चंदा । चकवा मन जेम दिणंदा हो ॥ जी० १४ । केतकी भमरज ध्यांवे ॥ कजली बन कुंजर चावे हो । जी० ॥ बालक जिम मन माता ॥ हंससमान सरोवर राता हो ॥ जी० १५ ॥ पपीयो चावे पांणी ॥ खुदीया तुर अन पीर्छांणी हों ॥ जी० ॥ गागर चित पणीहारी । बंस उपर नट बीचारीं हो ॥ जी० १६ ॥ दुर्यां पथ रीख ध्यांनां । काजी मनें जेम कुरांना हो ॥ जीं० ॥ ईमधरूं धयान तुमारा ॥ अन्यदेव तंज्यामे सारा हो । जी० १७ ॥ पुरब लाख तीयांसी ॥ जिम आप रह्या घर वासी हो ॥ जी० ॥ लाख पुरव री दीच्छा ॥ तुम देवो रुडी सीच्छा हो ॥ जी० १८ ॥ त्यारा घण नर नारी मिल्या सीवगत मंझारी हो ॥ जी० ॥ च्यार कर्म करी अंत ॥ लहस्यो सीव सुख अंनता हो ॥ जी० १९ ॥ क्रोड कवी गुंण गावे ॥ पिण पार कदे नहीं पावे हो ॥ जी० ॥ बुध माफक तवन जोडीं ॥ स्तवन कीयो धरकोडी हो ॥ जी० ॥ २० ॥ आपण पर उपगार ॥ फतेपुर सहर मंझारहो ॥ जी० ॥ रिष चंदर भाण गुण गायां ॥ भले भवीयण मन भाया हां ॥ २१ ॥ ईति संपुर्णम्